UGC - CARE LISTED

ISSN: 0974 - 8946

अनुसन्धान-प्रकाशन-विभागीया त्रैमासिकी शोध-पत्रिका

शोध-प्रभा

(A Refereed & Peer-Reviewed Quarterly Research Journal)

44 वर्षे चतुर्थोऽङ्कः (अक्टूबरमासाङ्कः) 2019

प्रधानसम्पादकः
प्रो.रमेशकुमारपाण्डेयः
कुलपतिः

सम्पादकः
प्रो.शिवशङ्करमिश्रः

सहसम्पादकः
डॉ.ज्ञानधरपाठकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्
(राष्ट्रियमूल्याङ्कन-प्रत्यायनपरिषदा 'ए' श्रेण्या प्रत्यायितः, मानितविश्वविद्यालयः)
नवदेहली-16

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

हिन्दी विभाग

10.	वैदिक एवं बौद्धकालीन स्त्रीशिक्षा की प्रासंगिकता	**प्रो. रमेश प्रसाद पाठक**	53–65
11.	आख्यान : स्वरूप एवं महत्त्व	**प्रो. शिवशङ्कर मिश्र**	66–73
12.	कैय्यट एवं प्रभाकर का भाषादर्शन को अवदान	**डॉ. ए. सुधा**	74–82
13.	मृच्छकटिक में वर्णित समाज	**डॉ. मुकेश कुमार मिश्र**	83–105
14.	रामायण में वर्णीत दैव-खण्डन एवं पुरुषार्थ	**डॉ. राजमंगल यादव**	106–112
15.	प्रमाणों में अर्थापत्ति की अवधारणा	**डॉ. निशा रानी**	113–118
16.	पातञ्जलयोगदर्शन में वर्णित योगाङ्गों में कार्यकारणभाव विमर्श	**श्री विजय गुप्ता**	119–125
17.	कालिदास की कृतियों में जीवनकला	**डॉ. बी. जी. पटेल**	126–130

English Section

18.	Methodology of textual Criticism of Sanskrit Manuscripts: A study	**Dr. Sachchidanand Snehi**	131-138
19.	Aryabhata - Outlines of Life And Contributions	**Shri V. Ramesh Babu**	139-150

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

UGC - CARE Listed
जुलाई-सितम्बर, 2019

शोधप्रभा
वर्ष : 44, तृतीयोऽङ्कः

पातञ्जलयोगदर्शन में वर्णित योगाङ्गों में कार्यकारणभाव विमर्श

श्री विजय गुप्ता*

भारतीय ज्ञान परम्परा में जीव के स्वरूप के साथ-साथ उसके चरमलक्ष्य के विषय में अनेक प्रकार के चिन्तन हुए हैं। वैदिक वाङ्मय से अर्वाचीन वाङ्मय पर्यन्त जीव अनेक दृष्टियों से विश्लेषण का विषय रहा है। वेदों में यत्र-तत्र जीव के स्वरूप का वर्णन प्राप्त होने के बाद उपनिषदों में इसका विशेष रूप से वर्णन किया गया है। प्रायः प्रत्येक उपनिषदों में जीव तथा उसके चरमलक्ष्य का गूढ़ता से वर्णन किया गया है। उपनिषदों के बाद भारतीयदर्शनों का 'जीव, ब्रह्म एवं जीव का चरमलक्ष्य' मुख्य विषय ही बन गया। इसके अधिगम से पुरुष हर्षशोक का त्याग कर देता है। इसलिए दर्शन को अध्यात्मशास्त्र कहा गया है।[1] दर्शनों का मुख्य उद्देश्य जगत् का नित्यानित्यपरक विवेचन करते हुए जीव को इस भवबन्धन से मुक्त कराना है, जिसके लिए सभी दर्शन अपनी-अपनी चिन्तनप्रक्रिया से अन्यान्य मार्गों को साधन के रूप में उपस्थित करते हैं। प्रत्येक दर्शन द्वारा निर्देशित मार्ग कारण है और जीव का चरमलक्ष्य ही कार्य है।

योगदर्शन में जिस समाधिलाभ को प्राप्त करने के लिए अनेक साधनों का वर्णन किया गया वह कार्य है तथा समाधिलाभ के जिन उपायों का विशदतया वर्णन किया गया है- अष्टाङ्गमार्ग, क्रियायोग, अभ्यास-वैराग्यादि ही कारण हैं। योगदर्शन में तीनों प्रकार के साधकों[2] के लिए समाधिलाभ के लिए अन्य-अन्य मार्गों का निर्देश किया गया है। अधम साधक के लिए अष्टाङ्गमार्ग- **'यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहार-धारणाध्यानसमाधयोऽष्टावङ्गानि'**[3] मध्यम साधक के लिए क्रियायोग- **'तपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि क्रियायोगः'**[4] तथा उत्तम साधक के लिए अभ्यासवैराग्य- **'अभ्यासवैराग्याभ्यां तन्निरोधः'**[5] साधन का निर्देश किया गया है। ये सभी साधन समाधिलाभ के प्रति कारण हैं। और इन साधनों के प्रति समाधिलाभ ही कार्य है। स्वरूप का भान हो जाना ही समाधि या कैवल्य है, जो अत्यन्त सूक्ष्म कार्य है। जिसका

---

*सहायकाचार्य, सर्वदर्शनविभाग, श्रीलालबहादुरशास्त्री रा.सं. विद्यापीठ, नवदेहली-16

1. 'अध्यात्मयोगाधिगमेन देवं मत्वा धीरो हर्षशोकौ जहाति'। -कठोपनिषद्, १.२.१२ ।
2. तत्र मन्दमध्यमोत्तमभेदेन त्रिविधा योगाधिकारिणो भवन्त्यारुरुक्षुयुञ्जानयोगारूढरूपाः'। -यो०सा०सं० पृ० ३७
3. योगसूत्र, २.२९
4. योगसूत्र, २.१
5. योगसूत्र, १.१२

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

ISSN : 2455-717X

व्युत्पत्ति
VYUTPATTI

(A peer reviewed Half yearly Research Journal of Humanities & Social Science)

सम्पादक
प्रो. शिवशङ्कर मिश्र

सह सम्पादक
डॉ. रामनारायण द्विवेदी

Year : 2019 Month : Dec. Vol. 02

Published by : **Matrisadanam**, M.I.G - 2, A.D.A Colony, Nani, Prayagraj (U.P.)

अनुक्रम.....

क्र. सं.	विषय	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	आख्यानेषु पर्यावरणचिन्तनम्	प्रो. शिवशङ्करमिश्रः	01
2.	प्राकृतवाङ्मये आकाशद्रव्यस्य अवधारणा	डॉ० आनंद-कुमार-जैनः	05
3.	संस्कृतवाङ्मये वर्णितस्यायुर्वेदशास्त्रस्योपयोगिता	विजय गुप्ता	11
4.	संस्कृतसाहित्ये शैक्षिकतत्त्वचिन्तनम्	डॉ. जीवनकुमारभट्टराई	18
5.	पाणिनिव्याकरणे प्रक्रियामूलकश्चमत्कारः	राजू शर्मा	25
6.	शब्दतत्त्वनिर्वचनम्	जगत् ज्योति पात्रः	29
7.	विशिष्टाद्वैतप्रवर्तकः रामानुजाचार्यः	परमिन्दर कौर	37
8.	चार्वाक दर्शन में स्वीकृत मतों का....	कुमार त्रिवेदी	41
9.	भारतीय दर्शन में अन्तःकरण विमर्श	निराली	50
10.	यजुर्वेद में योग का स्वरूप	बलराम आर्य	56
11.	अथर्ववेद एवं आयुर्वेद सम्मत सर्पविष.....	खुशबू कुमारी	67
12.	श्रीमद्भगवद्गीता का सन्देश : निष्काम कर्मयोग	योगेश कुमार मिश्र	76
13.	आयुर्वेद की आचार्य परम्परा.....	सतीश कुमार	83

ISSN : 2455-717X

व्युत्पत्ति

वर्ष : ४, अंक : दिसम्बर २०१९, Vol. 02

संस्कृतवाङ्मये वर्णितस्यायुर्वेदशास्त्रस्योपयोगिता

विजय गुप्ता*

"धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्यं मूलमुत्तमम्"

आयुर्वेदः प्राचीनभारतीयानां वैद्यकशास्त्रं चिकित्साशास्त्रपद्धतिः वा वर्तते। आयुर्वेदः शरीरमनसात्मनां मध्ये साम्यतां स्थापयित्वा स्वास्थ्यस्य संवर्धनं करोति। आयुर्वेदे न केवलमुपचारस्य विधानं वर्तते अपितु तत्र अखिलापि जीवनपद्धतिः वर्ण्यते, येन जीवनं दीर्घायुः सुखकरश्च भवति। आयुर्वेदानुसारेण वात-पित्त-कफानां मूलतत्त्वानां सम्यक् वर्द्धनेन कोऽपि रोगः मनुष्यं न पीडयति। परन्तु यदा वात-पित्त-कफानां वैषम्येन मानवशरीरः रुग्णः भवति तदा रोगोपशमनाय एतेषां त्रयाणां साम्यता विधेयेत्युच्यते आयुर्वेदे। सहैव आयुर्वेदे रोगाणां प्रतिरोधकक्षमतावर्द्धने बलं दीयते, येन मानवशरीरं कोऽपि रोगं न प्रभावयेत्।

"आयुषो वेदः आयुर्वेदः" निरुक्तिरेषा आयुर्वेदशब्दस्य साकल्यार्थं सूचयति। हितमायुस्तथा अहितञ्चायुः एवं सुखं दुःखञ्च आयुः तन्मानं तस्य चायुषः हितं किं किं चाहितमिति दर्शयित्वा हितं कथं संपादनीयं रक्षयितव्यं वा एवमेवाहितनिवारणमपि कथं भवितुमर्हति इति यस्मिन् शास्त्रे निर्दिष्टं तदेव शास्त्रमायुर्वेदशब्देन व्यवह्रियते। यथा-

हिताहितं सुखं दुःखमायुस्तस्य हिताहितम्।
मानं च तस्य यत्रोक्तमायुर्वेदः स उच्यते॥[१]

आयुर्वेदशब्दः पुल्लिङ्गे **आयुस् विद् धातोः करणार्थे घञ् प्रत्यये** कृते निष्पद्यते। यस्यार्थः- **"आयुरनेन विन्दति वेत्ति वेत्यायुर्वेदः।"**[२] सुश्रुतसंहितायां तु आयुर्वेदस्य निरुक्तिः **"आयुरस्मिन् विद्यते, अनेन वाऽऽयुर्विन्दन्तीति"** एवं प्राप्यते। यस्य टीकायां डल्हणाचार्यः आह- **"आयुः शरीरेन्द्रियसत्त्वात्मसंयोगः, तदस्मिन्नायुर्वेदे विद्यते अस्तीत्यायुर्वेदः, अथवा आयुर्विद्यते ज्ञायते अनेनेत्यायुर्वेदः, आयुर्विद्यते विचार्यते अनेन वेत्यायुर्वेदः, आयुरनेन विन्दति प्राप्नोतीति वाऽऽयुर्वेदः।"**[३]

* **सहायकाचार्यः, सर्वदर्शनविभागः, श्रीला.ब.शा.रा.सं.विद्यापीठम्, नवदेहली-110016**

१. च०सू० १.४१

२. शब्दकल्पद्रुमः, प्रथमभागः, पृ० १८६

३. सु०सू० १.१५ डल्हणाचार्यनिबन्धसंग्रहाख्यव्याख्यायाम्

RNI-UTTHIN/2013/51284

ISSN-0975-8739

हिन्दी अर्द्धवार्षिक

जयराम संदेश
Jairam Sandesh

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत मूल्यांकित शोध पत्रिका

(पत्रिका क्रमाङ्क - 41041)

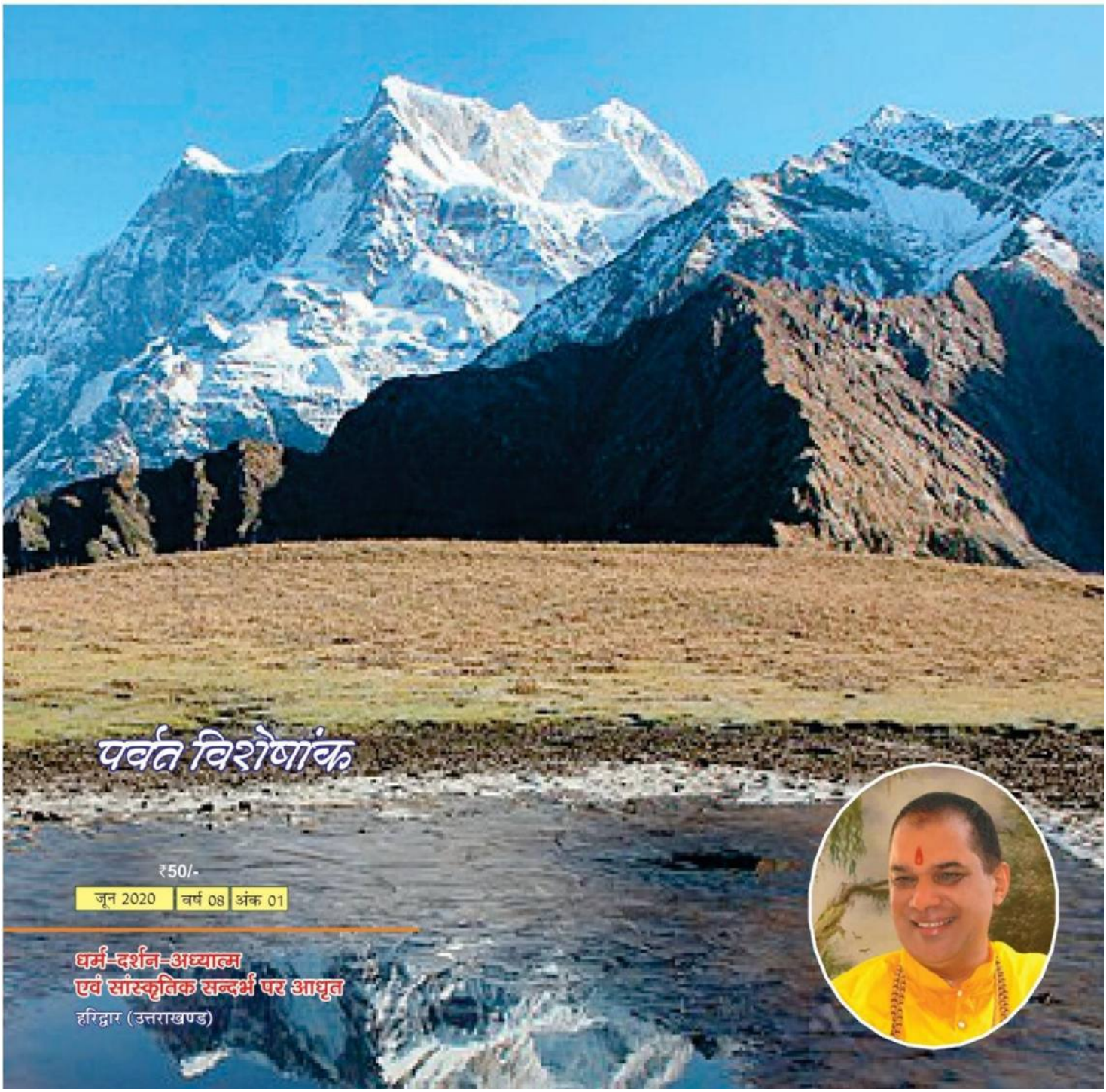

पर्वत विशेषांक

₹50/-

जून 2020 | वर्ष 08 | अंक 01

धर्म-दर्शन-अध्यात्म
एवं सांस्कृतिक सन्दर्भ पर आधृत

हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

RNI-UTTHIN/2013/51284

हिन्दी अर्द्धवार्षिक ISSN-0975-8739

जयराम संदेश
Jairam Sandesh

धर्म-दर्शन-अध्यात्म एवं सांस्कृतिक संदर्भ पर आधृत

जनवरी–जून
2020 ई.
विक्रम सम्वत् 2077

वर्ष : 08 अंक : 01

संरक्षक :
प. पू. ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी
परमाध्यक्ष : जयराम संस्थाएँ

**

परामर्शदातृ मण्डल
प्रो० वशिष्ठ त्रिपाठी (वाराणसी)
डॉ० रामभद्रदास श्रीवैष्णव (प्रयाग)
प्रो० रमेश कुमार पाण्डेय (दिल्ली)
प्रो० देवी प्रसाद त्रिपाठी (हरिद्वार)
डॉ० वाचस्पति मिश्र (लखनऊ)
प्रो० हरेराम त्रिपाठी (दिल्ली)
प्रो० रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर)

**

सम्पादक
डॉ. शिवशङ्कर मिश्र
मोबाइल नं. 9456328499
ई-मेल : shivshankarmishra74@gmail.com

**

शोधपत्र परीक्षक मण्डल
प्रो० जे.के. गोदियाल (पौड़ी)
डॉ० रामनारायण द्विवेदी (दिल्ली)
डॉ० दिनेश कुमार गर्ग (वाराणसी)
डॉ० रामविनय सिंह (देहरादून)
डॉ० रामरतन खण्डेलवाल (हरिद्वार)

**

प्रूफ संशोधक
मनमुदित नारायण शुक्ल

**

प्रकाशक :
श्री जयराम आश्रम
भीमगोड़ा, हरिद्वार – 249401 (उत्तराखण्ड)
फोन नं.: 01334-260251
ई-मेल : jairamsandesh@gmail.com

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी द्वारा
भार्गव प्रिंटर्स, निकट ललतारौ पुल, जनपद-हरिद्वार,
उत्तराखण्ड से मुद्रित एवं
श्रीजयराम आश्रम भीमगोड़ा, जनपद हरिद्वार से प्रकाशित
सम्पादक : डा. शिवशंकर मिश्र

अनुक्रम

आशीर्वचन
सम्पादकीय
जम्बूद्वीप (एशिया) की पौराणिक पर्वतीय...........प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र............1
प्रकृति ही पर्वत और पर्वत ही प्रकृति है.................जगद्गुरु स्वामी विदेह जी महाराज..5
हम और हमारे पर्वत.....................................डॉ० वद्रीप्रसाद पंचोली...............8
संस्कृत साहित्य में हिमालय वर्णन.....................डॉ० भवानीदत्त काण्डपाल..........10
दिव्यधाम चित्रकूट......................................प्रो० रामसलाही द्विवेदी...............12
ध्यान हेतु सर्वोत्तम स्थल हैं पर्वत........................प्रो० रामराज उपाध्याय..............16
पर्वत : कथ्य एवं तथ्य..... ....डॉ० सुनीता कुमारी..................18
वैदिक वाङ्मय में पर्वतों का वैशिष्ट्य.................डॉ० गोपाल प्रसाद शर्मा............22
'हिमालय' का प्राकृतिक एवं ....डॉ० बैकुण्ठ नाथ शुक्ल/डॉ० विक्रान्त उपाध्याय......27
गोवर्धन पर्वत परिक्रमा के मध्य.........................डॉ० अनिलानन्द.....................32
पर्वत..वैद्य पं० तनसुखराम शर्मा............39
महाकवि कलिदास की कृतियों में................प्रो० किशनाराम विश्नोई/दीपक.........43
मेघदूत के पर्वत–प्रसङ्ग.................................डॉ० रामविनय सिंह..................47
संस्कृत वाङ्मय में पर्वत वर्णन.........................डॉ० लज्जा पन्त (भट्ट)..............50
वनपर्व में पर्वत..डॉ० आशुतोष गुप्त..................53
प्रकृति पोषक पर्वत..........................डॉ० कृष्ण गोपाल दीक्षित 'दद्दा जी'..........58
कामदगिरि हैं पादसेवन भक्ति के अनुपम............प्रो० रामबहादुर शुक्ल...............61
कालिदास साहित्य में वर्णित.......................... डॉ० अरुणिमा.......................66
पौराणिक भूगोल में भारतीय पर्वत.....................प्रो० मिनति रथ......................68
वाल्मीकि का पर्वत प्रेम.................................डॉ० शालिमा तबस्सुम..............70
हिमालय का सामाजिक एवं सांस्कृतिक ....डॉ0 धनञ्जय शर्मा.................77
द्रोणगिरि पर्वत.. डॉ० मनोज कुमार जोशी............82
पर्वतीय संस्कृति उत्तराखण्ड ....श्रीमती गंगा गुप्ता/डॉ0 आशुतोष गुप्त.........84
जैनदर्शन में पर्वतीय सन्दर्भ : तत्त्वार्थसूत्र........... विजय गुप्ता.........................88
उत्तराखण्ड गढ़वाल की पर्वतीय श्रृंखलाएँ............डॉ० संजीव प्रसाद भट्ट 91
हिमाद्रि वैभव..डॉ० विजय लक्ष्मी....................96
धार्मिक दृष्टि से पर्वतों की महिमा..................... डॉ० तारादत्त अवस्थी 99
भारतीय संस्कृति एवं पर्वत............................निराली...............................101
पर्वतों के वैदिक सन्दर्भ : एक विवेचन.................पवन................................103
जयराम आश्रम द्वारा संचालित विविध सेवाप्रकल्प

पत्रिका ऑनलाईन उपलब्ध - jairamashram.org/publication jairamsandeshpatrika

❒ पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त चिन्तन से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं।
❒ पत्रिका के सम्बन्ध में किसी भी विवाद के निस्तारण का न्याय क्षेत्र केवल हरिद्वार होगा।
❒ पत्रिका के सम्पादक एवं परामर्श-परीक्षक मण्डल के समस्त सदस्य पूर्णतया अवैतनिक हैं।

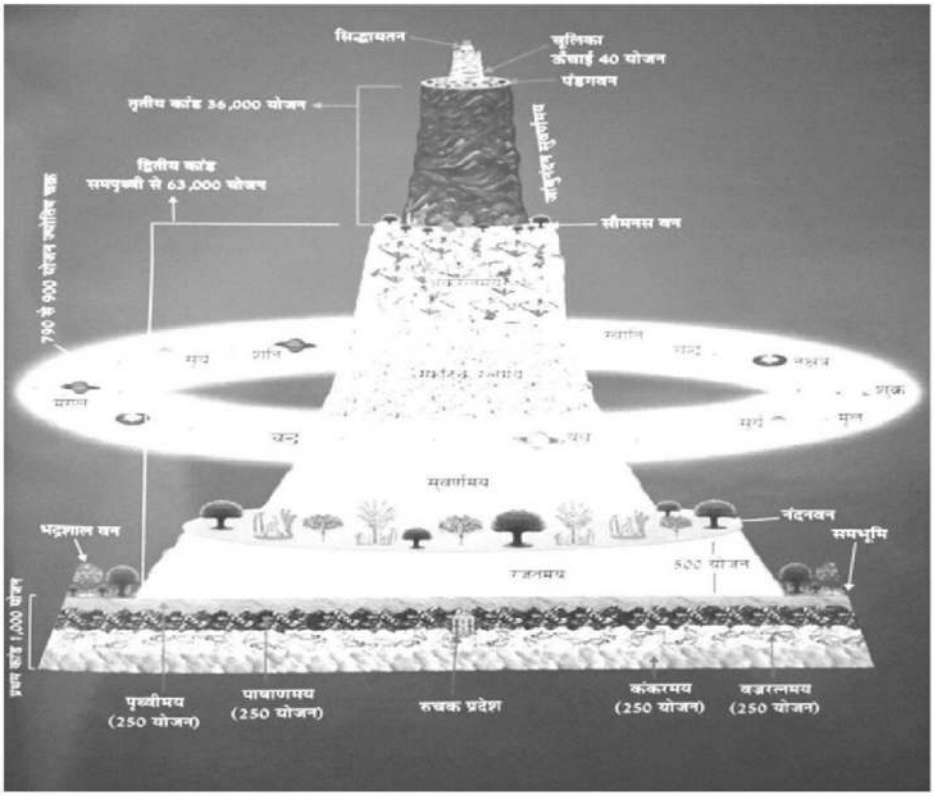

जैनदर्शन में पर्वतीय सन्दर्भ : तत्त्वार्थसूत्र के परिप्रेक्ष्य में

विजय गुप्ता
असिस्टेंट प्रोफेसर, सर्वदर्शन विभाग
श्री ला.ब.शा.रा.सं.वि.वि., नई दिल्ली

भारतवर्ष अपने ज्ञाननिधि के कारण सम्पूर्ण विश्व में सर्वैश्वर्य सम्पन्न राष्ट्र है। भारतीय ज्ञान परम्परा की मुख्य रूप से दो धाराएँ द्रष्टव्य हैं- ब्राह्मण एवं श्रमण। वेदोपनिषदाश्रित होने के कारण ब्राह्मण परम्परा का सहसा विश्व में विस्तार हुआ लेकिन श्रमण परम्परा को अपना स्थान बनाने में काफी समय लगा एवं विभिन्न समस्याओं का सामना भी करना पड़ा। किन्तु श्रमण परम्परा के सर्वथैव व्यावहारिक एवं मौलिक होने से सम्पूर्ण विश्व में स्वागत किया गया। इसका अनुमान लगाया जा सकता है कि वर्तमान में भी श्रमण परम्परा का अनुगमन करने वाले अनुयायियों की संख्या निरन्तर बढ रही है। श्रमण परम्परा में निर्ग्रन्थ के नाम से प्रसिद्ध जैनदर्शन शीर्षस्थ स्थान को प्राप्त है। जहाँ भगवान् महावीर मुक्ति का मूलमन्त्र बताते हैं कि-'सज्झाए वा निउत्तेण सव्वदुक्खविमोक्खणे' अर्थात् स्वाध्याय ही समस्त दुःखों से मुक्त करने वाला है। जैनदर्शन के आदर्श एवं सूत्ररूप में निबद्ध ग्रन्थ तत्त्वार्थसूत्र का सम्पूर्ण निर्ग्रन्थ सम्प्रदाय अध्ययन करता है। तत्त्वार्थसूत्र के लेखक उमास्वाति हैं। इस

RNI-UTTHIN/2013/51284

ISSN-0975-8739

हिन्दी अर्द्धवार्षिक

जयराम संदेश
Jairam Sandesh

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत मूल्यांकित शोध पत्रिका

(पत्रिका क्रमाङ्क - 41041)

उद्धव चरित्रांक

₹50/-

दिसम्बर 2019 | वर्ष 07 | अंक 02

धर्म-दर्शन-अध्यात्म
एवं सांस्कृतिक सन्दर्भ पर आधृत

हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

RNI-UTTHIN/2013/51284

हिन्दी अर्द्धवार्षिक ISSN-2575-8739

जयराम संदेश
Jairam Sandesh

धर्म–दर्शन–अध्यात्म एवं सांस्कृतिक संदर्भ पर आधृत

जुलाई–दिसम्बर
2019 ई.
विक्रम सम्वत् 2076

वर्ष : 07 अंक : 02

संरक्षक :
प. पू. ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी
परमाध्यक्ष : जयराम संस्थाएँ

**

परामर्शदातृ मण्डल
प्रो० वशिष्ठ त्रिपाठी (वाराणसी)
डॉ० रामभद्रदास श्रीवैष्णव (प्रयाग)
प्रो० रमेश कुमार पाण्डेय (दिल्ली)
प्रो० देवी प्रसाद त्रिपाठी (हरिद्वार)
डॉ० वाचस्पति मिश्र (लखनऊ)
प्रो० हरेराम त्रिपाठी (दिल्ली)
प्रो० रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर)

**

सम्पादक
डॉ. शिवशङ्कर मिश्र
मोबाइल नं. 9456328499
ई-मेल : shivshankarmishra74@gmail.com

**

शोधपत्र परीक्षक मण्डल
प्रो० जे.के. गोदियाल (पौड़ी)
डॉ० रामनारायण द्विवेदी (दिल्ली)
डॉ० दिनेश कुमार गर्ग (वाराणसी)
डॉ० रामविनय सिंह (देहरादून)
डॉ० रामरतन खण्डेलवाल (हरिद्वार)

**

प्रूफ संशोधक
मनमुदित नारायण शुक्ल

**

प्रकाशक :
श्री जयराम आश्रम
भीमगोड़ा, हरिद्वार – 249401 (उत्तराखण्ड)
फोन नं.: 01334-260251
ई-मेल : jairamsandesh@gmail.com

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी द्वारा भार्गव प्रिंटर्स, निकट ललतारौ पुल, जनपद-हरिद्वार, उत्तराखण्ड से मुद्रित एवं श्रीजयराम आश्रम भीमगोड़ा, जनपद हरिद्वार से प्रकाशित
सम्पादक : डॉ. शिवशंकर मिश्र

अनुक्रम

आशीर्वचन

सम्पादकीय

परमपवित्र उद्धवचरित्र........ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी........1

नन्दनन्दन कृष्ण के नित्यसहचर–उद्धव........प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र........3

प्रभु श्रीकृष्ण के प्रिय सखा ज्ञान निपुण उद्धव जी.....जगद्गुरु स्वामी विदेह जी महाराज..7

भगवान् के अर्चाविग्रह उद्धव........प्रो० रामसलाही द्विवेदी........9

ज्ञान, भक्ति रसावतार श्रीउद्धवजी का चरित्र........डॉ० बैकुण्ठ नाथ शुक्ल........12

उद्धव शरणागति मीमांसा........डॉ० अनिलानन्द........16

भगवदुद्धव संवाद में वेदार्थोपबृंहण........डॉ० गोपाल प्रसाद शर्मा........19

परम भागवत श्री उद्धव जी........प्रो० रामराज उपाध्याय........22

उद्धवगीता–भगवद्गीता में भगवत्स्वरूप.....डॉ० देवानन्द शुक्ल/डॉ० प्रीति शुक्ला....24

परम भागवत उद्धव........वैद्य तनसुखराम शर्मा........27

श्रीमद्भागवत में उद्धवचरित्र........प्रो० मिनति रथ........31

श्रीकृष्ण सुहृदुद्धव........डॉ० दिनेश कुमार गर्ग........35

महात्मा सूरदास की काव्यचेतना में "उद्धव"........प्रो० शिवशङ्कर मिश्र........38

उद्धव चरित्र–एक सामान्य अध्ययन........डॉ० लज्जा पन्त (भट्ट)........41

श्रीकृष्ण के उद्धव........डॉ० सुनीता कुमारी........43

श्रीकृष्ण के सखा उद्धव........डॉ० बद्रीप्रसाद पंचोली........46

उद्धव की व्रजयात्रा........डॉ० विजय कुमार पाण्डेय........48

श्री उद्धवजी गोपांगनाओं के हितैषी........डॉ० रामकिशोर मिश्र........50

भक्तशिरोमणि उद्धव........डॉ० आशुतोष गुप्त........51

श्रीमद्भागवतोक्त उद्धवचरित्र........डॉ० अरुणिमा........56

उद्धव की दृष्टि में मैया यशोदा, गोपियाँ........डॉ० रीतेश कुमार पाण्डेय........60

ज्ञानी उद्धव और गोपियाँ........श्वेता........63

पौराणिक साहित्य में उद्धव........डॉ० द्वारिका प्रसाद नौटियाल........66

श्रीमद्भागवत में उद्धव–गोपी संवाद........योगेश कुमार मिश्र........68

योगीश्वर श्रीकृष्ण के परममित्र उद्धव........विजय गुप्ता........70

उद्धव जी का विभिन्न दृष्टियों से मूल्यांकन........डॉ० संजीव प्रसाद भट्ट........73

उद्धव शतक : एक अध्ययन........डॉ० धनंजय शर्मा........76

उद्धव एक महान साधक........डॉ० कृपाशंकर मिश्र/मुदित पाण्डेय........81

श्रीमद्भागवत पुराण में उद्धव जी........निराली........83

उद्धव........वन्दना तिवारी........86

जयराम आश्रम द्वारा संचालित विविध सेवाप्रकल्प

पत्रिका ऑनलाईन उपलब्ध - jairamashram.org/publication jairamsandeshpatrika

- पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त चिन्तन से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं।
- पत्रिका के सम्बन्ध में किसी भी विवाद के निस्तारण का न्याय क्षेत्र केवल हरिद्वार होगा।
- पत्रिका के सम्पादक एवं परामर्श-परीक्षक मण्डल के समस्त सदस्य पूर्णतया अवैतनिक हैं।

योगीश्वर श्रीकृष्ण के परममित्र उद्धव का दार्शनिक परिप्रेक्ष्य

विजय गुप्ता
असि. प्रोफे. सर्वदर्शनविभाग
श्री ला.ब.शा.रा.सं.विद्यापीठ,
नई दिल्ली-16

भारतीय ज्ञान परम्परा में उद्धव का नाम प्रायः योगीश्वर श्रीकृष्ण के साथ लिया जाता है। महाभारत के विशाल चरित्रों के मध्य में उद्धव का चरित्र वन में विशाल तरुओं के मध्य लघु तरु की तरह छिप जाता है। लेकिन जैसे तरु की सुन्दरता लोगों का ध्यान आकर्षित करती है वैसे ही उद्धव का मनमोहक चरित्र लोगों का ध्यान आकर्षित करता है। उद्धव श्रीकृष्ण के प्रिय सखा हैं। प्रियसखा होने के कारण ही गोकुल से मथुरा आने के बाद श्रीकृष्ण ने उद्धव के द्वारा गोपियों को सन्देश भेजा। उद्धव के विचार अद्वैत वेदान्त एवं सांख्ययोग दर्शन से सम्पुटित हैं। श्रीकृष्ण से वार्तालाप में प्रायः दर्शनपरक वार्तालाप देखने को मिलता है। उद्धव गीता श्रीकृष्ण एवं उद्धव के दर्शनपरक संवाद का जीवन्त उदाहरण है। गीता के अध्ययन से पुण्य की प्राप्ति होती है और विष्णु के पद को पाकर श्रद्धालु भयशोकादि से मुक्त हो जाता है-

गीता सुगीता कर्त्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।
या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिःसृता॥[1]

शतसाहस्री नाम से प्रसिद्ध महाभारत के षष्ठ पर्व (भीष्म पर्व) के 18 अध्यायों में कुरुक्षेत्र में श्रीकृष्ण एवं अर्जुन का संवाद श्रीमद्भगवद्गीता नाम से प्रसिद्ध है। 'सर्वशास्त्रमयी गीता'[2] उपनिषदों का प्राण है। गीता ज्ञान, कर्म एवं भक्ति की त्रिवेणी है। उपनिषदीय तत्त्वों का विवेचन करने के कारण ही 'गीतम्' शब्द से निष्पन्न गीता में स्त्रीत्व की विवक्षा आ जाती है। गीता में भगवान् की स्तुति की गयी है उनके गुणों का गान किया गया है- 'गीयते स्तुयते या सा गीता'[3]। इस प्रकार विभिन्न दार्शनिक तत्त्वों से संवलित उद्धव गीता के प्रथम श्लोक में सांख्य एवं योग दर्शन के सिद्धान्त का मूलसार द्रष्टव्य है। जिसका आशय है कि सत्त्व, रज एवं तमोगुण बुद्धि अर्थात् प्रकृति के गुण हैं आत्मा के नहीं। सत्त्वगुण पर विजय प्राप्ति के उपरान्त रज एवं तमोगुण को गुणशून्य कर सत्त्वगुण के वृत्तियों को भी शान्त कर देना चाहिए-

सत्त्वं रजस्तम इति गुणा बुद्धेर्न चात्मनः।
सत्त्वेनान्यतमौ हन्यात् सत्त्वं सत्त्वेन चैव हि॥1॥[4]

उद्धव के चरित्र के विभिन्न रंगों से संवलित हिन्दी के प्रसिद्ध कवि जगन्नाथ रत्नाकर का ब्रजभाषा में रचित उद्धव शतक अत्यन्त प्रसिद्ध है। इस ग्रन्थ में उद्धव एवं गोपियों के बीच हुए संवाद के मध्य अनेक दार्शनिक तत्त्वों की झलक देखने को मिलती है। उद्धव ने श्रीकृष्ण को 'सर्वंखल्विदं ब्रह्म'[5] 'एकोऽहं द्वितीयो नास्ति'[6] 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या'[7] इत्यादि दार्शनिक सिद्धान्तों का उपदेश दिया है। इसकी छवि उद्धव शतक के एक कवित्त में देखने को मिलता है-

पाँचौ तत्त्व माहिँ एक सत्त्व ही की सत्ता सत्य,
याही तत्त्वज्ञान कौ महत्त्व स्रुति गायौ है।
तुम तौ बिबेक रतनाकर कहौ क्यौं पुनि,
भेद पंचभौतिक के रूप मैं रचायौ है।
गोपिनि मैं आप मैं बियोग औ सँजोग हूँ मैं,
एकै भाव चाहिए सचोप ठहरायौ है।
आपु ही सौं आपुकौ मिलाप औ बिछोह कहा,
मोह यह मिथ्या सुख दुख सब ठायौ है॥[8]

e-mail:sanskritsahityasammelan@gmail.com ISSN 2395-3055 जनवरी, 2020 ₹ 25

संस्कृत की एक श्रेष्ठ पत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन 'रजि0' की मासिक पत्रिका

लोकसभा में सर्वसम्मति से विधेयक पारित केन्द्रीय 'संस्कृत विश्वविद्यालय'

एक ऐतिहासिक निर्णय

वर्ष : 6 अंक : 8 (68)

संस्कृत की एक श्रेष्ठ पत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः
Sanskrit Ratnakar

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन 'रजि०' की मासिक पत्रिका

स्वामित्व : अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)
अध्यक्ष : प्रो० रमेश कुमार पाण्डेय
अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन
प्रधान संपादक (पदेन) : रमाकान्त गोस्वामी
संपादक : प्रो० शिवशंकर मिश्र
व्यवस्थापक मण्डल : ओ.पी. सर्राफ, आर.एन. वत्स 'एडवोकेट'
ओ.पी. जिन्दल, एन.के. गोयल
ग्राफ़िक्स डिजाइनर : मनोज कुमार
संपादकीय कार्यालय : संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसिफ
अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67
संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक : रमाकान्त गोस्वामी
दूरभाष : 011-41552221 मो.-9818475418
E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए संस्कृत-रत्नाकरः जिम्मेदार नहीं है।

विषय सूची

03 लोकसभा में सर्वसम्मति से विधेयक पारित केन्द्रीय 'संस्कृत विश्वविद्यालय' एक ऐतिहासिक निर्णय

संस्कृतविद्वत्सम्मानसमारोहे पुरस्कृताः भविष्यन्ति देशस्य ख्यातिलब्धाः विद्वांसः 04

07 यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्
विजय गुप्ता

अकालपुरुष शब्दविचार 10
डॉ० दिनेशकुमारगर्गः

12 आचार्य मम्मट कृत काव्यभेद समीक्षा
डॉ० जीवन कुमार भट्टराई

सम्पादकीयम्

अचिरमेव नूनतखिष्टाब्दः आरभ्यते। समागतेऽस्मिन् नूतने वर्षे संस्कृतसेवार्थं संस्कृतस्य संरक्षणाय विकासाय च वयं संस्कृतसेवकाः संकल्पवद्धा भवेम। संस्कृतस्य विकासदृष्ट्या वर्तमानवर्षः अतीवोत्तमः आसीत्। वर्षेऽस्मिन् अखिलभारतीय-संस्कृतसाहित्यसम्मेलनेन संस्कृतसेवनपराः अनेके विशिष्ट-कार्यक्रमाः समायोजिताः। यथावसरं विदुषां विशिष्टं व्याख्यानं, संस्कृतसप्ताहस्यायोजनम्, अवसरविशेषे अन्येऽपि कार्यक्रमाः सञ्चालिताः। वर्तमानवर्षस्येका इयमप्युपलब्धिः यद् संस्कृतभारतीसंगठनेन नवदेहल्यां संस्कृतभारतीविश्वसम्मेलनं समायोजितं, यत्र पञ्चसहस्रशोऽप्यधिकाः प्रतिभागिनः देशेभ्यः विदेशेभ्यश्च समागत्य संस्कृतप्रचाराय प्रसाराय च परस्परं चर्चामकुर्वन्। अयं कार्यक्रमः संस्कृतसमुपासकानां कृते अत्यन्तं प्रेरणाप्रदः आसीत्। वर्षस्यावसाने दिसम्बरमासे भारतसर्वकारेणापि द्वादशदिनाङ्के संस्कृतस्योन्नयनाय श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रिय-संस्कृतविद्यापीठम्, नवदेहली, राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्, नवदेहली, तिरुपतिस्थराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम् एतेषां त्रयाणां मानितविश्व-विद्यालयानां केन्द्रीयविश्वविद्यालयरूपेण प्रतिष्ठापनार्थं लोकसभायां प्रस्तावः ध्वनिमतेन पारितः। प्रसङ्गोऽयं समेषां संस्कृतज्ञानां संस्कृतानुयायिनां संस्कृतसपर्यासमर्पितानां जनानां कृते अत्यन्तं मोदावहः। सर्वकारस्यायं निर्णयः वस्तुतः ऐतिहासिको विद्यते यतोहि सम्प्रति समस्तेऽपि विश्वे विभिन्नेषु विश्वविद्यालयेषु संस्कृतस्याध्ययनमध्यापनञ्च प्रचलति परञ्चास्माकं देशे यत्र संस्कृतस्य देवभाषारूपेण समादरः, ''संस्कृतं नाम दैवी वाक् अन्वाख्याता महर्षिभिः'' इत्यादि वचनं यत्र सुप्रसिद्धं तत्र एतावता एकोऽपि संस्कृतविश्वविद्यालयः केन्द्रसर्वकारेण केन्द्रीय-संस्कृतविश्वविद्यालयत्वेन न संस्थापितः अतः सर्वकारस्याय-मैतिहासिको निर्णयः समेषां कृते महते प्रमोदाय प्रकल्प्यते, सर्वेषु संस्कृतप्रियेषु अस्ति महान् प्रमोदः प्रवहति च सर्वत्र विद्वत्सु प्रमोदकरी प्रेमानन्दलहरी।

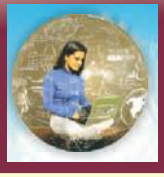

15 मनस् चिकित्सा विज्ञान में आयुर्वेद का योगदान
निराली

वर्तमान में गीता की प्रासंगिता 19

वार्ताः 22

(कवर सहित पृष्ठ संख्या 24)

यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्

वसुधैव कुटुम्बकम्

विजय गुप्ता
सहायकाचार्यः सर्वदर्शनविभागः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्,
(मानितविश्वविद्यालयः) नवदेहली

सह ना ववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषामहै।।[1]

सर्वे भवन्तु सुखिनः[2] इति ध्येयवाक्यसंवलिता भारतीयसंस्कृतिः न हि स्वदेशेऽपितु अन्येषु देशेष्वपि पूजनीयास्ति। वस्तुतः अस्माकं भारतीयसंस्कृतिः संस्कृतस्य आचारवाक्येन प्रेरितास्ति एतस्मात्कारणादेव विश्वस्य शीर्षमणिरस्ति। विश्वस्मिन् १९५ देशास्सन्ति, सर्वेषां स्वस्वसंस्कृतिः सभ्यता चास्ति किन्तु सर्वेषु देशेषु आदर्शराष्ट्ररूपेण भारतवर्ष एव प्रसिद्धः, एतस्य प्रमुखकारणं संस्कृतसंवलिता संस्कृतिरेवास्ति। नैकेभ्यः मनुष्येभ्यः परिवारः, नैकेभ्यः परिवारेभ्यः समाजः, नैकेभ्यः समाजेभ्यः राज्यम्, नैकेभ्यः राज्येभ्यश्च राष्ट्रस्य निर्माणो भवति। यदि परिवारस्य प्रथमः पुरुषः संस्कृतयुक्तः संस्कारयुक्तो वा भविष्यति तर्हि परिवारस्य सकारात्मको विकासः समृद्धिश्च भविष्यति।

संस्कृतेऽस्मिन् निखिलं ज्ञानविज्ञानं विद्यते। भारतवर्षे प्राचीनकालादेव अष्टदशानां विद्यानां समुल्लेखो दृश्यते तत्र चत्वारो वेदाः, वेदानां षडङ्गानि, चतुरोपवेदाः, पुराणं, धर्मशास्त्रं, मीमांसाशास्त्रं न्यायश्चेति अष्ट दशविद्याः विष्णुपुराणे वर्णितास्सन्ति। यत्र अष्ट दशविद्याः पूर्वकालादेव समाजस्य

UGC - CARE LISTED

ISSN: 0974-8946

अनुसन्धान-प्रकाशन-विभागीया त्रैमासिकी शोध-पत्रिका

शोध-प्रभा

(A Refereed & Peer-Reviewed Quarterly Research Journal)

45 वर्षे तृतीयोऽङ्कः (जुलाईमासाङ्कः) 2020

प्रधानसम्पादकः
प्रो.रमेशकुमारपाण्डेयः
कुलपतिः

सम्पादकः
प्रो.शिवशङ्करमिश्रः

सहसम्पादकः
डॉ.ज्ञानधरपाठकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
केन्द्रीयविश्वविद्यालयः
नवदेहली-16

हिन्दी विभाग

9.	विचारसागर निर्दिष्ट कनिष्ठ अधिकारी के लिए ब्रह्मपद प्राप्ति के साधन	– **श्री विजय गुप्ता**	**68–73**
10.	तिलधान्य का सांस्कृतिक अनुशीलन	– **डॉ. धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी**	**74–90**
11.	ऋग्वेदीय अग्नि का स्वरूप	– **डॉ. मंगला राम**	**91–96**
12.	वैदिक वाङ्मय में वर्णित कृषि शिक्षा	– **डॉ. शशिशेखर मिश्र**	**97–102**
13.	गृह्यसूत्रोक्त संस्कारों में मुहूर्त्त विवेचन	– **डॉ. देशराज शर्मा**	**103–116**
14.	राजस्थान का प्रतिहारकालीन बृहद् अभिलेख : एक साहित्यिक अध्ययन	– **डॉ. उमाशङ्कर एवं पिंकी कुमारी**	**117–124**

English Section

15.	Continuities of Socio- Religious Reforms for Women in the 19th and 20th centuries: with Special Reference to Family and Marriage.	– **Yuthika Mishra**	**125-140**
16.	Education And Pedagogy of Nation Building: A Study On Madan Mohan Malaviya's Contribution to Education And Its Global Application.	– **Dr. Ramesh Chandra Yadav**	**141-150**

UGC- CARE Listed
जुलाई-सितम्बर, 2020

शोधप्रभा
वर्ष : 45, तृतीयोऽङ्कः

विचारसागर निर्दिष्ट कनिष्ठ अधिकारी के लिए ब्रह्मपद प्राप्ति के साधन

श्री विजय गुप्ता*

'विचार सागर' स्वामी निश्चलदास की अप्रतिम रचना है यह शंकराचार्य के केवलाद्वैतवाद के सिद्धान्तों का प्रतिपादन करने वाला महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। यह रचना सामान्य लोकभाषा में निबद्ध है। इस भाषा में रचने का मुख्य कारण यह है कि इस ज्ञान का सामान्यजन भी अनुगमन कर सकें, समझ सकें। वैसे संस्कृत में तो अद्वैत वेदान्त के अनेक ग्रन्थ उपलब्ध हैं उनकी टीकाएं, प्रटीकाएं इत्यादि। लेकिन साधारण बुद्धि वाले लोग इस भाषा को न समझ पाने के कारण विषयोन्मुख नहीं होते हैं। स्वामी निश्चलदास जी ने यही सोचकर सामान्य लोकभाषा में इस ग्रन्थ का निर्माण करना उचित समझा। इस ग्रन्थ के मङ्गलाचरण में ही स्वामी जी ने अद्वैत वेदान्त का सार ग्रथित कर दिया है, ब्रह्म के तटस्थ एवं स्वरूप लक्षण का वर्णन करते हुए उन्हें बुद्धि से प्रकाशित न होने वाला बताया है-

जो सुख नित्य प्रकाश विभु, नाम रूप आधार।
मति न लखै जिहिं मति लखै, सो मैं शुद्ध अपार॥[1]

स्वामी जी ने प्रथम तरङ्ग में अनुबन्ध-चतुष्टय का सामान्य निरूपण किया है। द्वितीय तरङ्ग में इन्हीं अनुबन्धों का विशेषतया निरूपण है, तृतीय तरङ्ग में गुरु-शिष्य लक्षण एवं गुरु-भक्ति आदि का निरूपण किया गया है। चतुर्थ तरङ्ग में उत्तम अधिकारी के लिए किस प्रकार से मोक्षाभिमुख होना चाहिए? इसका वर्णन किया है। पञ्चम तरङ्ग में मध्यम अधिकारी के लिए एवं षष्ठ तरङ्ग में कनिष्ठ अधिकारी के लिए किस प्रकार से ब्रह्मपद की प्राप्ति की जा सकती है? इत्यादि विषयों का वर्णन दर्शनलभ्य है। स्वामी जी ने विषय का अनुगमन करने के आधार पर ही इन अधिकारियों का विभाजन किया है। स्वामी जी कहते हैं कि-

---

* सहायकाचार्य, सर्वदर्शनविभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली-११००१६

1. विचार सागर, प्रथम तरङ्ग, १

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com
ISSN 2395-3055
मार्च-अप्रैल, 2021 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

।। सर्वसिद्धिप्रदः कुम्भः ।।

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)
संस्कृत भवन, ए-10, कुतुब संस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली - 110067

वर्ष : 7 अंक : 10 (82)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

स्वामित्व	:	अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)
अध्यक्ष	:	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन
प्रधान सम्पादक (पदेन)	:	रमाकान्त गोस्वामी
सम्पादक	:	प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
शोधपत्रपरीक्षक मण्डल	:	प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली) प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर) प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली) प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी) प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)
व्यवस्थापक मण्डल	:	आर. एन. वत्स 'एडवोकेट'
ग्राफिक डिजाईनर	:	विश्वकर्मा शर्मा
संपादकीय कार्यालय	:	संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसिफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67
संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक	:	रमाकान्त गोस्वामी, महासचिव, अ.भा.स. सा.स.
दूरभाषा	:	011-41552221, मो.- 9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com

E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए संस्कृत रत्नाकरः जिम्मेदार नहीं है।

विषय सूची

03। शास्त्रीय कुम्भतत्त्वमीमांसा – प्रो. शिवशंकर मिश्र

12। कुम्भ कथा : तत्त्वज्ञान एवं माहात्म्य – प्रो. शिवशंकर मिश्र

15। भारतीय संस्कृति के धार्मिक महापर्व कुम्भ की आधुनिक सन्दर्भ में उपादेयता – विजय गुप्ता

सम्पादकीयम्

भारतीयसंस्कृतौ सनातनपरम्परायाञ्च कुम्भपर्वणो विद्यतेऽपरिमितं महत्त्वम्। इयमस्ति दृढ़ा भावना भारतीयानां यत् कुम्भपर्वप्रसङ्गे गंगायां निमज्जनेन, गोदावर्यामवगाहनेन, शिप्रायामाचमनेन च सिद्ध्यति परमकल्याणलाभः। सहस्रेभ्यः वर्षेभ्यः प्रागेव निरन्तरं जनाः श्रद्धया कुम्भतीर्थं समागत्य स्नान-दर्शन-पूजनादिना च आत्मानं धन्यमनुभवन्ति।

प्रतिद्वादशवर्षानन्तरं प्रयागे, हरिद्वारे, नासिके, उज्जयिन्याञ्च कुम्भयोगः समायाति। अवसरेऽस्मिन् देशस्य चतुर्भ्यः कोणेभ्यः देशाद्देशान्तरेभ्यश्च शैवाः, वैष्णवाः, सन्यासिनः वैरागिणः, उदासीनाः, निर्मलमतानुयायिनः, गरीबदाससम्प्रदायावलम्बिनः, योगिनः, विविध-सम्प्रदायसिद्धाः सन्तमहात्मानः, भक्ताः, तपस्विनश्च समवेताः भवन्ति। कुम्भस्य विद्यते एतद्प्रभावः यत् सुदूरपर्वतोपत्यकायां तपस्यारतः कश्चन तपस्वी, योगरतः कश्चन योगी, ज्ञानरतः कश्चिज्ज्ञानी, हिमालयस्य उत्तुंगशिखरे साधनारतः समाधिस्थः कश्चन साधकोऽपि कुम्भस्नानजन्यपुण्यार्जनाय सश्रद्धं सोल्लासं समागच्छन्ति।

एकादशवर्षोत्तरैकादशमासं यावत् विलुप्ताः, क्लेशेन दृश्यमानाः नागासन्यासिनोऽपि लक्षशोऽप्यधिकसंख्यायां कुतः सहसा प्रकटीभवन्ति इति महदाश्चर्यं प्रतिभाति।

कुम्भपर्वणो महत्त्वं न केवलं धार्मिकमेवापितु एतस्याध्यात्मिकं, सामाजिकं, सांस्कृतिकं, वौद्धिकम्, आर्थिकञ्च महत्त्वमपि विद्यते। प्रतिद्वादशे वर्षे विविधमतावलम्बिनोऽत्र समागत्य राष्ट्रस्य कथमुन्नतिः, प्रगतिश्च भवेत्, कथं समग्रे विश्वे शान्तिः, समरसता च भवेत्, कथं जनाः सुसंस्कृताः राष्ट्रभक्ताश्च भवेयुरित्येतत्सर्वं बारम्बारमालोडयन्ति मन्थनञ्च कुर्वन्ति चिन्तकाः। ततः समुद्भूतं सिद्धान्तनवनीतं राष्ट्रकल्याणाय, मानवचरित्रनिर्माणाय, जनेषु मूल्यसंस्थापनाय सर्वत्र प्रसारयन्ति प्रतिष्ठापयन्ति च।

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः,
शोधविभागाध्यक्षः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालय

18। भारतीय पर्व का प्रतीक कुम्भ : स्रोत एवं सन्दर्भ – निराली

20। योगस्याधुनिकलोकजीवने प्रभावः – डॉ. कृपा शंकर मिश्र

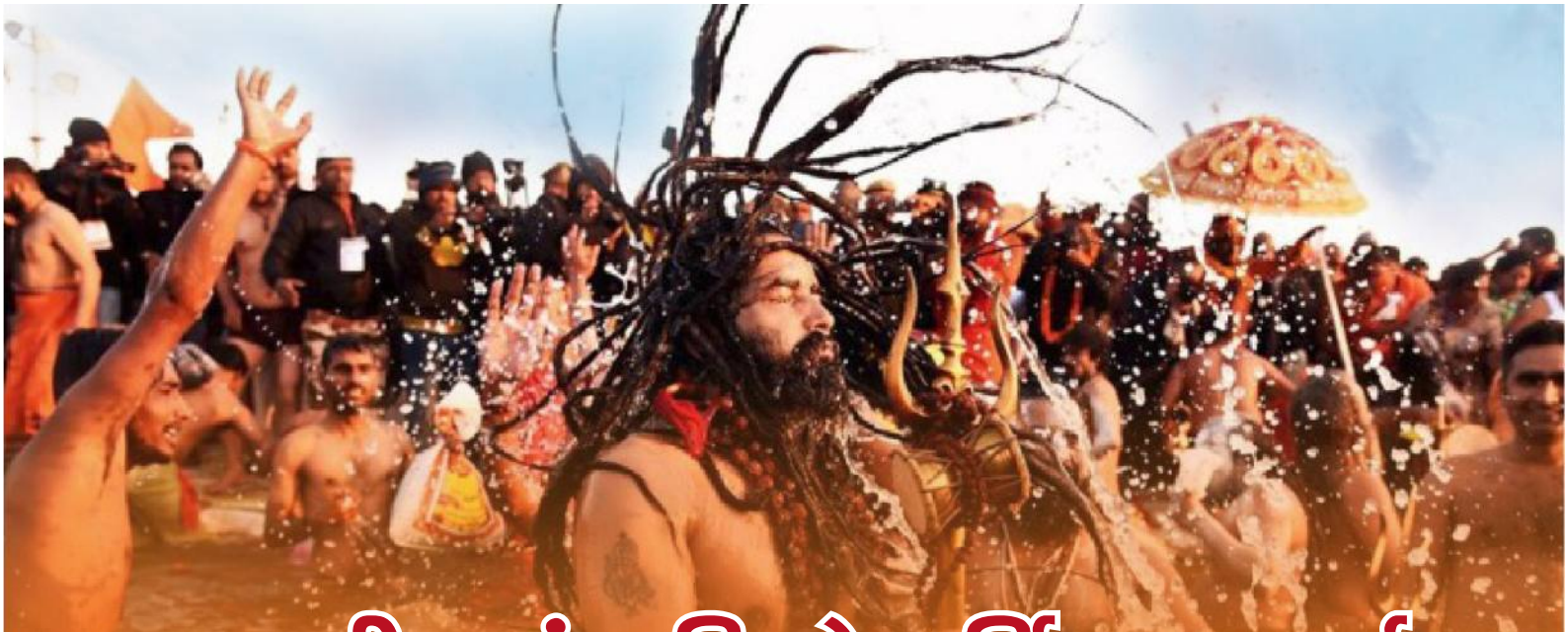

भारतीय संस्कृति के धार्मिक महापर्व कुम्भ की आधुनिक सन्दर्भ में उपादेयता

विजय गुप्ता
सहायकाचार्य, सर्वदर्शनविभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली-१६

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्थिताः॥
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः॥
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः॥[1]

भारत एक धर्म प्रधान देश है। यहाँ की संस्कृति पूर्णतः धार्मिक है। धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष इन चतुर्विध पुरुषार्थों में सर्वप्रथम धर्म ही है जो प्रत्येक मनुष्य को सद्वृत्ति की ओर प्रवृत्त करता है। धर्म ही एकमात्र मुक्ति का साधन है। वह मुक्ति जिसे प्राप्त करके मनुष्य परमानन्द सच्चिदानन्द को प्राप्त कर लेता है। वैशेषिक दर्शन में **'यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः'**[2] इस लक्षण के द्वारा धर्म के लौकिक एवं पारलौकिक दोनों प्रयोजनों को निरूपित किया गया है। धर्म केवल अभुदय अर्थात् सामाजिक, आधात्मिक, मानसिक, नैतिक उन्नति का हेतु नहीं है अपितु इससे स्वर्ग अथवा मोक्ष भी लभ्य है। प्रत्येक दर्शन धर्म को स्वीकार करता है तथा अपनी-अपनी उक्ति से इसके यथार्थ अथवा प्रासङ्गिकता का प्रतिपादन करता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार सतयुग में देव एवं दानवों के परस्पर द्वेष को समाप्त करने के लिए तथा समुद्र में समाहित अमृत तत्त्व को निकालने के सभा बिठायी गयी जिसमें समुद्र मन्थन करना निश्चय हुआ।[3] कलए समुद्र मन्थन में क्रमशः १४ रत्न[4] निकले जिसमें अन्तिम अमृत कलश के लिए देव-दानवों में युद्ध छिड़ गया, पुनः भगवान् विष्णु के आदेश पर पक्षीराज गरुड़ अमृत कलश लेकर उड़े, इसे प्राप्त करने के लिए दानव भी उनके पीछे दौड़े। गरुड़ के उड़ते समय उस अमृत कलश से चार स्थानों पर कुछ-कुछ बूँदें गिर गयीं।[5] अमृत अमरता को प्रदान करने वाला है पुनः उसमें पवित्रता भी असीम है अतः उन चार स्थानों को विश्व में सर्वपवित्र स्थान माना जाता है तथा इन चारों स्थानों पर १२ साल में एकबार कुम्भपर्व अवश्य मनाया जाता है-

कुम्भो द्वारहरेः पुनीतसरितातीरे च भव्यो महान्।
वर्षैर्द्वादशमञ्जुलैर्युगसमैस्सम्पाद्यमानो बुधैः॥

भारतीय संस्कृति के मूलस्रोत वेदों में भी कुम्भ शब्द का अनेकशः प्रयोग प्राप्त होता है जहाँ वह अनेक अर्थों में गृहीत है। "कुम्भ का शादिक अर्थ कलश होता है जिसका अमृत से सम्पन्न कलश भी अर्थ ग्रहण किया जा सकता है। कुम्भ शब्द **कुपि पूरवे** धातु से निष्पन्न है जिसका अर्थ है- **'कुम्भयति अमृतेन पूरयति सकलक्षुत्पिपासादिद्वन्द्वजातं निवर्यति इति कुम्भः'**। शास्त्रों में निबद्ध भी है कि- **'कुं पृथ्वीं भावयन्ति सङ्केतयन्ति भविष्यत्कल्याणादिकाय महत्याकाशे स्थिताः बृहस्पत्यादयो ग्रहाः संयुज्य हरिद्वारप्रयागादितत्तत्पुण्यस्थान-विशेषानुद्दिश्य यस्मिन् सः कुम्भः'**। पौराणिक कथाओं के अनुसार जिन चार स्थानों पर अमृत कलश से अमृत की बूँदें गिरी थीं वो हैं- प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन एवं नासिक। ये चारों स्थान भारत के मध्य भाग में स्थित हैं। इन स्थानों पर प्रत्येक १२ वर्ष में एकबार अर्थात् ३ वर्ष के अन्तराल में एक-एक स्थान पर क्रमशः कुम्भपर्व में का आयोजन होता है। इस कुम्भपर्व में केवल भारत के ही नहीं अपितु प्रायः सभी देशों के श्रद्धालु स्थान करने, सत्संगों में भाग लेने तथा अनेक धार्मिक कर्म करने के लिए आते हैं। यहाँ अनेक देश, अनेक संस्कृति, अनेक भाषा, अनेक रंग, अनेक धर्म, अनेक सम्प्रदाय, अनेक विचार, अनेक व्यवसाय के लोग आते हैं तथा परस्पर एक-दूसरे से मिलते हैं अध्यात्म की बाते करते हैं, धर्म की बाते करते हैं, पवित्र नदियों में स्नान करते हैं, पूजा-पाठ एवं दान करते हैं और अपने पापकर्मों से मुक्त हो जाते हैं-

UGC - CARE LISTED

ISSN: 0974 - 8946

अनुसन्धान-प्रकाशन-विभागीया त्रैमासिकी शोध-पत्रिका

शोध-प्रभा

(A Refereed & Peer-Reviewed Quarterly Research Journal)

46 वर्षे प्रथमोऽङ्कः (जनवरीमासाङ्कः) 2021

प्रधानसम्पादकः
प्रो.मुरलीमनोहरपाठकः
कुलपतिः

सम्पादकः
प्रो.शिवशङ्करमिश्रः

सहसम्पादकः
डॉ.ज्ञानधरपाठकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
केन्द्रीयविश्वविद्यालयः
नवदेहली-16

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

हिन्दी विभाग

8.	वैदिक स्वरभक्ति : प्रातिशाख्य	कु. ऋतिका	63–71
9.	गीताशाङ्करभाष्य एवं गूढार्थदीपिका में मोक्ष का स्वरूप	डॉ. मेघराज मीणा	72–81
10.	विचार सागर ग्रन्थ के आलोक में ''तत्त्वमसि'' महावाक्य की समीक्षा	बनास कुमारी मीणा	82–91
11.	आचार्य पद्मनाभमिश्र विरचित 'वर्धमानेन्दु' टीकाग्रन्थ का परिचयात्मक विश्लेषण	डॉ. वालखडे भूपेन्द्र अरुण	92–109
12.	जैन योग एवं बौद्ध में ध्यान-विमर्श	श्री विजय गुप्ता	110–117
13.	भारतीय मनोविज्ञान में बुद्धि की अवधारणा	डॉ. ज्ञानेन्द्र कुमार	118–126
14.	नालन्दा के शिलाखण्डों पर उत्कीर्ण अभिलेखों में प्रतिबिम्बित इतिहास एवं संस्कृति	डॉ देवेन्द्र नाथ ओझा	127–136

English Section

15.	Some Significant Cultural Aspects of the Society as Depicted in the Padmaprābhṛtaka Kautilya's Arthaśāstra	Mridusmita Bharadwaj Prof. Kameshwar Shukla	137–150

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

UGC- CARE Listed
जनवरी-मार्च, 2021

शोधप्रभा
वर्ष : 46, प्रथमोऽङ्कः

जैन योग एवं बौद्ध योग में ध्यान-विमर्श

श्री विजय गुप्ता*

ध्यानपूतें ज्ञानजले रागद्वेषमलापहे।
यःस्नातिमानसेतीर्थेसयातिपरमांगतिम्॥[1]

यदि मनुष्य का आचरण सम्यक् हो तो दर्शन भी सम्यक् होता है और दर्शन सम्यक् होने पर व्यक्ति के व्यक्तित्व में सकारात्मक विकास होता है। मनुष्य का विकास उसकी प्रवृत्ति पर निर्भर करता है, भारतीय दर्शन मनुष्य की सभी प्रवृत्तियों का अवलोकन करते हुए सही दिशा निर्देशित करता है। भारतीय दर्शन में अध्यात्म की दृष्टि से योग को शीर्ष स्थान प्राप्त है। भारतीय अध्यात्म परम्परा के मूल में योग सर्वत्र व्याप्त है। भारतीय ज्ञान परम्परा में साधना पद्धति को दो भागों में विभाजित किया गया है - ब्राह्मण और श्रमण। ब्राह्मण परम्परा में वेद, ईश्वरादि को विशेष महत्त्व दिया गया लेकिन श्रमण परम्परा में व्यक्ति के आचरण को विशेष महत्त्व दिया जाता है। श्रमण परम्परा में जैन एवं बौद्ध दो परम्पराएं प्रसिद्ध हैं। जैन परम्परा में साधना पद्धति को मोक्ष मार्ग भी कहते हैं और बौद्ध परम्परा में विशुद्धि मार्ग। पातञ्जल योग, जैन योग एवं बौद्ध योग इन तीनों साधना पद्धतियों के मूल में चित्त की विशुद्धि, कषाय पर विजय और आत्मा के विशुद्ध स्वरूप को प्राप्त करना निहित है। इन तीनों साधना पद्धतियों में ध्यान को विशेष स्थान प्राप्त है, ध्यान-साधना के अभाव में अध्यात्म की उपलब्धि असम्भव है क्योंकि पवित्र साधना से ही पवित्र ध्येय की प्राप्ति होती है, अतः ध्यान श्रेष्ठ है।

बाह्य वस्तुओं से परावृत्त होकर मन जब अन्तर्मुख हो जाता है और गूढ़ अन्तःसत्ता की खोज करने में लग जाता है तो इस स्थिति को ही ध्यान कहते हैं। पातञ्जलयोगसूत्र

---

* सहायकाचार्य, सर्वदर्शनविभाग, श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालय, नई दिल्ली-16

1. ध्यान और मनोबल, डॉ. इन्द्रचन्द्र शास्त्री, सार्वभौम साधना पीठ, दिल्ली, प्रथम अध्याय के आवरण पृष्ठ पर।

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

ISSN : 2455-717X

व्युत्पत्ति
VYUTPATTI

(A peer reviewed Half yearly Research Journal of Humanities & Social Science)

सम्पादक
प्रो. शिवशङ्कर मिश्र

सह सम्पादक
डॉ. रामनारायण द्विवेदी

Year : 2020 Vol. 01-02 Month : Jul & Dec.

Published by : **Matrisadanam**, M.I.G - 2, A.D.A Colony, Naini, Prayagraj (U.P.)

पत्रिका
व्युत्पत्ति (अर्द्धवार्षिक)
वर्ष : 05, अंक : 01-02 (संयुक्ताङ्क)

प्रकाशन- मातृसदनम्
एम.आई.जी. II, 129, ए.डी.ए.
कालोनी, नैनी, प्रयागराज (उ०प्र०)

प्रकाशन वर्ष
दिसम्बर 2020

सम्पादक
प्रो. शिवशङ्कर मिश्र

सह-सम्पादक
डॉ. रामनारायण द्विवेदी

सम्पादकीय कार्यालय-
मातृसदनम् एम.आई.जी. II,129, ए.डी.ए.कालोनी, नैनी, प्रयागराज (उ०प्र०)
मो.-9411171081
ईमेलः vyutpatti12@gmail.com
वेबसाइट : www.vyutpatti.in

* पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त चिन्तन से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं।
* पत्रिका के सम्बन्ध में किसी भी विवाद के निस्तारण का न्यायक्षेत्र केवल प्रयागराज होगा।
* पत्रिका के सम्पादक एवं परामर्शदातृ मण्डल के समस्त सदस्य पूर्णतया अवैतनिक हैं।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक
प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
सेमवाल प्रिंटिंग प्रेस, ऋषिकेश
(उत्तराखण्ड)

परामर्शदातृ-मण्डल
(Advisory Board)

- प्रो. वशिष्ठ त्रिपाठी (पूर्वन्यायविभागाध्यक्ष)
  सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
- डॉ. रामभद्रदास श्रीवैष्णव (पूर्वन्यायविभागाध्यक्ष)
  श्री स. अ. सं. महाविद्यालय, अरैल, प्रयागराज
- प्रो. रमेशकुमार पाण्डेय (कुलपति)
  श्री ला.ब.शा.रा.सं.विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- प्रो. गोपबन्धु मिश्र (कुलपति)
  गोपनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, गुजरात
- प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी (कुलपति)
  उत्तराखण्ड सस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखण्ड
- प्रो. सविता मोहन (पूर्वनिदेशक-उच्चशिक्षा)
  उत्तराखण्ड उच्च शिक्षा विभाग, उत्तराखण्ड
- श्रीहरिकिशन शर्मा (पत्रकार), इण्डियन एक्सप्रेस

शोधपत्र समीक्षा समिति
(Research Paper Review committee)

- प्रो. रमाकान्त पाण्डेय,
  केन्द्रीय सस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर
- प्रो. जे. के. गोदियाल,
  हे. न. ब. ग. विश्वविद्यालय, श्रीनगर
- प्रो. कमला चौहान,
  हे. न. ब. ग. विश्वविद्यालय, श्रीनगर
- प्रो. रामसलाही द्विवेदी,
  श्री ला.ब.शा.रा.सं.विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- डॉ. दिनेश कुमार गर्ग,
  सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
- प्रो. संगीता मिश्रा,
  राज. महाविद्यालय, चिन्यालीसौढ़, उत्तरकाशी, उ.प्र.
- डॉ. रामविनय सिंह,
  डी. ए. वी. पी. जी. कालेज, देहरादून, उत्तराखण्ड
- डॉ. रामरतन खण्डेलवाल,
  उत्तराखण्ड सस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखण्ड
- डॉ. अभिषेक त्रिपाठी,
  श्री ला.ब.शा.रा.सं.विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- डॉ. अरुणिमा,
  राज. स्ना. महाविद्यालय, कोटद्वार, उत्तराखण्ड

अनुक्रम.....

क्र. सं.	विषय	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	मिथिलायाः श्रौतयागपरम्परा	डॉ. सुन्दरनारायणझा	01
2.	आयुर्वेदग्रन्थेषु साङ्ख्यदृष्ट्या तत्त्वनिर्धारणम्	विजय गुप्ता	08
3.	कृषिकर्मणि वृक्षायुर्वेदस्य योगदानम्	श्रीखेमराजरेग्मी	14
4.	निर्दिश्यमानस्यादेशा भवन्तीति परिभाषार्थविमर्शः	रत्नेशकुमारत्रिवेदी	20
5.	विचारसागरदिशा मोक्षस्वरूपविमर्श	प्रो. शिवशङ्कर मिश्र	23
6.	माघकाव्य में निहित योगतत्त्व का विवेचन	डॉ. जीवनकुमार भट्टराई	29
7.	उपनिषदों में योग का स्वरूप	डॉ.रमेश कुमार	36
8.	धात्वर्थ विवेचन : वैयाकरणभूषणसार.....	कुसुम लता	42
9.	श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित समरसता विमर्श	योगेश कुमार मिश्र	51
10.	यजुर्वेद में पर्यावरण-संरक्षण : वैज्ञानिक एवं...	मानसी	56
11.	अभिनवगुप्त के स्तोत्रों में प्रतिपादित शिवतत्त्व	रमेश चन्द्र नैलवाल	66
12.	भारतीय जनमानस में स्त्री : एक विमर्श	निराली	73
13.	ऋग्वैदिक सरस्वती : वाक् तत्त्व के रूप में	पवन	78
14.	स्मृतियों में प्रतिपादित स्त्रीधन एवं उसकी....	स्मिता यादव	83

ISSN : 2455-717X

व्युत्पत्ति

वर्ष : 5, संयुक्ताङ्क (1-2) दिसम्बर 2020

आयुर्वेदग्रन्थेषु साङ्ख्यदृष्ट्या तत्त्वनिर्धारणम्

विजयगुप्ता*

भारतीयसंस्कृतौ साङ्ख्यदर्शनस्यात्युन्नतं स्थानमासीत्। देशस्योदात्तविचारवन्तो विद्वांसो दर्शनपद्धत्या विचारयन्ति स्म। महाभारते शान्तिपर्वणि भगवता व्यासेन कथितमस्ति यल्लोके यत् किञ्चिद् ज्ञानं दृश्यते तत्सर्व साङ्ख्यसम्बद्धमेवास्ति-

'ज्ञानं च लोके यदिहास्ति किञ्चित् साङ्ख्यागतं तच्च महामहात्मन्'[1]

वस्तुतः महाभारते दार्शनिकविचारस्य या पृष्ठभूमिरुपलभ्यते तत्र साङ्ख्यदर्शनस्य महत्त्वपूर्ण स्थानमस्ति। तत्र पञ्चशिखधर्मध्वज-जनकसंवादे, सुलभा-जनकसंवादे वसिष्ठकरालजनकसंवादे, याज्ञवल्क्यदेवरातिजदेकसंवादे च साङ्ख्यदर्शनस्य विचाराणां रुचिरया काव्यमयरोचकपद्धत्या उल्लेखः कृतोऽस्ति। साङ्ख्यदर्शनस्य प्रभावो गीतायाः प्रतिपादितदार्शनिकपृष्ठभूमौ पर्याप्तरूपेण वर्तते।

साङ्ख्यशब्दस्य व्युत्पत्तिः सङ्ख्याशब्देन निष्पद्यते। कपिलेन महर्षिणा प्रणीतं दर्शनं कापिलमित्युच्यते। एतदेव दर्शनमन्वर्थतया साङ्ख्यं संगीर्यते, सम्यक् ख्यानं सङ्ख्या सा अस्ति अस्मिन्निति साङ्ख्यम्। यद्वा सङ्ख्या पदार्थानां गणना तत्प्रधानं दर्शनं साङ्ख्यम्। भवति चात्र- व्यक्ताव्यक्तज्ञसंज्ञानां महदहङ्कारैकादशेन्द्रियपञ्चतन्मात्रपञ्चमहाभूतेति त्रयोविंशतेर्व्यक्तानाम् एकस्या अव्यक्तनाम्न्या प्रकृतेः एकस्य ज्ञस्य पुरुषस्य चेति पञ्चविंशतितत्त्वानां दर्शनान्तरापेक्षयाऽधिकानां प्राधान्येन गणना लप्स्यते।

साङ्ख्यदर्शनस्य सर्वेषु ग्रन्थेषु सङ्ख्यानां प्रचुरतया दर्शनं परिलक्ष्यते। तत्र एका प्रकृतिः तेषां त्रयोगुणाः[2] महदादिसप्तप्रकृतिविकृतयः एकादशेन्द्रियपञ्चमहाभूतषोडशविकृतयः[3]। पुनः बुद्धेः धर्माद्यष्टभावाः[4] एवं च तस्याः चत्वारिपरिणामाः-विपर्ययः अशक्तिः तुष्टिः सिद्धिश्च[5]।

---

* सहायकाचार्यः, सर्वदर्शनविभागः श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली-१६

1. महा० शा० ३०१.११९
2. सत्त्वं लघु प्रकाशकमिष्टमुपष्टम्भकं चलं च रजः। गुरु वरणकमेव तमः प्रदीपवच्चार्थतो वृत्तिः॥ सां० का० १३
3. मूलप्रकृतिरविकृतिर्महदाद्याः प्रकृतिविकृतयः सप्त। षोडशकस्तु विकारो न प्रकृतिर्न विकृतिः पुरुषः॥ सां० का०३
4. धर्माधर्मज्ञानाज्ञानवैराग्यावैराग्यैश्वर्यानैश्वर्याणि भावाः। सां०त०कौ० ४०
5. साङ्ख्यकारिकायाम् ४६

ISSN - 2229-6336

SUMANGALI

A Journal of Gender and heritage

Vol VII, No. 1 Joint Issue March 2020 & March 2021

Centre for Women's Studies
Shri Lal Bahadur Shastri National
Sanskrit University
(Cental University)
New Delhi

Sumangali
A Journal of Gender and Haritage

Patron
Prof. Ramesh Kumar Pandey
Vice Chancrllor. SLBSN Sanskrit University New Delhi

Editor
Prof. Rajani Joshi Chaudhary
Director(i/c)
Centre for Woman's Studies

Assistant Editor
Dr. Savita Rai

Technical Assistant
Ms. Taruna Awasthi

Editorial Borad
Members
Prof. Amita Sharma
Ex. Head, Department of sanskrit Literature, SLBSN Sanskrit University, New Delhi

Prof. Hare Ram Tripathi
Head, Department of Research & Publication, SLBSN Sanskrit University, New Delhi
Prof. Hema V. Raghwan
Ex. Dean, Student Welfare, Delhi University

Dr. Sangeeta Khanna
Department of Sarva Dharsan
SLBSN Sanskrit University, New Delhi

Dr. Santosh Shukla
Associate Professor, Centre for Sanskrit Studies
Jawahar Lal Nehru, New Delhi

Dr. Minakshi Mishra
Associate Professor, Department of Education
SLBSN Sanskrit University, New Delhi

CONTENTS

1.	श्रीगोदादेव्या स्तुततिरुप्पावैप्रबन्धस्थ-प्रथमपाशुरस्य वेदान्तपरत्वसमीक्षणम्	डॉ.सुदर्शनन् एस्	1
2.	वेदोक्तदिशा नारीशौर्यचिन्तनम्	खुशबू शुक्ला	7
3.	विशिष्टबालानां सुरक्षाप्रदाने प्राचीनभारतीयनारीणां योगदानम्	नन्दुलाल मण्डलः	14
4.	Theoretical Analysis of Gender Issues in Psycho Social Perspective	Prof. Rachna Verma Mohan	20
5.	Woman's Rights in *Yajnavalkyasmriti*	Bikram Keshari Mishra	28
6.	Portrayal of Indian Women in the Works of Kalidasa: A Feministic Approach	Dr. Subhasree Dash	35
7.	The Depiction of Women's Sexuality in the Ratnāvalī Nāṭikā of Harsa	Dr. Shaminaj Khan	44
8.	An Analysis of the Social Condition of Women as depicted in Ikshugandha	Mridusmita Bharadwaj	53
9.	Contribution of Women in the Culture of North East India	Nayandeep Sarma	60
10.	स्मृतियों में प्रतिपादित 'स्त्रीधन' एवं उसकी प्रासङ्गिकता	स्मिता यादव	68
11.	आधुनिक सन्दर्भ में महिला सशक्तिकरण के विभिन्न आयाम	विजय गुप्ता	75

आधुनिक सन्दर्भ में महिला सशक्तिकरण के विभिन्न आयाम

विजय गुप्ता, सहायक आचार्य,
सर्वदर्शनविभाग
श्रीलाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली-110016

कार्येषु मंत्री करणेषु दासी, भोज्येषु माता शयनेषु रम्भा।
धर्मानुकूला क्षमया धरित्री, भार्या च षड्गुणवती च दुर्लभा॥

भारतीय ज्ञान परम्परा में प्रारम्भ से ही नारी चिन्तन का विषय रही है। उसके स्वरूप, महत्त्व, कर्त्तव्यादि विषयों को केन्द्र में रखकर मनीषियों ने विभिन्न दृष्टियों से चिन्तन किया। स्त्री वैदिक काल से ही पूजनीय, सम्माननीय तथा श्रद्धा का विषय रही है। स्मृतिकाल में कुछ धर्मशास्त्रकारों तथा व्याख्याकारों ने स्त्रियों की महत्ता, कर्त्तव्यादि को गलत ढ़ंग से प्रस्तुत किया, जिसका समाज पर बुरा प्रभाव पड़ा। पुरुषतंत्र का मानसिक क्रियाकलाप धीरे-धीरे स्त्रियों के प्रति दूषित होने लगा, धीरे-धीरे स्त्रियाँ हीनभावना का शिकार होने लगीं, और समाज व्यवस्था में उसका अधिकार धीरे-धीरे संकुचित होने लगा। यहीं से महिला सशक्तिकरण का उन्मूलन हुआ।

सशक्तिकरण का आशय किसी व्यक्ति, समुदाय या समाज के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, शैक्षिक, लैंगिक या आध्यात्मिक शक्ति में सुधार से है। वस्तुतः स्त्री किसी भी दृष्टि से कमजोर नहीं है लेकिन उसकी शक्ति एवं क्षमता पर पुरुषतन्त्र द्वारा आदि काल से ही प्रश्न उठाया जाता रहा है। आधुनिक काल में स्त्री किसी भी क्षेत्र में पुरुष से पीछे नहीं है, शिक्षा, खेलकुद, विज्ञान, व्यापारादि की दिशा में बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रही है। अब तो भारत सरकार ने महिलाओं को भी सीमा सुरक्षा के लिए तैयार करना शुरु कर दिया है, कई स्थानों पर महिला सीमा सुरक्षा प्रशिक्षण के केन्द्र क्रियान्वित किये गये हैं। भारतीय समाज में महिला सशक्तिकरण का प्रभाव तथा उससे होने वाले सुधार का सम्पूर्णतया वर्णन कर पाना असम्भव नहीं लेकिन कठिन अवश्य है अतः संक्षिप्त वर्णन अधोलिखित है-

शिक्षा-ग्रहण में महिला सशक्तिकरण

भारतीय समाज में प्राचीन काल से ही स्त्री एवं पुरुष दोनों को समान अधिकार प्राप्त है।

RNI-UTTHIN/2013/51284

हिन्दी अर्द्धवार्षिक

ISSN-0975-8739

जयराम संदेश
Jairam Sandesh

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत विशेषज्ञ समिति द्वारा मूल्यांकित शोध-पत्रिका

A Peer Reviewed, Refereed Research Journal

योग हृदयोद्गार

₹50/-

दिसम्बर 2020 | वर्ष 08 | अंक 02

धर्म-दर्शन-अध्यात्म एवं सांस्कृतिक संदर्भ पर आधृत

हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

RNI-UTTHIN/2013/51284

हिन्दी अर्द्धवार्षिक ISSN-0975-8739

जयराम संदेश
Jairam Sandesh

धर्म–दर्शन–अध्यात्म एवं सांस्कृतिक संदर्भ पर आधृत
A Peer Reviewed, Refereed Research Journal

जुलाई–दिसम्बर
2020 ई.
विक्रम सम्वत् 2077

वर्ष : 08 अंक : 02

संरक्षक :
प. पू. ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी
परमाध्यक्ष : जयराम संस्थाएँ

**

परामर्शदातृ मण्डल
प्रो० वशिष्ठ त्रिपाठी (वाराणसी)
डॉ० रामभद्रदास श्रीवैष्णव (प्रयाग)
प्रो० रमेश कुमार पाण्डेय (दिल्ली)
प्रो० हरेराम त्रिपाठी (दिल्ली)
प्रो० रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर)

**

सम्पादक
डॉ. शिवशङ्कर मिश्र
मोबाइल नं. 9456328499
ई-मेल : shivshankarmishra74@gmail.com

**

शोधपत्र परीक्षक मण्डल
प्रो० जे.के. गोदियाल (पौड़ी)
प्रो० राम बहादुर शुक्ल (जम्मू)
डॉ० रामनारायण द्विवेदी (दिल्ली)
डॉ० दिनेश कुमार गर्ग (वाराणसी)
डॉ० रामविनय सिंह (देहरादून)
डॉ० रामरतन खण्डेलवाल (हरिद्वार)

**

प्रूफ संशोधक
मनमुदित नारायण शुक्ल

**

प्रकाशक :
श्री जयराम आश्रम
भीमगोड़ा, हरिद्वार – 249401 (उत्तराखण्ड)
मोबाइल नं. 01334-260251
ई-मेल : jairamsandesh@gmail.com

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी द्वारा
भार्गव प्रिंटर्स, निकट ललतारौ पुल, जनपद-हरिद्वार,
उत्तराखण्ड से मुद्रित एवं
श्रीजयराम आश्रम भीमगोड़ा, जनपद हरिद्वार से प्रकाशित
सम्पादक : डॉ. शिवशंकर मिश्र

अनुक्रम

आशीर्वचन
सम्पादकीय
वैदिक एवं आर्हत–परम्परा..................प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र..................01
योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः ....जगद्गुरु स्वामी विदेह जी महाराज.....04
वर्तमान में योग विज्ञान की प्रासङ्गिकता...प्रो० राम सुमेर यादव..........................06
भारतीय दार्शनिक परम्परा की समृद्धि.....डॉ० रज्जन कुमार 10
श्रीमद्भगवद्गीता में योग की..............डॉ० सुनीता कुमारी..........................14
योग की आध्यात्मिक एवं भौतिक..........डॉ० भवानीदत्त काण्डपाल 17
योग में ब्रह्मचिन्तन............................डॉ० कीर्तिवल्लभ शक्टा.....................20
योगशास्त्र के कलेवर में नैषधकार.........प्रो० रामबहादुर शुक्ल........................22
शास्त्र परम्परा में योगदर्शन................प्रो० कमला चौहान/नन्दिनी कोटियाल....27
योग...डॉ० कमलेश कुमार मिश्र 31
वेदों में योगविद्या...........................डॉ० लज्जा भट्ट 33
आत्माभ्युदय में योग एवं ज्योतिष..........प्रो० भारत भूषण मिश्र 35
परमार्थ–पथ–पाथेय–योग..................पं० तनसुखराम शर्मा 46
'योगानुशासन' ....डॉ० नीलम त्रिवेदी 49
यौगिक जीवनशैली में आहार एवं..........योगाचार्य अंकित भट्ट 51
महाभारत–शान्तिपर्व में ध्यानयोग.........डॉ० आशुतोष गुप्त/राजमोहन 57
योग परिचय : सामाजिक परिप्रेक्ष्य.........विजय गुप्ता 62
योग और मानसिक स्वास्थ्य................डॉ० रीना मिश्रा 67
योगदर्शन : एक विश्लेषण..................डॉ० धनंजय शर्मा.............................73
गोरखबानी में नाथयोग......................डॉ० शिवानी विद्यालंकार...................77
योग और राष्ट्र...............................डॉ० बद्रीप्रसाद पंचोली.......................83
योग से रोजगार सृजन......................डॉ० अवधेश नारायण सिंह 85
जैनाचार्य रविषेणकृत पद्मपुराण...........प्रो० कमला चौहान/अंजली 86
योगाङ्गं ब्रह्मसम्पत्तिः.........................महाबीर शुक्ल 90
रामचरितमानस में भक्तियोग...............योगेश कुमार मिश्र 95
अस्पर्शयोग की अवधारणा..................मानसी 99
योगशास्त्र एवं वर्तमान वैश्विक.............नवनीत मिश्र....................................104
योग दर्शन की महत्ता–आधुनिक...........श्वेता...109
वर्तमान आपदा काल एवं उसमें............हरीश कुमार 113
योगदर्शन की वर्तमान......................डॉ० वन्दना तिवारी 117
जयराम आश्रम द्वारा संचालित विविध सेवाप्रकल्प

पत्रिका ऑनलाईन उपलब्ध - jairamashram.org/publication jairamsandeshpatrika

❒ पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त चिन्तन से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं।
❒ पत्रिका के सम्बन्ध में किसी भी विवाद के निस्तारण का न्याय क्षेत्र केवल हरिद्वार होगा।
❒ पत्रिका के सम्पादक एवं परामर्शदातृमण्डल के समस्त सदस्य पूर्णतया अवैतनिक हैं।

योग परिचय : सामाजिक परिप्रेक्ष्य

विजय गुप्ता
असिस्टेंट प्रोफेसर, सर्वदर्शन विभाग
श्रीला.ब.शा.रा.सं.विश्वविद्यालय, नवदेहली-16

इस जड़-चेतनात्मक जगत् में प्रत्येक प्राणी सुख चाहता है, चाहे वह पशु हो, पक्षी हो या कीट-पतंग। चिन्तन की दृष्टि से मनुष्य सभी प्राणियों में सर्वोपरि है साथ ही सुख की कामना की दृष्टि से भी मनुष्य शीर्ष स्थान पर है। वह सुख प्राप्त करने के लिए अनेक नैतिक-अनैतिक कार्य करता है लेकिन उससे प्राप्त सुख क्षणिक होता है जिसके समाप्त होने पर वह हताश हो जाता है और सद्ज्ञान के अभाव में पुनः पूर्वत् कार्य करता है। इसी प्रकार के कार्यों को करते हुए वह इस जन्म का नाश कर देता है और पुनः अगले जन्म के लिए तैयार हो जाता है लेकिन उसके दुःख का नाश नहीं होता। यदि जन्म होगा तो फिर वहीं प्रक्रिया चक्रवत् चलती रहेगी।

सुख दो प्रकार का होता है- 1. नित्य सुख और 2. अनित्य सुख। सुख-प्राप्ति के लिए धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष- ये चार पुरुषार्थ बताये गये हैं।[1] पुरुष के द्वारा अभीप्सित अर्थ को पुरुषार्थ कहते हैं।[2] पुरुषार्थ के मूल में ही सुख विद्यमान है। मानव धर्म करता है तो सुख के लिए अर्थ का उपार्जन करता है तो सुख के लिए, काम को प्राप्त करता है तो सुख के लिए और मोक्ष की प्राप्ति भी सुख के लिए ही करता है। अर्थ और काम से प्राप्त सुख अनित्य एवं क्षणिक होता है तथा धर्म एवं मोक्ष से प्राप्त सुख नित्य होता है। पुनरपि धर्म, अर्थ एवं काम तीनों मोक्ष की प्राप्ति के साधन बनते हैं। दुःख की ऐकान्तिक और आत्यन्तिक निवृत्ति ही मोक्ष है और यहीं परम पुरुषार्थ है। इसी की कामना सभी करते हैं क्योंकि प्रत्येक जीव नित्य सुख प्राप्त करना चाहता है।

ब्रह्माजी ने इस सृष्टि की रचना के साथ-साथ लोककल्याण के लिए वेद, धर्मशास्त्रादि भी प्रकट किये। उन्होंने प्रत्येक जीव के स्वभाव के अनुसार अनेक कल्याणकारी वचनों को धर्मशास्त्रादि ग्रन्थों में प्रकट किया, उन्हीं में एक योगशास्त्र भी है। योगशास्त्र का प्रथम उपदेष्टा होने के कारण हिरण्यगर्भ ही योग के प्रथम वक्ता कहलाये।[3] हिरण्यगर्भ द्वारा उपदिष्ट यह योगशास्त्र वेदों, स्मृतियों, रामायण, महाभारत, पुराणादि शास्त्रों में फैल गया। इतने विस्तृत क्षेत्रों में फैल जाने के कारण योगशास्त्र के मौलिकस्वरूप को खोज पाना दुरूह हो गया। ईश्वरेच्छा से सर्वज्ञ महर्षि पतंजलि ने योग के मौलिक स्वरूप को सूत्रों में समाहित किया जो 'पातंजलयोगसूत्र' के नाम से प्रख्यात हुआ जिससे पतंजलि योगदर्शन को सूत्रबद्ध कर व्यवस्थित रूप देने वाले हुए।

भारत की अनेक प्राचीन विद्याओं के अन्तर्गत दर्शन[4] का नाम अन्यतम स्थान पर प्रतिष्ठित है। दर्शन न केवल अध्यात्म[5] की बात करता है अपितु समाज के प्रत्येक क्रियाकलापों की एक लम्बी सूची भी प्रस्तुत करता है, जिसमें योगदर्शन को शीर्षस्थान प्राप्त है। भारतीय दर्शनों का विभाजन मुख्यतः दो प्रकार से किया जाता रहा है- जिन्होंने वेदादि को आधार बनाकर ग्रन्थ-रचना की उन्हें आस्तिक की संज्ञा दी गयी[6] तथा जिन्होंने वेदादि की मान्यताओं को न माना, वे नास्तिक कहलाये।[7] आस्तिक दर्शन के अन्तर्गत-सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदान्त आते हैं।[8] नास्तिक दर्शन के अन्तर्गत-चार्वाक, जैन और बौद्ध दर्शन आते हैं।[9]

योग शब्द युज् धतु से घञ् और अण् प्रत्यय करके निष्पन्न होता है। पाणिनीय धातुकोष में युज् धातु तीन अर्थों में प्राप्त होता है- दिवादिगण में युज् समाधौ, रुधादिगण में युज् संयोगे तथा चुरादिगण में युज् संयमने। यहाँ योग शब्द का अर्थ समाधि है[10], इसलिए दिवादिगण के युज् समाधौ

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com
ISSN 2395-3055
अगस्त 2020 ₹ 25

संस्कृत की एक श्रेष्ठ पत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन 'रजि0' की मासिक पत्रिका

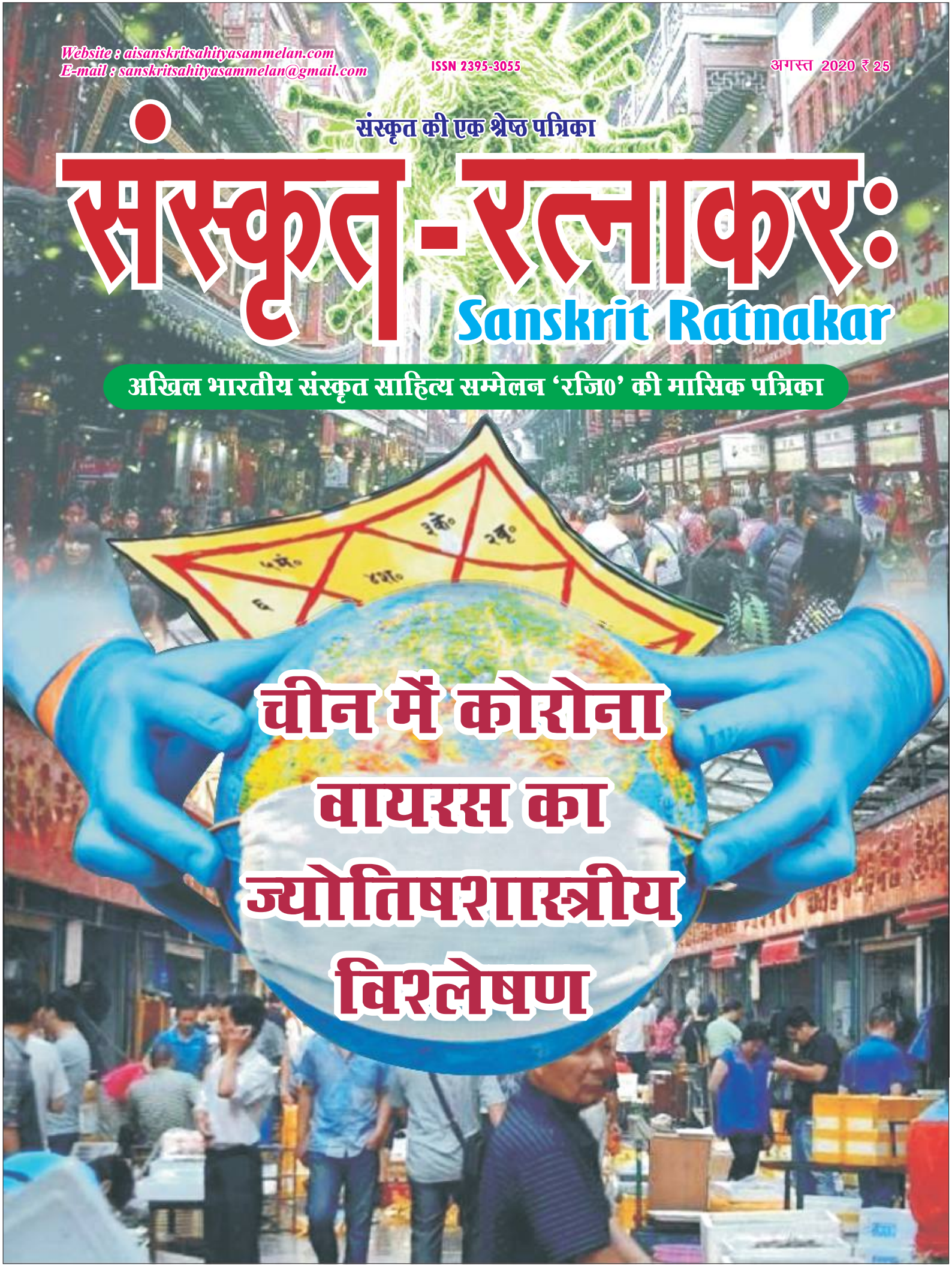

चीन में कोरोना वायरस का ज्योतिषशास्त्रीय विश्लेषण

वर्ष : 7 अंक : 03 (75)

संस्कृत की एक श्रेष्ठ पत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः
Sanskrit Ratnakar

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन 'रजि०' की मासिक पत्रिका

स्वामित्व : अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)

अध्यक्ष : प्रो० रमेश कुमार पाण्डेय
अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन

प्रधान संपादक (पदेन) : रमाकान्त गोस्वामी

संपादक : प्रो० शिवशंकर मिश्र

व्यवस्थापक मण्डल : ओ.पी. सर्राफ, आर.एन. वत्स 'एडवोकेट'
ओ.पी. जिन्दल, एन.के. गोयल

ग्राफ़िक्स डिजाइनर : मनोज कुमार

संपादकीय कार्यालय : संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसिफ
अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67

संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक : रमाकान्त गोस्वामी

दूरभाष : 011-41552221 मो.-9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए संस्कृत-रत्नाकरः जिम्मेदार नहीं है।

विषय सूची

03 चीन में करोना वायरस का ज्योतिषशास्त्रीय विश्लेषण
मनमोहन शर्मा

भारते भारती दीव्यतां सर्वदा 07
प्रो. शिवशङ्करमिश्रः

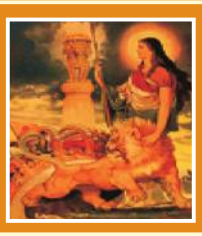

10 डॉ. गोस्वामी गिरिधारी लाल शास्त्री द्वारा विरचित
फलित ज्योतिष-विवेचनात्मक बृहत्पाराशर समीक्षा

कोरोनाव्याधिनिवारण में योग का प्रभाव 11
विजय गुप्ता

14 कृष्णावतार का वैशिष्ट्य
डॉ. श्रीमती कृष्णा जैन

सम्पादकीयम्

सम्प्रति सकलं विश्वं कोरोनाव्याधिना समाकुलितं विद्यते, सर्वं कार्यमवरुद्धमिदानीम्। असंख्यजनाः वृत्तिविहीना जाताः, लक्षशोऽप्यधिकाः मानवाः अकालकालकवलिताः, व्यवसायाः विनष्टाः, जीवनयापनाय दैनिकवृत्तौ संलग्नाः श्रमिकाः सर्वथा वृत्तिशून्याः अभूवन्। विश्रान्तिनिलयानि अतिथिगृहाणि, (होटल) आहार-प्रदातृकेन्द्राणि, (रेस्टोरेंट) प्रायशः पिहितानि सन्ति। किमधिकं चिकित्सालयेषु, उद्योगालयेषु, शिक्षणसंस्थानेषु, कार्यालयेषु, पुस्तकालयेषु, धर्मशालासु, मन्दिरेषु, आपणेषु, गृहनिर्माणादिकार्येषु च सर्वत्र व्यवधानं दरीदृश्यते। देशात् देशान्तरगमनार्थं वायुयानं, रेलयानं वसयानमपि सारल्येन नास्ति सुलभम्। संक्षेपेण जीवनोपयोगि अपरिहार्यमपि साधनं ऋजुरीत्या नोपलभ्यते।

अस्यां विपरीतपरिस्थितावपि यथा चिकित्सकैः, आरक्षिजनैः, पत्रकारैश्च स्वकीयं दायित्वं उत्साहेन सम्पादितं तथैव ज्ञानप्रदातृभिः गुरुभिः (शिक्षकैः) सततं अध्यापनकार्यं समाचरितम्। **"स्वाध्यायान्मा प्रमदः"** इति श्रुतिवचनमनुपालयन्तः शिक्षकाः दिवानिशं गृहादेव आनलाईनमाध्यमेन अत्यन्तं निष्ठया करुणया च छात्रान् अध्यापितवन्तः, परीक्षादिकार्यमपि सम्पादितवन्तः। आचार्याणामेतत् कार्यकौशलं समर्पणञ्च अन्यानपि जनान् प्रेरणायै प्रकल्प्यते।

समाजे शिक्षा-संस्कार-संस्कृतिसंस्थापने शिक्षकाणां महती भूमिका भूयते। स्वाचरणेन, स्वव्यवहारेण, स्वकार्येण, स्वविचारेण, स्वचिन्तनेन, स्वनिर्देशनेन च शिक्षकाः छात्रेषु विशिष्टगुणवैभवं जनयन्ति। अतएव शिक्षकः नास्ति साधारणोऽपितु असाधारणः यथोक्तं महर्षिणा चाणक्येन- **"शिक्षक कभी साधारण नहीं होता प्रलय और निर्माण उसकी गोद में पलते हैं।"**

अस्माकं जवीने अस्मान् यः प्रेरयति, यः सूचयति, यः दर्शयति, यः शिक्षयति यश्च बोधयति ते सर्वे गुरुपदवाच्याः भवन्ति-

प्रेरकः सूचकश्चैव वाचको दर्शकस्तथा।
शिक्षको बोधकश्चैव षडेते गुरवः स्मृताः॥

प्रो० शिवशंकरमिश्रः

(कवर सहित पृष्ठ संख्या 18)

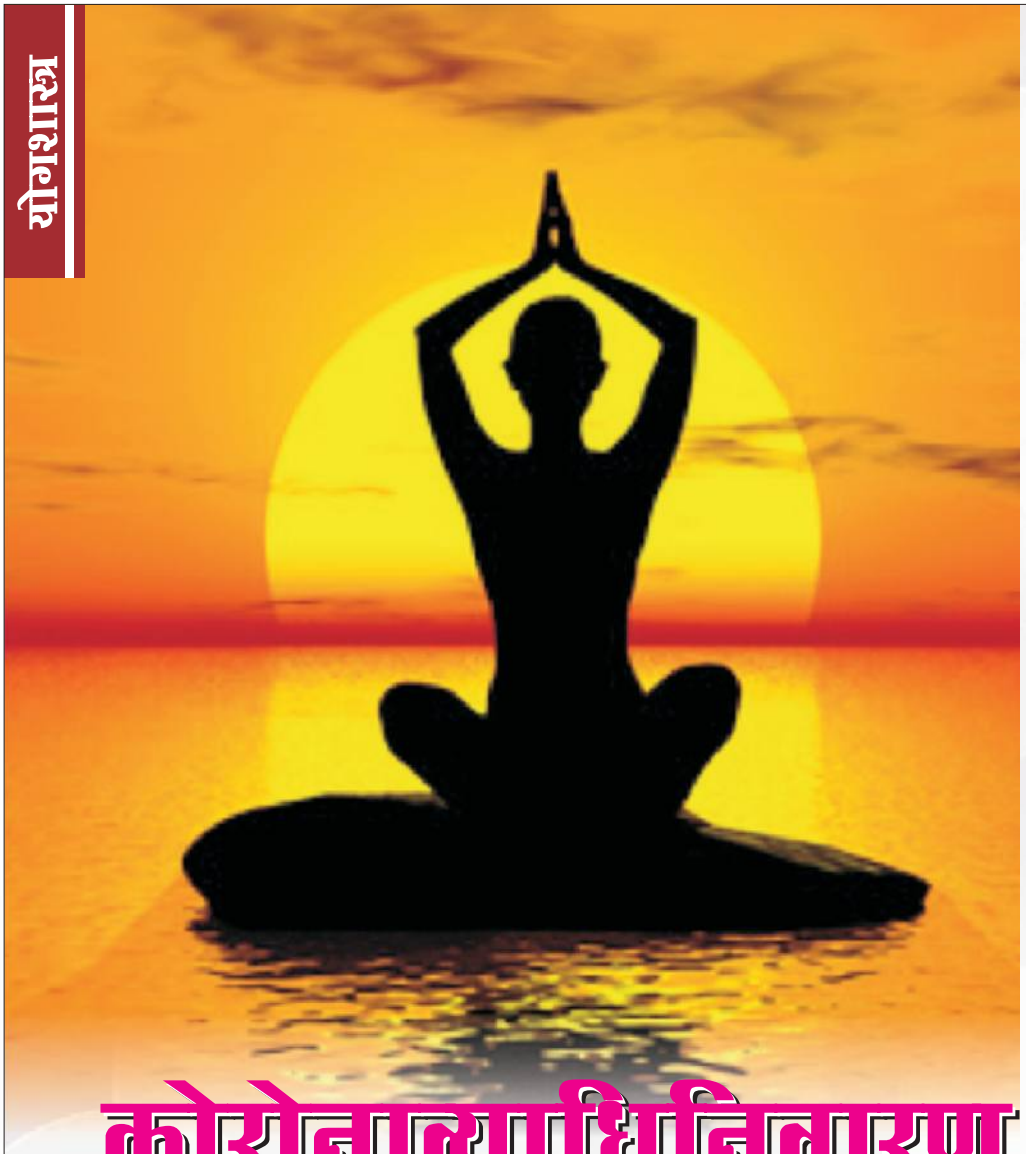

कोरोनाव्याधिनिवारण में योग का प्रभाव

विजय गुप्ता

असिस्टेंट प्रोफेसर, सर्वदर्शन विभाग,
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली–110016

विश्व का आदिग्रन्थ वेद कहता है कि **'यदीयं सर्वा भगो वित्तेन पूर्णा किमहं तेन कुर्यां येनाहं नामृता स्याम्'**[1] अर्थात् यदि धन से भरी यह पृथ्वी भी मुझे मिल जाये लेकिन इसका मैं क्या करूं जो मुझे अमर न बना सके अर्थात् मुझे जीवन न दे सके। इस लोक में कुछ भी जीवन से बहुमूल्य नहीं। पंचभूतों से बना यह भौतिक शरीर जो अनेक अवयवों से युक्त है जो आत्मा से युक्त होकर ही किसी कर्म में प्रवृत्त होता है; आत्मा का विच्छेद होते ही इस शरीर का कोई मूल्य नहीं होता। इसीलिए इस शरीर को धारण करने के लिए अनेक प्रकार के दु:खों को सहना पड़ता है फिर भी इस शरीर को धारण करने के लिए जीव लालायित रहता है– **'पुनरपि जननं पुनरपि मरणं पुनरपि जननीजठरे शयनम्'**[2]।

आज के वैज्ञानिक युग में नित-प्रतिदिन अनेक अन्वेषण होते हैं जिसमें अनेक सकारात्मक परिणाम प्राप्त होते हैं वहीं कुछ प्रविधियों में गलती होने से घातक परिणाम प्राप्त होते हैं। इसी का उदाहरण आज का कोरोना वायरस COVID-19 है। यह वायरस कैसे उत्पन्न हुआ इसका सही पता नहीं लगा किन्तु कुछ अनुसन्धानकर्ता इसे विज्ञान का ही दुष्परिणाम बताते हैं। आज सम्पूर्ण विश्व इससे त्रस्त है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार आज विश्व में लगभग 23518343 (2 करोड़ 35 लाख 18 हजार 3 सौ 43) लोग COVID-19 से संक्रमित हो चुके हैं[3] तथा इस रोग से 810492 (8 लाख 10 हजार 4 सौ 92) लोग मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं।[4] इस रोग का संक्रमण सर्वप्रथम चीन के वुहान नामक शहर में दिसम्बर 2019 में देखने को मिला। यह वायरस मुख्य रूप से रोग प्रतिरोधक क्षमता (Immunity) को प्रभावित करता है तथा जिसकी रोग प्रतिरोधक क्षमता कमजोर है उसको यह वायरस अधिक प्रभावित करता है।

आज सम्पूर्ण विश्व इस वायरस का वैक्सिन बनाने में संलग्न है। वहीं यह वायरस अपने स्वरूप को बदलने वाला है इसीलिए इस वायरस का वैक्सिन बनाने में वैज्ञानिकों एवं डॉक्टरों को अत्यधिक शोध एवं परिश्रम करना पड़ रहा है। **'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्'**[5] अर्थात् यह शरीर ही सभी धर्मों का प्रमुख साधन है। आशय यह है कि यदि यह शरीर है तो आप अपनी इच्छा से कुछ भी कर सकते हैं लेकिन शरीर के बिना आप कोई भी धर्म अथवा कार्य नहीं कर सकते हैं अत: शरीर की प्रधानता सर्वत्र है। इस विचारधारा का उन्नयन प्राचीन भारत में ही हो गया था। इस शरीर के संरक्षण एवं विकास हेतु अनेक शास्त्र प्रचलित हुए। उन्हीं में आयुर्वेद एवं

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

ISSN 2395-3055

फरवरी 2021 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit research journal)

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)
संस्कृत भवन, ए–10, कुतुब संस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली–110067

वर्ष : 7 अंक : 09 (81)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit research journal)

स्वामित्व : अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)

अध्यक्ष : प्रो० रमेश कुमार पाण्डेय
अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन

प्रधान संपादक (पदेन) : रमाकान्त गोस्वामी

संपादक : प्रो० शिवशङ्कर मिश्र

शोधपत्रपरीक्षक मण्डल : प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली)
प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर)
प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली)
प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी)
प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)

व्यवस्थापक मण्डल : आर.एन. वत्स 'एडवोकेट'
पं० हरिदत्त वशिष्ठ, एन.के. गोयल

ग्राफ़िक्स डिजाइनर : मनोज कुमार

संपादकीय कार्यालय : संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसिफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67

संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक : रमाकान्त गोस्वामी
महासचिव, अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन

दूरभाष : 011-41552221 मो.-9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए संस्कृत-रत्नाकरः जिम्मेदार नहीं है।

विषय सूची

03 महाभारत में मोक्ष चिन्तन
ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी

भर्तृहरिसम्मतं वाक्यार्थस्वरूपम् 06
पद्मश्रीआचार्यरामयत्नशुक्लः

11 अद्वैत वेदान्त की शिक्षाशास्त्रीय दृष्टि
विजय गुप्ता

सम्पादकीयम्

गुणधर्मविहीनो यो निष्फलं तस्य जीवितम्

संस्कृतभाषा अस्माकं सांस्कृतिकी भाषाऽस्ति, यतः अत्रैव समेऽपि संस्काराः सम्प्राप्यन्ते। अस्यां नैकानि सुवचनानि, सुभाषितानि, मानवमूल्यानि च विलसन्ति, यानि बालकेभ्यो युवकेभ्यश्च सत्प्रेरणां प्रयच्छन्ति। मानवजीवने मानवमूल्यभूताः गुणाः मूर्धन्यं स्थानं विभ्रति। जने-समाजे-लोके च सर्वत्र यशो लाभाय प्रतिष्ठाप्राप्तये च गुणा एव हेतुभूताः भूयन्ते। गुणानां प्रभावादेव मानवाः सर्वत्र सम्पूज्यन्ते। कोऽपि जनः उच्चकुले समुत्पन्नः, रूपयौवनसम्पन्नः, प्रभुत्वपरिपूर्णः, वैभवविशिष्टश्चेत् समाजे नूनं पूजनीयो भविष्यति इति निश्चयेन वक्तुं न शक्यते, अपितु समाजे गुणवन्तः, ज्ञानवन्तः, अहिंसा-सत्य-अस्तेय-ब्रह्मचर्य-अपरिग्रहवन्तः, आचारवन्तश्च जनाः अवश्यमेव सर्वत्र हृदयेन समाद्रियन्ते पूज्यन्ते च। पूजास्थानं गुणा एव भवन्ति न तु लिङ्गं न च वयः इति प्रसिद्धं भवभूतिवचः-

शिशुर्वा शिष्या वा यदसि मम तत्तिष्ठतु तथा,
विशुद्धेरुत्कर्षस्त्वयि तु मम भक्तिं द्रढ़यति।
शिशुत्वं स्त्रैणं वा भवतु ननु वन्द्यासि जगतां,
गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः॥

(उत्तरराम. 4/11)

उक्तगुणगणमहिम्न एव सत्यपि निर्धने, सत्यपि कुरूपे, सत्यपि कृशकाये, सत्यपि दिव्याङ्गे, सत्यपि लघुवपुसि, सत्यपि च बालवयसि जनाः पूजनीयाः वन्दनीयाश्च दृश्यन्ते। किमधिकं गुणवैभवादेव आचारवन्तोऽर्च्यन्ते, गुणवन्तो गण्यन्ते, ज्ञानवन्तो ज्ञायन्ते, बुद्धिमन्तो वन्द्यन्ते, चरित्रवन्तश्च सर्वथा चर्च्यन्ते। सुसंस्कृताः संस्पृहणीयाः, असंस्कृताश्च तिरस्करणीयाः भवन्ति। अतो लोके सभायां सर्वत्रास्माकं सम्माननं भवेत्, अस्माकं प्रभावो वर्धेत्, अस्माकमनुयायिनोऽसंख्याः प्रभवन्त्विति धिया विद्यते चेत् गुणाः सयत्नमर्जनीयाः। सति गुणे सर्वं सुलभायते। अन्ते समेषां सचेतसमात्मनि दिव्यगुणाः समुत्पद्येरनिति भावनया शास्त्रेषु निगदितानि कर्णामृत-सूक्तिवचनानि सर्वैः सततं पालनीयानि- • स्वस्तिपन्थामनुचरेम, • भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम, • मधुमतीवाचमुदेयम, • भद्रं मनः कृणुष्व, • मातृदेवो भव, • पितृदेवो भव, • आचार्यदेवो भव, • अतिथिदेवो भव, • स्वाध्यायान्मा प्रमदः, • सत्यं वद • धर्मं चर, • मा गृधः कस्यस्विद्धनम्, • मा विद्विषावहैः, • लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्त्विति।

मित्राणि! अमीषां वचसां प्रतिपदं परिपालनेन नराः येषां केषां न ते वन्द्याः?

वदनं प्रसादसदनं हृदयं सदयं सुधामुचो वाचः।

प्रो० शिवशङ्करमिश्रः
शोधविभागाध्यक्षः,
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली

14 योग तथा ज्योतिष से महामारी का निदान
डॉ० द्वारिका प्रसाद नौटियाल

योग विद्या में ध्यान का स्वरूप एवं महत्त्व 17
विष्णु प्रसाद सेमवाल

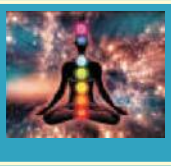

(कवर सहित पृष्ठ संख्या 20)

अद्वैत वेदान्त की शिक्षाशास्त्रीय दृष्टि

विजय गुप्ता
सहायक आचार्य, सर्वदर्शन विभाग,
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली-110016

शङ्कर का अद्वैतदर्शन एक महान् कल्पनात्मक और तार्किक सूक्ष्मता का दर्शन है। वेदान्तदर्शन भारतीय अध्यात्मशास्त्र का मुकुटमणि कहा जाता है। अद्वैत वेदान्त में जीवात्मा एवं परमात्मा में ऐकात्म्य सिद्ध किया गया है और जीवात्मा-परमात्मा को अभिन्न बताया गया है।[1] अविद्या ही सम्पूर्ण प्रपञ्च का कारण है, यह अपनी आवरण एवं विक्षेप शक्ति से आत्मा के स्वरूप को आच्छादित कर देती है। जिससे जीव अपने मूल-स्वरूप को नहीं जान पाता है और जन्म-मृत्यु के मोहात्मक इस जगत् में फंसा रहता है।

दर्शन में आत्म-चिन्तन एवं मोक्ष पर प्रकाश डाला गया है, इसमें मानव-जीवन के चरमोद्देश्य एवं उसके साधनों पर विचार किया गया है। इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए शिक्षा का विधान किया गया है। शिक्षा से हमारे चिन्तन में परिवर्तन करके उस चरमोद्देश्य को प्राप्त किया जा सकता है। शिक्षा से हमारी अवलोकन, परीक्षण, चिन्तन और मनन शक्तियों का विकास होता है। वस्तुतः शिक्षा और दर्शन दोनों एक दूसरे पर आश्रित हैं। जहाँ दर्शन जीवन के विभिन्न पहलुओं पर विचार करता है तथा शिक्षा उन पर क्रियात्मक व्यवहार करता है।

शिक्षा का विषय इतना दीर्घ और विस्तृत है कि वह सम्पूर्ण दर्शन को अपने-आप में समेटे हुए है। शिक्षा की कुछ प्रमुख परिभाषाओं से ज्ञात होता है कि शिक्षा मनुष्य के न केवल बाह्यकरणों को ही प्रभावित करती है अपितु इससे अन्तःकरण भी शुद्ध हो जाता है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने शिक्षा को व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास की प्रक्रिया के रूप में स्पष्ट किया है। उनके शब्दों में-

"By Education I mean an all around drawing out of the best in child and man-body, mind and spirit."

स्विट्जरलैण्ड के प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री पैस्टेलौजी का कहना है कि "शिक्षा मनुष्य की आन्तरिक शक्तियों के प्रगतिशील और सर्वांगपूर्ण विकास का नाम है।"

उपर्युक्त दोनों परिभाषाओं में शिक्षावित्तों ने शिक्षा को आन्तरिक-विकास का प्रमुख कारण माना है और सम्पूर्ण आत्म-शक्तियों का केन्द्र भी।

वेदान्तदर्शन के अनुसार शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थी को अज्ञान से मुक्त करके ज्ञान का भान कराना है जिससे वह विद्या तथा अविद्या के विवेकपूर्ण भेद को समझ सके। इसके साथ ही मिथ्या और सत्य ज्ञान में अन्तर को स्पष्ट करने योग्य बन सके। यद्यपि अविद्या के नष्ट होते ही मनुष्य जीवन के परमलक्ष्य मोक्ष को प्राप्त कर लेता है परन्तु शिक्षा का कार्य छात्रों के विवेकज्ञान का निरन्तर तीव्र गति से विकास कराना होता है। जिससे अविद्या को नष्ट करने में सहायता मिल सके और जीवन के परमलक्ष्य को प्राप्त कर सके। शिक्षा के सन्दर्भ में मानव-विकास की कल्पना करना प्रायः प्रत्येक देश के विचारकों में पायी जाती है।

स्वामी विवेकानन्द ने मानव-विकास को शिक्षा-उद्देश्य के रूप में प्रतिपादित करते हुए लिखा है- "सभी प्रकार की शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य-निर्माण ही है। सारे प्रशिक्षणों का अन्तिम ध्येय मनुष्य का विकास करना ही है।" वस्तुतः शास्त्र और आचार्य के उपदेशों से आत्मा-अनात्मा,

RNI-UTTHIN/2013/51284

हिन्दी अर्द्धवार्षिक

ISSN-0975-8739

जयराम संदेश
Jairam Sandesh

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत विशेषज्ञ समिति द्वारा मूल्यांकित शोध-पत्रिका

A Peer Reviewed, Refereed Research Journal

द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग विशेषांक

₹ 50/-

धर्म-दर्शन-अध्यात्म एवं सांस्कृतिक संदर्भ पर आधृत

हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

जून 2021 | वर्ष 09 | अंक 01

RNI-UTTHIN/2013/51284

हिन्दी अर्द्धवार्षिक ISSN-[illegible]

जयराम संदेश
Jairam Sandesh

धर्म–दर्शन–अध्यात्म एवं सांस्कृतिक संदर्भ पर आधृत

A Peer Reviewed, Refereed Research Journal

जनवरी–जून
2021 ई.
विक्रम सम्वत् 2078

वर्ष : 09 अंक : 01

संरक्षक :

प. पू. ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी
परमाध्यक्ष : जयराम संस्थाएँ

**

परामर्शदातृ मण्डल

प्रो० वशिष्ठ त्रिपाठी (वाराणसी)
डॉ० रामभद्रदास श्रीवैष्णव (प्रयाग)
प्रो० रमेश कुमार पाण्डेय (दिल्ली)
प्रो० हरेराम त्रिपाठी (दिल्ली)
प्रो० रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर)

**

सम्पादक

डॉ. शिवशङ्कर मिश्र

मोबाइल नं. 9456328499
ई-मेल : shivshankarmishra74@gmail.com

**

शोधपत्र परीक्षक मण्डल

प्रो० जे.के. गोदियाल (पौड़ी)
प्रो० राम बहादुर शुक्ल (जम्मू)
डॉ० रामनारायण द्विवेदी (दिल्ली)
डॉ० दिनेश कुमार गर्ग (वाराणसी)
डॉ० रामविनय सिंह (देहरादून)
डॉ० रामरतन खण्डेलवाल (हरिद्वार)

**

प्रूफ संशोधक
मनमुदित नारायण शुक्ल

**

प्रकाशक :

श्री जयराम आश्रम

भीमगोड़ा, हरिद्वार – 249401 (उत्तराखण्ड)
मोबाइल नं. 01334-260251
ई-मेल : jairamsandesh@gmail.com

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी द्वारा भार्गव प्रिंटर्स, निकट ललतारौ पुल, जनपद-हरिद्वार, उत्तराखण्ड से मुद्रित एवं श्रीजयराम आश्रम भीमगोड़ा, जनपद हरिद्वार से प्रकाशित
सम्पादक : डॉ. शिवशंकर मिश्र

अनुक्रम

आशीर्वचन

सम्पादकीय

शिवतत्त्व का महत्त्व एवं उसकी वैश्विकता.....प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र....................1
ज्योतिर्लिङ्ग का वैदिक स्वरूप..................प्रो० रामानुज उपाध्याय.......................5
ज्योतिर्लिङ्गों में शिवतत्त्व ....प्रो० छायारानी.................................7
शिवमहापुराण में द्वादश ज्योतिर्लिंग...........प्रो० मिनति रथ..........................13
सोमनाथ मन्दिर..................................डॉ0 मार्कण्डेय नाथ तिवारी.................17
मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग का पौराणिक.........डॉ0 द्वारिका प्रसाद नौटियाल..............20
उज्जयिन्यां महाकालः ....देवानन्द शुक्ल /प्रीति शुक्ला.............23
अद्भुत ज्योतिर्लिंग है ओंकारेश्वर ....प्रो० रामराज उपाध्याय.......................26
ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग : अमरेश्वर महादेव...डॉ0 रज्जन कुमार..............................28
वैद्यनाथ–धाम :मनोकामना ज्योतिर्लिंग......डॉ० सुनीता कुमारी..........................31
वैद्यनाथ मंदिर का ऐतिहासिक..................डॉ0 धनंजय शर्मा............................34
द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों में भीमाशंकर.............अंकित मनोड़ी...............................38
द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों में रामेश्वरम्..............डॉ० आशुतोष गुप्त /तनुजा...............41
नागेशं दारुकावने..................................डॉ० कीर्तिवल्लभ शक्टा 46
नागेश्वर ज्योतिर्लिंग का प्रादुर्भाव तथा ....डॉ० विनोद कुमार उनियाल 47
काशी–विश्वनाथ...................................प्रो0 कमला चौहान/अंजली................50
नाथयोग में भगवान् विश्वनाथ...................महाबीर शुक्ल...............................57
ज्योतिर्लिंगों में महिमा विश्वनाथ.................डॉ० अनिलानन्द 60
लिंगोत्पत्ति और उनके स्वरूप...................जगद्गुरु स्वामी विदेह जी महाराज........62
हिमालये तु केदारम्..............................डॉ0 लज्जा पन्त (भट्ट)...................65
धार्मिक यात्रा का एक प्रमुख केन्द्र ....प्रो० पुष्पा अवस्थी/ मनोज जोशी 69
ज्योतिर्लिंग केदारनाथ ....नन्दिनी कोटियाल/ प्रो० कमला चौहान...74
उत्तराखण्डस्थ पञ्चकेदार ....डॉ० आशुतोष गुप्त/राजमोहन...........78
ज्योतिर्लिङ्गों में पशुपतिनाथ ....डॉ० तारादत्त अवस्थी......................92
शिवसूचना का वैश्विक स्रोत.....................डॉ० राजेश कुमारी मिश्र.....................96
द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों के स्वामी शिव ....विजय गुप्ता...................................99
पुराणों में ज्यातिर्लिङ्ग की उत्पत्ति ....डॉ० व्रजेन्द्र कुमार सिंहदेव..............103

जयराम आश्रम द्वारा संचालित विविध सेवाप्रकल्प

पत्रिका ऑनलाईन उपलब्ध - jairamashram.org/publication jairamsandeshpatrika

❐ पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त चिन्तन से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं।
❐ पत्रिका के सम्बन्ध में किसी भी विवाद के निस्तारण का न्याय क्षेत्र केवल हरिद्वार होगा।
❐ पत्रिका के सम्पादक एवं परामर्श-परीक्षक मण्डल के समस्त सदस्य पूर्णतया अवैतनिक हैं।

द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग के स्वामी शिव का दार्शनिक विवेचन

विजय गुप्ता
सहायक आचार्य- सर्वदर्शन विभाग
श्रीला.ब.शा.रा.सं.वि.वि., नई दिल्ली-16

भारतीय दर्शन व्यावहारिक एवं सामाजिक दर्शन है यह समाज के प्रत्येक व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक स्तर पर स्वस्थ, विकसित एवं सुदृढ़ बनाने में अग्रसर है। माया अथवा अज्ञान का संसर्ग होते ही शुद्ध, बुद्ध, मुक्त जीव सांसारिक जीव के रूप में इस मृत्युलोक से बद्ध हो जाता है पुनः निरन्तर कर्म करते हुए वह अनन्त काल के लिए इस लोक का वासी हो जाता है। **'प्रतिकूलवेदनीयं दुःखम्'**[1] अर्थात् प्रतिकूल प्रकारक अनुभूति दुःख होता है। दुःख से सभी जीव भयभीत रहते हैं। त्रिविध दुःख- आध्यात्मिक, आधिभौतिक एवं आधिदैविक[2]; से आप्लावित मनुष्य निरन्तर त्रिविध ताप से बचने में प्रयत्नरत रहता है। कलयुग में भारतीय संस्कृति के अनुसार पापों से मुक्ति तथा नित्य सुख की प्राप्ति हेतु भारत की पवित्र भूमि पर अनेक साधन विद्यमान हैं। प्राचीन शास्त्रों में पापों के क्षय, त्रिविध दुःखों से मुक्ति एवं परमानन्द मोक्ष की प्राप्ति में द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग की महती भूमिका द्रष्टव्य है। द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों के स्वामी आदिदेव शिव हैं जिनको भारतीय दर्शन में परमतत्त्व के रूप में निरूपित किया गया है। द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों के स्वामी उस परमतत्त्व शिव के स्वरूप विवेचन में यह शोधपत्र केन्द्रित है। द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग एवं उनका उत्पत्ति स्थल इस प्रकार है-

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्यां महाकालमोङ्कारं ममलेश्वरम्॥
परल्यां बैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशङ्करम्।
सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारुकावने॥
वाराणस्यां तु विश्वेशं त्रयम्बकं गौतमीतटे।
हिमालये तु केदारं घृष्णेशं च शिवालये॥
एतानि ज्योतिर्लिङ्गानि सायं प्रातः पठेन्नरः।
सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति॥

शिव शब्द **'श्यति पापं शो वन् पृषो'** से निष्पन्न होता है जिसका शाब्दिक अर्थ है पाप को शान्त करने वाला। **'शिवं कल्याणं विद्यतेऽस्य शिवः'** इस व्युत्पत्ति वाक्य से पवित्र एवं कल्याण के अर्थ में शिव प्रसिद्ध हैं। इसी प्रकार वेदों में भी प्राप्त है-**'तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु'**[3]। भारतीय ज्ञान परम्परा में शिव मङ्गल के बोधक हैं[4] यथा- **'शिवास्ते पन्थानः सन्तु'**[5]। अनेक शास्त्रों में शिव की स्तुति का एकमात्र हेतु है कि शिव की आराधना से कार्य की निर्विघ्न समाप्ति तथा सद्यः सभी दुःख-समस्याओं से मुक्ति मिल जाती है। शिव स्वयं में परमसुख हैं।[6] शिव मोक्ष के पर्याय हैं।[7] शिव को अष्टमूर्त्तियों में निरूपित करते हुए कालिदास ने शिव से सम्पूर्ण जगत् को व्याप्त बताया है-

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com
ISSN 2395-3055
सितम्बर-अक्टूबर, 2021 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)
संस्कृत भवन, ए-10, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली - 110067

वर्ष : 8 अंक : 4, 5 (88, 89)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

स्वामित्व	:	अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)
अध्यक्ष	:	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय अखिल भारतीय सस्कृत साहित्य सम्मेलन
प्रधान सम्पादक (पदेन)	:	रमाकान्त गोस्वामी
सम्पादक	:	प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
शोधपत्रपरीक्षक मण्डल	:	प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली) प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर) प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली) प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी) प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)
व्यवस्थापक मण्डल	:	आर. एन. वत्स 'एडवोकेट'
ग्राफिक डिजाईनर	:	विश्वकर्मा शर्मा
संपादकीय कार्यालय	:	संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसिफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67
संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक	:	रमाकान्त गोस्वामी, महासचिव, अ.भा.स. सा.स.
दूरभाषा	:	011-41552221, मो.- 9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com

E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए "संस्कृत-रत्नाकर": जिम्मेदार नहीं है।

विषय सूची

03। क्रान्तिवीर प्रवासी संस्कृत शिक्षक....
– प्रो. रमाकान्त पाण्डेय

08। भारतीय वाङ्मय में मोक्ष का स्वरूप
– डॉ. रमेश कुमार

11। ताजिकमते अरिष्टविमर्शः
– श्री हर्ष द्विवेदी

14। प्रतिज्ञाहानि नामक निग्रहस्थान का विववेचन – यशवन्त कुमार त्रिवेदी

सम्पादकीयम्

अस्माकं भारतीयज्ञानपरम्परायां शिष्येभ्यो यो वेदमध्यापयति मन्त्रव्याख्यानञ्च करोति स अध्यापकत्वेन परिकल्पितः। अध्यापको नाम अध्यापनकर्ता, पाठगुरुः, अध्यापयिता, संस्कारादिकर्तुर्गुरुराचार्यः, उपाध्यायश्चेति। अद्यत्वे अध्यापकस्यैवाभिधानं शिक्षकत्वेन सुप्रसिद्धम्, अतएव डॉ. सर्वपल्लीराधाकृष्णन्महोदयानां जन्मतिथिमभिलक्ष्य शिक्षकदिवसः प्रतिवर्षं परिपाल्यते भारतसर्वकारेण। स चाध्यापकः अस्माकं शास्त्रेषु द्विधा सुप्रसिद्धः आचार्यः उपाध्यायश्च। शिष्येभ्यो यो निःशुल्कं शिक्षां प्रददाति स आचार्य इति गीयते-

- **उपनीय तु यः शिष्यं वेदमध्यापयेद् द्विजः।**
  सकल्पं सरहस्यं च तमाचार्यं प्रचक्षते॥ (मनु. 2/140)
- **यस्तूपनीय व्रतादेशं कृत्वा वेदमध्यापयेत्तमाचार्य्यं विद्यात्।**

आचार्यस्य अन्यापि एका परिभाषा सुप्रसिद्धा-

- **आचिनोति च शास्त्रार्थम् आचारे स्थापयत्यपि।**
  स्वयमाचरते यस्तु स आचार्य इति स्मृतः॥

मेनियरविलियम्सविरचिते कोशग्रन्थे आचार्यविषये एतद्वचनं सम्प्राप्यते- Knowing or teaching the आचार or Rules.

"योऽध्यापयति वृत्यर्थमुपाध्यायः स उच्यते" इति मनूक्तलक्षणेन सिद्ध्यति यत् शिष्येभ्यो यो शुल्कमादाय शिक्षां प्रददाति स उपाध्यायो भवति-

यस्त्वेनं मूल्येनाध्यायेदेकदेशं वा तमुपाध्यायमिति। अद्यत्वे शिक्षाप्रणाल्यां शिक्षाकर्मणि संलग्नाः जनाः शिक्षकत्वेन विज्ञायन्ते। वस्तुतः पुरा ये उपाध्यायाः आसन् त एव इदानीं शिक्षका इत्यनुभूयते। शिक्षकविषये शिक्षाविषये चात्यन्तं सुप्रसिद्धमाचार्यचाणक्यवचनम् (भाषायाम्) सम्प्रत्यपि लोकमानसे शिक्षकाणां गौरवसंवर्धनाय अस्मानत्यन्तं सम्प्रेरयति-

- शिक्षक कभी साधारण नहीं होता प्रलय और निर्माण उसकी गोद में पलते हैं।
- शिक्षा ही सबसे अच्छी मित्र है, शिक्षित व्यक्ति हर जगह सम्मान पाता है। शिक्षा यौवन और सौन्दर्य को परास्त कर देती है।

समाजस्य निखिलेषु प्रकल्पेषु साक्षात् परम्परया वा शिक्षकाणां महती भूमिका अनुभूयते। तत् कामं युद्धं भवेत् शान्तिर्वा भवेत्, ग्रामो भवेत् संग्रामो वा भवेत्, सर्वत्र शिक्षकाः अमूर्ततया विराजन्ते। स्वतन्त्रतासंग्रामेऽपि संस्कृतशिक्षकाणां संस्कृतच्छात्राणाञ्चासीत् महती प्रस्तावना इति प्रकृतेऽङ्के भवन्तः पठितुं प्रभवन्ति।

यथा दृश्यमानं किमपि गगनचुम्बिभवनं मूले आधृतं भवति। यदि मूलं दृढं न भवेत्तर्हि भवनमपि सुदृढं न स्यात्, तद्वदेव सर्वत्र प्रशासकेषु, न्यायाधीशेषु, चिकित्सकेषु, अधिवक्तृषु, अभियन्तृषु, व्यापारिषु, कर्मचारिषु च मूले सूक्ष्मतया शिक्षक एव सन्तिष्ठते। शिक्षकः शिक्षायाः हेतुः, शिक्षा च सकलाभ्युदयस्य हेतुरिति विद्यते कश्चन क्रमः। अतः सकलज्ञानप्रदायकः, परमार्थपथप्रदर्शकः, निखिललोकव्यवहारबोधकः, ज्ञानवैभवस्य, निःश्रेयसाभ्युदयस्य च सम्प्रदायकः शिक्षकः सर्वैस्समादरणीयोऽनु करणीययश्चेति मे मतिः।

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः, शोधविभागाध्यक्षः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली - ११००१६

16। केवलसमासस्य वैलक्षण्यं, चकारार्थश्च
– अर्चना शर्मा

18। वैदिक देवता और उनका वाहन
–डॉ. योगानन्द शास्त्री – विजय गुप्ता

20। प्राकृतिक चिकित्सा या प्राकृतिक जीवन
– डॉ. नवदीप जोशी

22। श्वेताश्वतरोपनिषदि ब्रह्मणः स्वरूपम्
– हरि मैनाली

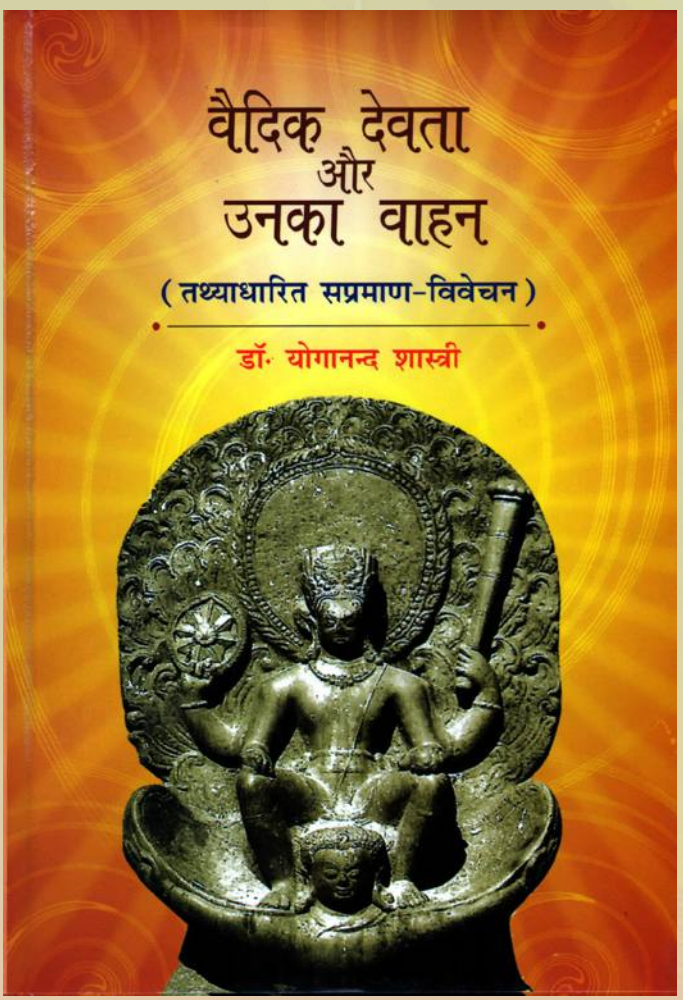

"वैदिक देवता और उनका वाहन"-

डॉ. योगानन्द शास्त्री

विजय गुप्ता
सहायक आचार्य, सर्वदर्शन विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली-१६

भारतीय ज्ञान परम्परा में प्राक्तन काल से ही अनेक प्रकार से भाष्य, टीका, व्याख्या, टिप्पण्यादि रूप में शोधकार्य सम्पादित किये जाते रहे हैं। ऐसे में कुछ शास्त्रमर्मज्ञ स्वतन्त्र रूप से मौलिक विषयों पर शास्त्रीय अन्वेषणपूर्वक कर शोधग्रन्थों का प्रणयन किये। ऐसे मूर्धन्य विद्वानों में डॉ. योगानन्द शास्त्री जी अन्यतम शास्त्रवेत्ता हैं। शास्त्री जी द्वारा विरचित 'वैदिक देवता और उनका वाहन (तथ्याधारित सप्रमाण विवेचन)' नामक ग्रन्थ अनूठा शोधपरक ग्रन्थ है। शास्त्री जी द्वारा अधीत पुरातत्त्व, लिपिविज्ञान, न्यूमिस्मेटिक्स, म्यूजियोलॉजी आदि विद्याओं का साक्षात् प्रयोग इस ग्रन्थ में द्रष्टव्य है। यह ग्रन्थ मुख्यतः वैदिक देवताओं के वाहन के पर्यालोचन पर आधृत है साथ ही प्रसंगतः तत्तत् देवताओं का सन्दर्भित विश्लेषण भी किया गया है।

प्रस्तुत ग्रन्थ कुल छः अध्यायों में विभाजित है, प्रत्येक अध्याय किसी विशेष वैदिक देवता एवं उनके वाहन का अनुसन्धानपरक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। समीक्षा की दृष्टि से इस ग्रन्थ का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि लेखक के कई वर्षों के कठिन परिश्रम, विभिन्न शास्त्रों के ज्ञान एवं शोधानुकूल शैली का प्रतिफल यह ग्रन्थ है। शास्त्री जी ने प्रकृत ग्रन्थ में अध्यायक्रम से वर्णित देवताओं और उनके वाहनों के सम्बन्ध में सर्वप्रथम देवताओं का वैदिक, पौराणिक तथा विभिन्न शास्त्रीय सन्दर्भों से प्रामाणिक विश्लेषण किया है जैसे कि ब्रह्मा का वर्णन करते समय मुण्डकोपनिषद् वाक्य से उनके स्वयम्भू, विश्वकर्तादि विशेषणों का स्पष्ट उल्लेख किया है। प्रत्येक देवता के पक्ष में प्रायः ऐतिहासिक प्रमाण, वैदिक प्रमाण, संस्कृत साहित्य प्रमाण, पुरातत्त्वीय प्रमाण, पौराणिक प्रमाण आदि का सन्दर्भगत प्रतिपादन द्रष्टव्य है।

प्रकृत ग्रन्थ के प्रथम अध्याय में ब्रह्मा एवं सरस्वती का विभिन्न प्रमाणों के साथ स्वरूप प्रतिपादन है साथ ही सप्रमाण छायाचित्र भी सन्नद्ध है। अध्याय के अन्त में ब्रह्मा एवं सरस्वती के वाहन हंस का उल्लेख है जहाँ हंस को व्यावहारिक अथवा भौतिक रूप में प्रस्तुत न करके अपितु आलंकारिक एवं संकेतात्मक रूप में प्रस्तुत किया है। द्वितीय अध्याय में इन्द्र एवं शची का ऐतिहासिक, वैदिक, साहित्यिक एवं पुरातात्त्विक स्वरूप वर्णित है तथा अध्याय के अन्त में इन्द्र के वाहन का सप्रमाणतः उल्लेख है। तृतीय अध्याय में भगवान् विष्णु एवं लक्ष्मी का चित्रसहित स्वरूप उल्लिखित है तथा विष्णु के वाहन गरूड़ एवं लक्ष्मी के वाहन उल्लू का सवारी के रूप में नहीं अपितु व्यावहारिक जीवन में संकेत के रूप में प्रतिपादन प्राप्त किया गया है। भगवान् विष्णु क्षीरसागर में शेषनाग पर विश्राम करते हैं एवं उनका वाहन गरूड़ भी वहीं रहता है,

ISSN 2395-3055

UGC - CARE LISTED

ISSN: 0974 - 8946

अनुसन्धान-प्रकाशन-विभागीया त्रैमासिकी शोध-पत्रिका

शोध-प्रभा

(A Refereed & Peer-Reviewed Quarterly Research Journal)

46 वर्षे चतुर्थोऽङ्कः (अक्टूबर-दिसम्बर) 2021 ई.

प्रधानसम्पादकः
प्रो. मुरलीमनोहरपाठकः
कुलपतिः

सम्पादकः
प्रो. शिवशङ्करमिश्रः

सहसम्पादकः
डॉ. ज्ञानधरपाठकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)
नवदेहली-16

UGC-CARE Listed ISSN : 0974-8946

अनुसन्धान-प्रकाशन-विभागीया त्रैमासिकी शोध-पत्रिका

शोध-प्रभा

(A REFERRED & PEER-REVIEWED QUARTERLY RESEARCH JOURNAL)

46 वर्षे चतुर्थोऽङ्कः (अक्टूबर-दिसम्बर) 2021 ई.

प्रधानसम्पादकः
प्रो. मुरलीमनोहरपाठकः
कुलपतिः

सम्पादकः
प्रो. शिवशङ्करमिश्रः
शोधविभागाध्यक्षः

सहसम्पादकः
डॉ. ज्ञानधरपाठकः
शोधसहायकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)
नवदेहली-110016

विषयानुक्रमः

संस्कृतविभागः

1. **पाणिन्यष्टाध्यायीसूत्रपदेषु प्रयुक्तषष्ठीसप्तम्यर्थनिरूपणम्** 1-12
   – श्रीशिवशंकरकरणः

2. **कालिदाससाहित्ये वैदिकजीवनदर्शनम्** 13-20
   – डॉ. व्रजेन्द्रकुमारसिंहदेवः

3. **व्याकरणन्यायमीमांसामते जातिव्यक्तिवादः** 21-25
   – डॉ. मोहिनी आर्या – श्रीब्रह्मानन्दमिश्र

4. **भारतीयदर्शनेषु शैक्षिकविमर्शः** 26-32
   – डॉ. कुलदीपसिंहः

5. **आयुर्वेदे साङ्ख्यीयप्रकृतितत्त्वसमीक्षणम्** 33-37
   – श्रीविजयगुप्ता

हिन्दी विभाग

6. **वाक्काव्यं न तु शब्दार्थौ** 38-44
   – प्रो. रहसबिहारी द्विवेदी

7. **संस्कृत साहित्य में प्रेमतत्त्व** 45-82
   – प्रो. रमाकान्त पाण्डेय

8. **श्रीमद्भगवद्गीता के कर्मयोग की प्रासंगिकता** 83-95
   – डॉ. सुषमा देवी

English Section

9. **Nritya Rachana-s by Composers of Kerala** 96-104
   - Prof. Deepti Omchery Bhalla

✦✦✦

आयुर्वेदे साङ्ख्यीयप्रकृतितत्त्वसमीक्षणम्

श्रीविजयगुप्ता*

यल्लीलया जायते च वर्द्धते क्षीयते जगत्।
तन्नौमि पुरुषं नित्यं प्रकृतिञ्च मुहुर्मुहुः॥

भारतीयज्ञानपरम्परायाम् अष्टादशविद्यायामायुर्वेदः स्वस्थस्य स्वास्थ्यसंरक्षणार्थम् आतुरस्य विकारप्रशमनार्थं प्रसिद्धः। पुराकालतः आयुर्वेदस्य प्राचीनपरम्परा मानव-पशु-पक्ष्यादीनां दिव्यौषधिमाध्यमेन विभिन्नेभ्यो रोगेभ्यः संरक्षणं करोतीति सर्वेऽभिज्ञाः। संस्कृतवाङ्मये नैके ग्रन्थाः विलिखिताः आयुर्वेदाचार्यैः स्वानुभवैः। तत्रैव विभिन्नेषु प्रसङ्गेषु दार्शनिकसिद्धान्तानामपि विवेचनं दरिदृश्यते। आयुर्वेदग्रन्थेषु साङ्ख्यदर्शनीयाः प्रकृतेरपि वर्णनं प्राप्यते। सुश्रुतसंहितायाः शरीरस्थाने साङ्ख्यीयपञ्चविंशतितत्त्वानां विशदनिरूपणं विद्यते। अतः साङ्ख्यदर्शनीयायाः प्रकृतेः किं स्वरूपमस्ति आयुर्वेदे? विषयममुमधिकृत्यैव लिखितमिदं शोधपत्रम्।

आयुर्वेदः पञ्चविंशतितत्त्वैः विनिर्मितस्य मानवशरीरस्य रोगात् संरक्षार्थं वर्धनार्थं च वर्णनं करोति। आयुर्वेदे मानवशरीरनिर्माणे प्रयुक्तस्यात्यावश्यकाङ्गस्य प्रकृतितत्त्वस्य स्पष्टतया वर्णनं परिदृश्यते। सुश्रुतसंहितायामव्यक्तप्रकृतिः साङ्ख्यवत् वर्ण्यते।[1] सा प्रकृतिः सर्वेषां कार्याणां कारणमस्ति[2] तथा च सा अकारणमस्ति।[3] तस्यास्स्वरूपं सत्त्वरजस्तमोरूपं वर्तते। चरकसंहितायां स्वभाव एव प्रकृतिरुच्यते इति।[4] सुश्रुतसंहितायामपि स्वभाव एव प्रकृतिः कथ्यते।[5] तत्र प्रकृतिः सात्म्यनाम्नाप्यभिधीयते।[6] चरकसंहितायां

---

* सहायकाचार्यः, सर्वदर्शनविभागः, श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली-16

1. सर्वभूतानां कारणमकारणं सत्त्वरजस्तमोलक्षणमष्टरूपमखिलस्य जगतः संभवहेतुरव्यक्तं नाम। सु०शा० 1.3
2. 'एवम्भूतमव्यक्तं मूलप्रकृत्यपरपर्यायं सर्वभूतानां कारणमिति पिण्डार्थः।' डल्हणव्याख्यायाम्, सु०शा० 1.3
3. 'न विद्यते कारणं यस्य तदकारणम्' डल्हणव्याख्यायाम्, सु०शा० 1.3
4. 'तत्र प्रकृतिरुच्यते स्वभावः यः' च०सू० 1.21
5. 'स्वभावं प्रकृतिं' सु०शा० 4.61
6. 'प्रकृतिसात्म्य' सु०चि०24.34, 'प्रकृतिसात्म्य' सु०सू०35.46

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com
ISSN 2395-3055
जून, 2022 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)
संस्कृत भवन, ए–10, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली – 110067

वर्ष : 9 अंक : 1 (97)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः
Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

स्वामित्व	:	अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)
अध्यक्ष	:	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन
प्रधान सम्पादक (पदेन)	:	रमाकान्त गोस्वामी
सम्पादक	:	प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
शोधपत्रपरीक्षक मण्डल	:	प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली) प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर) प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली) प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी) प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)
व्यवस्थापक मण्डल	:	आर. एन. वत्स 'एडवोकेट'
ग्राफिक डिजाईनर	:	विश्वकर्मा शर्मा
संपादकीय कार्यालय	:	संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67
संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक	:	रमाकान्त गोस्वामी, महासचिव, अ.भा.सं. सा.स.
दूरभाष	:	011-41552221, मो.- 9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

नियम एवं निर्देश :-

1. संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए "संस्कृत-रत्नाकरः" जिम्मेदार नहीं है।
2. प्रकाशितशोधसामग्री लेखकस्यास्ति अतः लेखस्य मौलिकतादिविषये सम्पूर्णं दायित्वं लेखकस्य भविष्यति न तु सम्पादकस्य न वा प्रकाशकस्य।

विषय सूची

03 | वैदिकवाङ्मये मन्त्रोच्चारण-विधिविमर्शः
– विद्यावाचस्पतिः डॉ. सुन्दरनारायणझाः

08 | भारतीयज्ञानपरम्परायां.....
– अभिषेककुमार-उपाध्यायः

सम्पादकीयम्

ज्ञानं तृतीयं मनुजस्य नेत्रम्

"उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम् वर्षं तद् भारतं नाम" इति परिचयेण प्रतिष्ठितमस्माकमिदं भारतं पुरा "विश्वगुरुः" आसीदति साहंकारं सगौरवञ्च वदन्ति आस्माकं ऐतिह्यविदो भारतीयाः। विश्वगुरुत्वन्नाम निखिलेऽस्मिन् विश्वे विद्यमानानां मानवानां पथप्रदर्शकत्वम् परमार्थबोधकत्वञ्च। तच्च पथप्रदर्शनं नहि ज्ञानमन्तरा सम्भवति। ज्ञानमेव प्रकाशयति जीवनस्य विविधान् पक्षान्। ज्ञानमेव प्रापयति अस्माकं प्रत्यक्षं परोक्षञ्च लक्ष्यम्। अतः सकलमनोरथलाभे ज्ञानमेव परमं साधनं प्रसिद्ध्यति। एतेनेदं वक्तुं शक्यते यद् भारतस्य विश्वगुरुत्वे मूलं नियामकं ज्ञानमेव। भारतीय-ऋषीणां महर्षिणां च ज्ञानवैभादेवायं देशः विश्वगुरुपदवीं प्राप्तवान्। अस्माकं शास्त्रेषु ज्ञानं ब्रह्माऽपरपर्यायरूपेण वर्णितम्। श्रुतिरपि वदति-

- सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म
- सच्चिदानन्दं ब्रह्म।

सृष्टेः चराचरप्राणिषु श्रेष्ठतायाः विनियामकं ज्ञानमेव। अत एव ये विशुद्धमतिमन्तो जनास्ते सर्वत्र वन्द्यन्ते? "स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते" इति वचनं बहुधा सुप्रसिद्धम्। अस्माकं शास्त्राणि सुभाषितानि च ज्ञानस्य महत्त्वं पदे-पदे एवं ब्रुवन्ति-

- विद्ययाऽमृतमश्नुते।
- विद्यया विन्दतेऽमृतम्।
- सा विद्या या विमुक्तये।
- ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः।
- ज्ञानं तृतीयं मनुजस्य नेत्रम्।
- तमसो मा ज्योतिर्गमय।
- साहित्यसंगीतकलाविहीनः साक्षात्पशुः।
- येषां न विद्या न तपो न दानं ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
- ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति ।
- विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनम्,
  विद्या भोगकरी यशः सुखकारी विद्या गुरूणां गुरुः।
  विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परा देवता,
  विद्या राजसु पूज्यते नहि धनं विद्याविहीनः पशुः ।।

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः, शोधविभागाध्यक्षः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

12 | भारतीय राजनीतिशास्त्र के सप्ताङ्गो की आधुनिक काल में उपदेयता – विजय गुप्ता

17 | प्रभावीनिर्णयक्षमतायाः अवधारणा
– मनीषमोदगिलः

21 | पूराणेषु शिव-तत्त्वम्
– डॉ. संदीपभट्टः

भारतीय राजनीतिशास्त्र के सप्ताङ्गों की आधुनिक काल में उपादेयता

विजय गुप्ता
सहायकाचार्य, सर्वदर्शन विभाग,
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

भारत में प्राचीन काल से ही समाज–निर्माण में राजनीति का अमूल योगदान रहा है। राजनीति किसी भी राष्ट्र की वह सम्पदा है जो व्यक्ति के प्रत्येक व्यवहार पर प्रभाव डालती है व प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का आवश्यक अङ्ग बनती है। भारतीय परम्परा प्राचीन काल से ही विभिन्न राजनीतिक विधि–विधानों से आपूर्त रही है। राजनीति हमेशा से धर्म की संवाहिका रही है उसके विचार 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्या'[1] वाली रही है। वनों–जंगलों में रहते हुए जब किसी समूह ने सुचारू रूप से सबकुछ प्रतिष्ठित करने को सोचा, सभी को किसी नियम–कानून में रखने का प्रयत्न किया वहीं से राजनीति की शुरुआत होती है। समाज के निर्माण एवं संगठन में राजनीति का विशेष योगदान रहा है। प्राक्काल में किसी राष्ट्र के निर्माण, विकास एवं विस्तार के मूल में सप्ताङ्गों का वर्णन मिलता है जो निम्न हैं– स्वामी, अमात्य, राष्ट्र, दुर्ग, कोश, बल एवं सुहृद् (मित्र)। इन सप्ताङ्गों[2] की वर्तमान काल में भी समाज के निर्माण, विकास एवं विस्तार में महद् भूमिका देखने को मिलती है।

भारतीय राजनीति शास्त्रों में सप्ताङ्गों को किसी राज्य के समृद्धि एवं विकास का हेतु बताया गया है। किसी भी

ISSN 2395-3055

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com
ISSN 2395-3055
जुलाई–अगस्त, 2021 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

//स्वतन्त्रतायाः अमृतमहोत्सववर्षाधारितः //

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)
संस्कृत भवन, ए-10, कुतुब संस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली - 110067

वर्ष : 7 अंक : 12 (84)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः
Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

स्वामित्व	:	अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)
अध्यक्ष	:	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन
प्रधान सम्पादक (पदेन)	:	रमाकान्त गोस्वामी
सम्पादक	:	प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
शोधपत्रपरीक्षक मण्डल	:	प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली) प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर) प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली) प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी) प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)
व्यवस्थापक मण्डल	:	आर. एन. वत्स 'एडवोकेट'
ग्राफिक डिजाईनर	:	विश्वकर्मा शर्मा
संपादकीय कार्यालय	:	संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसिफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67
संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक	:	रमाकान्त गोस्वामी, महासचिव, अ.भा.स. सा.स.
दूरभाषा	:	011-41552221, मो.- 9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए "संस्कृत-रत्नाकर": जिम्मेदार नहीं है।

विषय सूची

03। स्वतन्त्रता संग्राम में संस्कृत साहित्य की भूमिका
– प्रो. रमाकान्त पाण्डेय

13। जीवन का आधार जल
– डॉ. हरीश चन्द्र

16। पाण्डुलिपिसम्पादने पाठालोचनसिद्धान्तविश्लेषणम्
– विजयगुप्ता

सम्पादकीयम्

सर्वं परवशं दुःखं सर्वं स्वात्मवशं सुखम्। प्रतिकूलवेदनीयं दुःखमनुकूलवेदनीयं च सुखमित्यनयोः सुखदुःखयोः मूले स्वतन्त्रतायाः स्वरूपमेवास्माभिरनुभूयते। स्वतन्त्रो नाम स्वस्य तन्त्रम्, स्वस्य शासनमिति। समग्रेऽस्मिञ्जगति जीवन्तो यावन्तोऽपि जीवाः ते सर्वेऽपि निसर्गतः स्वातन्त्र्यं वाञ्छन्ति। स्वतन्त्रतायै सकलं यत्नमाचरन्ति, परञ्च एतावतापि येषां जीवने कृतेऽपि प्रयत्ने स्वतन्त्रता न समायाति तेषां जीवनं वस्तुतः कारागारनिभमेव प्रतिभाति। यत्र मानवाः स्वेच्छया, स्वविचारेण, स्वचिन्तनेन, स्वबुद्ध्या, स्वस्वभावेन, स्वान्तःप्रेरणया च कार्यसम्पादने प्रतिबन्धिताः भवन्ति तेषां जीवने सुखस्य कल्पना सर्वथा स्वप्नायते। तदुक्तं महाकविना गोस्वामिना तुलसीदासेन- **पराधीन सपनेहु सुख नाहीं।** पराधीनतायाः व्यथा न केवलं मानवैरनुभूयतेऽपितु पशवः पक्षिणोऽपि दुःखिनो दृश्यन्ते। कश्मिश्चिद् स्तम्भे रज्जुभिर्बद्धाः पशवोऽपि रज्जुबन्धानादुन्मोचनाय व्याकुलाः विलोक्यन्ते। पिंजरे परिवृताः शुक-पिक-चटकाः पक्षिणोऽपि प्राप्तेऽपि सर्वविधान्नजलादिसंसाधने अवसरं सम्प्राप्य स्वच्छन्दे गगने सद्यः उड्डीयन्ते। एतेन सिद्ध्यति स्वतन्त्रतायाः हार्दमिति। पराधीनजीवनस्य दुःखं प्रतिपादयता केनचित् संस्कृतकविना अत्यन्तं सुचारु चित्रणं कृतम्-

वासः काञ्चनपिञ्जरे नृपवरैः नित्यं तनोमार्जनम्,
भक्ष्यं स्वादुरसालदाडिमफलं पेयं सुधाभं पयः।
वाच्यं संसदि रामनाम सततं धीरस्य कीरस्य भो,
हा हा हन्त! तथापि जन्मविटपे क्रोडे मनो धावति॥

अप्पाशास्त्री राशिबड़ेकरमहोदयानां **'पञ्जरबद्धः शुकः'** इत्यभिधाना कविता परतन्त्रभारतस्य यथार्थवेदनामभिव्यनक्ति-

शुक सुवर्णमयस्तव पञ्जरो न खलु पञ्जर एष विभाव्यताम्।
मुखमिदं ननु हेमशलाकिका रदनशालिमृतेरतिभीषणम् ॥

मित्राणि! स्वतन्त्रतावर्षस्यामृतमहोत्सवावसरे प्रकृतेऽस्मिन्ङ्के 'स्वतन्त्रतासंग्रामे संस्कृतसाहित्यस्य भूमिका' इति विषये प्रो. रमाकान्त-पाण्डेयमहोदयानामत्यन्तं गभीरं ज्ञानगर्भकं शोधपत्रं प्रकाश्यते। सर्वैः संस्कृतज्ञैरवश्यं पठनीयमिदं शोधपत्रमथ च स्वतन्त्राकर्मणि समर्पितान् संस्कृतविदुषः प्रति सश्रद्धं कार्तज्ञ्यमाविष्करणीयमिति विनिवेदये।

॥ जयतु भारतम् ॥ जयतु संस्कृतम् ॥

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः, शोधविभागाध्यक्षः,
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

19। Veda and Global Peace
– शुभदीप घोष

22। दारिद्र्यं परमं दुःखम्
– डॉ. कमलेश मिश्र

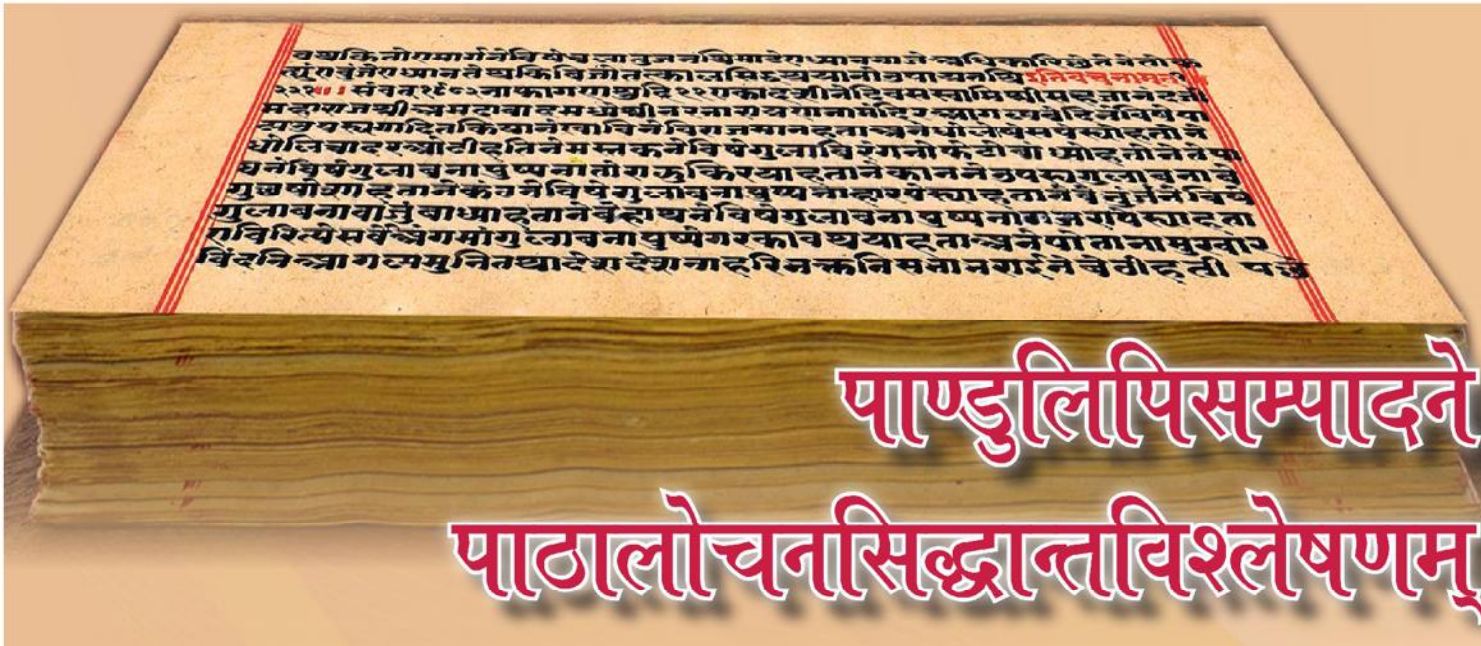

पाण्डुलिपिसम्पादने पाठालोचनसिद्धान्तविश्लेषणम्

विजयगुप्ता,
सहायकाचार्यः, सर्वदर्शनविभागः
श्रीला.ब.शा.रा.सं.विश्वविद्यालयः, नवदेहली

सद्ज्ञानमध्यात्मज्ञानमेव भारतीयसंस्कृतेः विश्व-प्रसिद्धेर्मूलहेतुरिति। भारते प्राचीनकालादेव ऋषयः महर्षयश्च स्वज्ञानात् भारतभूमेः सिञ्चनं कृतवन्तः। न हि तत्र तेषां स्वार्थभावना अथवा कस्यापि जीवस्य क्षतिविषयिणी चर्चासीत् अपितु ते सर्वदा परोपकारार्थमेव स्वस्य जीवनं बौद्धिकविचारं वा प्रयुञ्जवन्तः। प्राचीनकाले तु श्रुतिपरम्परया तेषां ज्ञानानां विस्तारो जातः, किन्तु कालान्तरे श्रुतिपरम्परा क्षीणा जाता तदन्तरं तज्ज्ञानं तत्रैव अवरुद्धम् अतः तस्य ज्ञानस्य लिपिकरणमथवा लेखनमावश्यकं प्रतीतमभवत् तथा च अभवदपि। सैव पाण्डुलिपीति नाम्ना अभिधीयते। तत्र पाण्डुलिप्यामनेकानि प्राचीनज्ञानानि सन्ति तेषामुद्घाटनमावश्यकम्। तत्कृते एव ज्ञानपरम्परायां पाठालोचनसिद्धान्तस्य उत्पत्तिरभवत्। पाठालोचनेन कस्यापि पाण्डुलिपेः शास्त्रस्य वा शाब्दिकार्थिक-विषयिणीविचारविमर्शो भवति तथा च तत्र अत्युचितपाठस्य निर्धारणं विनिश्चयं वा भवति। तत्र याऽपि प्रक्षिप्तशब्दाः अप्रकरणकशब्दाः वा भवन्ति तेषां निष्कासनं तथा उचितपाठस्य सन्निवेशो एव पाठालोचनम्।

पाठालोचनस्य अपेक्षितत्वम्

मूललेखकस्य मूलभावनायाः उद्घाटनमेव पाठालोचनस्य मूलप्रयोजनम्। इदानीं पाण्डुलिपिमधिकृत्य नैकाः शोधच्छात्राः शोधकार्यं सम्पादयन्ति। ते प्रायः स्वस्य Ph.D. इत्यस्य उपाधि कृते इदं कार्यं स्वीकुर्वन्ति। तेषां मूलभावना भवति यद्यथाशीघ्रमेव स्वशोधप्रबन्धं पूर्णं कृत्वा उपाधिप्राप्तिरेव। किन्तु पाठालोचनस्य कृते उत्साहेन सह धैर्यस्य महती आवश्यकता भवति। न एकस्मिन्नेव दिवसे पाठालोचनं भवितुं शक्नोति। पाठालोचनेन यस्याः पाण्डुलिपेः सम्पादनं भवति सा विश्वप्रसिद्धा भवति। प्रसिद्धमेव रामायणस्य बडौदाविश्वविद्यालयतः प्रकाशितं संस्करणं विश्वविश्रुतमस्ति तथा च समेषां विदुषां शीर्षशिरोमणिरस्ति। तथैव महाभारतस्य भण्डारकर-ओरिएण्टलशोधसंस्थानतः प्रकाशितसंस्करणमपि। यदि कस्यापि पाण्डुलिपेः सम्यक्तया पाठालोचनं भवति तर्हि कालान्तरे स ग्रन्थो विश्वविश्रुतो भविष्यत्येव। अतः पाठालोचनस्य आवश्यकता पाण्डुलिपेः सम्पादने तथा च लेखकस्य मूलभावनोद्घाटने प्रासङ्गिको दृश्यते।

पाठालोचने सहायकावयवानि

पाठालोचनं न हि स्वतन्त्रं तत्र अनेकानि अवयवानि समवायानि सन्ति तदनन्तरं पाठालोचनस्य प्रक्रिया पूर्णा भवति। पाठालोचनं न केवलं ग्रन्थसम्पादनं तत्र एकस्य भाषायाः अथवा एकस्य विषयस्य ज्ञानं नापेक्षितमपितु अनेकानां विषयाणां सामान्यज्ञानमपेक्षितमेव। ते के? तर्हि तेषां संक्षेपेण परिचयं दीयते-

१. **शोधप्रक्रियाविज्ञानम्**- शोधप्रक्रियाविज्ञानं सर्वप्रथमो घटको यस्मात् पाठालोचनार्थं पाण्डुलिपेः अन्वेषणं भवति। पाण्डुलिपेः अन्वेषणमपि एकं विज्ञानमस्ति। भारतेऽनेकाः पाण्डुलिपिग्रन्थागाराः सन्ति। तस्मिन् अनेकविषयस्य पाण्डुलिपयस्सन्ति। पुनः कथं तत्र अन्वेषणं करणीयम्। तस्मात्कृते एव शोधप्रक्रियाविज्ञानस्य आवश्यकता प्रतीयते। तथैव पाण्डुलिपिसम्पादने प्रयुक्तानां विभिन्नप्रविधिनां ग्रहणमपि शोधविज्ञानस्य महतीकार्यम्।

२. **लिपिविज्ञानम्**- भारते अनेकासु लिपिसु पाण्डुलिपयः प्राप्यन्ते। यथा-देवनागरी-शारदा-नागरी-नेवारी-मौडी-गुरुमुखी-तमिल-तेलगु-कन्नड-ग्रन्थ-मलयालमादयस्सन्ति। तेषां ज्ञानं विना पाण्डुलिपिसम्पादनमथवा पाठालोचनं न सम्भवति।

३. **भाषाविज्ञानम्**- पाठालोचनार्थं भाषायाः ज्ञानमावश्यकं तथा च भाषाविज्ञानस्यापि आवश्यकता वर्तते। नैकासु पाण्डुलिपिसु भिन्न-भिन्नदेशीयप्रान्तीयभाषायाः प्रयोगो दृश्यते, पुनः तेषां भाषाणां सम्यक्तया ज्ञानमपेक्ष्यते। पाण्डुलिप्यां यदि कुत्रापि त्रुटिः दृश्यते तर्हि तस्य समाधानं भाषाविज्ञानेन माध्यमेनैव भवति।

४. **ज्योतिषज्ञानम्**- पाण्डुलिपेः रचनाकालज्ञानं विना तस्य मूलभावनायाः उद्घाटनं न भवितुमर्हति। पाण्डुलिपेः रचनाकाले लेखकस्य बुद्धौ किं चिन्तनमासीत् तथा च तस्मिन् काले समाजे

ISSN 2395-3055

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com
ISSN 2395-3055
मई, 2022 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)
संस्कृत भवन, ए-10, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली - 110067

वर्ष : 8 अंक : 12 (96)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः
Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

स्वामित्व	:	अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)
अध्यक्ष	:	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन
प्रधान सम्पादक (पदेन)	:	रमाकान्त गोस्वामी
सम्पादक	:	प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
शोधपत्रपरीक्षक मण्डल	:	प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली) प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर) प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली) प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी) प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)
व्यवस्थापक मण्डल	:	आर. एन. वत्स 'एडवोकेट'
ग्राफिक डिजाईनर	:	विश्वकर्मा शर्मा
संपादकीय कार्यालय	:	संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67
संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक	:	रमाकान्त गोस्वामी, महासचिव, अ.भा.सं. सा.स.
दूरभाषा	:	011-41552221, मो.- 9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

नियम एवं निर्देश :-

1. संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए "संस्कृत-रत्नाकरः" जिम्मेदार नहीं है।
2. प्रकाशितशोधसामग्री लेखकस्यास्ति अतः लेखस्य मौलिकतादिविषये सम्पूर्णं दायित्वं लेखकस्य भविष्यति न तु सम्पादकस्य न वा प्रकाशकस्य।

विषय सूची

03 | वैदिक वाङ्मय में पर्यावरण चेतना - प्रो. रामानुज उपाध्याय

07 | Environmental Protection: Modern Science and Technology
- Dr. Indrakant K. Singh, Shradheya R.R. Gupta

10 | पण्डितराजजगन्नाथ प्रो. राधावल्लभयोः..
- सतीश नौटियालः

सम्पादकीयम्

- संस्कृतं संस्कृतिश्चैव श्रेयसे समुपास्यताम् ।
- संस्कृतिः संस्कृताश्रिता ।

विश्वस्य समेषां राष्ट्राणां भवति काचिद् राष्ट्रगौरवभूता स्वकीया राष्ट्रभाषा, यस्यां विराजते राष्ट्रस्य माहात्म्यम्, राष्ट्रीया संस्कृतिः, राष्ट्रीया परम्परा, राष्ट्रीयचिन्तनञ्च। सर्वाण्यपि राष्ट्राणि स्वकीयया मातृभाषया नितान्तं स्निह्यन्ति। स्वभाषासम्भाषणे, स्वभाषालेखने, स्वभाषापठने-पाठने च आत्मगौरवमाकलयन्ति। किमधिकं स्वभाषासंरक्षणाय आत्मानमपि समर्पयन्ति, परञ्चस्माकं देशे शासकानां नास्ति तादृशी मतिः, न वा भारतीयानां यूनां तादृक् भाषाप्रेम। केवलमर्थलाभाय यतन्ते तदर्थं कापि भाषा भवेत् कापि विद्या भवेत्, किमपि साधनं भवेत् किमपि वा आचरणं भवेत् सर्वमौदार्येणोररीकुर्वन्ति। वस्तुतः विश्वेऽस्मिन् विकसितानि यानि खलु राष्ट्राणि तानि स्वकीयं साहित्यवैभवम्, स्वकीयं ज्ञानविज्ञानम्, स्वकीये संस्कृतिपरम्परे च स्वभाषया प्रकाशयन्ति। जर्मनदेशे जर्मनभाषया, फ्रांसदेशे फ्रेञ्चभाषया, जापानदेशे जैपनीजभाषया, चीनदेशे चीनीभाषया एवमेव अन्येष्वपि देशेषु स्वभाषया एव व्याख्यायते समग्रं तकनीकिज्ञानविज्ञानम्। अत्र भारते न तथा, कियद्दौर्भाग्यमस्माकम्? समासां भाषाणां जननीभूता, विश्ववैर्वन्दिता सती अस्माकं संस्कृतभाषा अस्माभिः नाद्रियते, नास्त्यस्माकं संस्कृतं प्रति समवेतश्रद्धा न वा हिन्दीभाषां प्रत्यैकमत्यम्, अपितु तत्तक्षेत्रीयाः तमिल-तेलगु-कन्नड-मलयालम-उडिया-बंग-असमिया-मणिपुरी प्रभृति भाषा एवाद्रियन्ते येन न भवति अखण्डराष्ट्रैक्यबोधः। अतोऽपेक्ष्यते यदस्माकं देशस्यापि काचित् सर्वस्वीकार्या भाषा भवेद्यया अस्माकं समग्रं प्राचीनतममाधुनिकञ्च भारतीयं ज्ञानविज्ञानं व्याख्यायितं भवेत्। अस्याः भावनायाः सम्पूर्तिः संस्कृतभाषया एव सम्भवति यतः संस्कृतं समासां भारतीयभाषाणां जननी, अत्र निहितमनन्तं ज्ञानसम्पदतः संस्कृतस्य राष्ट्रभाषारूपेण संस्थापनं यदि भवेत्तर्हि विश्वे भाषादृष्ट्या भारतस्य महत्त्वमभिवर्द्धेत्।

भाषासु मधुरा मुख्या, दिव्या गीर्वाणभारती ।
तस्यां हि काव्यं मधुरं, तस्मादपि सुभाषितम् ॥

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः, शोधविभागाध्यक्षः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

13 | जैनधर्म में ज्योतिषीय....
- विजय गुप्ता

17 | संस्कृतवाङ्मय में नैतिक अभ्युदय - शुभदीप घोष

20 | संस्कृत वाङ्मय में निहित...
- अंकित भट्ट एवं प्रो. सुरेंद्र कुमार

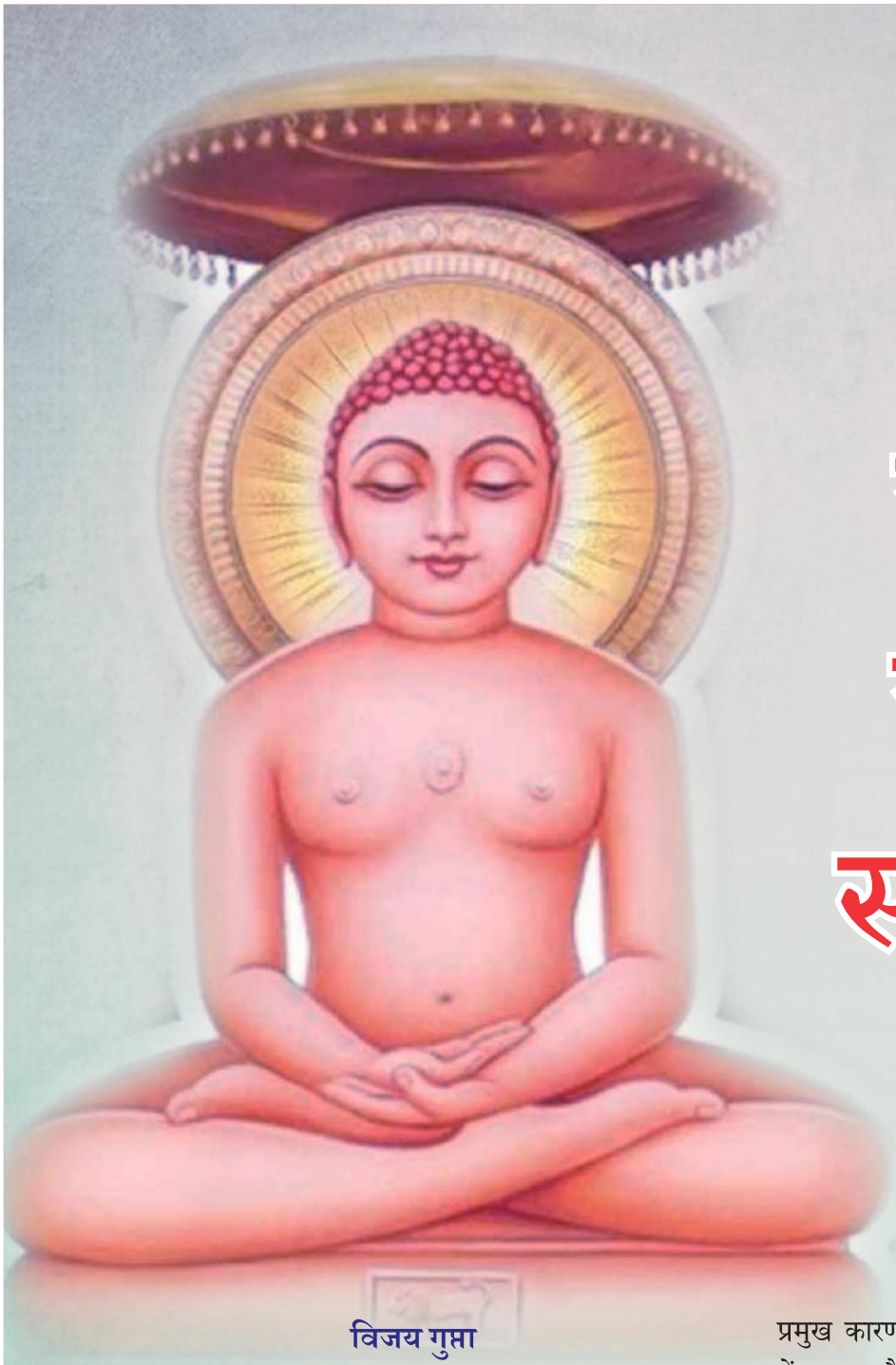

जैनधर्म में ज्योतिषीय साहित्य एवं सिद्धान्त

विजय गुप्ता
सहायकाचार्य, सर्वदर्शन विभाग,
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

ज्योतिषशास्त्र जगत् के शुभ एवं अशुभ कृत्यों का वर्णन करता है।[१] **"विनैतदखिलं श्रौतस्मार्तकर्म न सिध्यति"**[२] कथन से ज्योतिषशास्त्र की महत्ता का प्रतिपादन सिद्ध होता है। ज्योति या ज्योतिस् शब्द का अर्थ है- प्रकाश, जो अपनी आभा से सम्पूर्ण लोकमण्डल के शुभाशुभ कर्मों को प्रकाशित कर दे, वही ज्योतिषशास्त्र है। ज्योतिषशास्त्र भारतीयों का मौलिक विज्ञानशास्त्र है। यज्ञों के अनुष्ठान, उसके आरम्भ और समापन पर अनुकूल ग्रह देखा जाता था। आकाशमण्डल में अनेक तारा या ग्रह हैं जिन पर आधारित यह ज्योतिषशास्त्र है।

"समय एव करोति बलाबलम्"[३] अर्थात् बलाबल का प्रमुख कारण समय ही है इस प्रकार की अवधारणा जनसामान्य में व्याप्त है। **'कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविशेच्छतं समाः'**[४] इस उपनिषद्वाक्य के अनुसार जगत् के प्रत्येक मनुष्य को सर्वदैव कर्म में निरत रहना चाहिए। किन्तु कर्म पर विश्वास करने वाला मनुष्य भी कभी-न-कभी भाग्य की तरफ अवश्य मुखरित होता है। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार मनुष्य का भाग्य उसके जन्मकुण्डली पर निर्भर करता है। जन्मकुण्डली के आधार पर ही किसी व्यक्तिविशेष के भूत-भविष्य-वर्तमान का निर्देश प्राप्त होता है। **"ज्योतिषां सूर्यादि ग्रहाणां बोधकं शास्त्रम्"** व्युत्पत्ति से सूर्यादि ग्रह और काल का बोध कराने वाले शास्त्र को जोतिषशास्त्र कहते हैं[५], ज्ञात होता है।

भारतीय ज्ञान परम्परा में जैन धर्म एवं दर्शन को एक विशेष स्थान प्राप्त है। जैनधर्म में जहाँ भारत की संस्कृतियों

RNI-UTTHIN/2013/51284

ISSN-0975-8739

हिन्दी अर्द्धवार्षिक

जयराम संदेश
Jairam Sandesh

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत विशेषज्ञ समिति द्वारा मूल्यांकित शोध-पत्रिका

A Peer Reviewed, Refereed Research Journal

दशावतार विशेषांक

₹ 50/-

दिसम्बर 2021 | वर्ष 09 | अंक 02

धर्म-दर्शन-अध्यात्म एवं सांस्कृतिक संदर्भ पर आधृत

हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

RNI-UTTHIN/2013/51284

हिन्दी अर्द्धवार्षिक ISSN-[illegible]

जयराम संदेश
Jairam Sandesh

धर्म–दर्शन–अध्यात्म एवं सांस्कृतिक संदर्भ पर आधृत
A Peer Reviewed, Refereed Research Journal

जुलाई–दिसम्बर
2021 ई.
विक्रम सम्वत् 2078

वर्ष : 09 अंक : 02

संरक्षक :
प. पू. ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी
परमाध्यक्ष : जयराम संस्थाएँ

**

परामर्शदातृ मण्डल
प्रो० वशिष्ठ त्रिपाठी (वाराणसी)
डॉ० रामभद्रदास श्रीवैष्णव (प्रयाग)
प्रो० रमेश कुमार पाण्डेय (दिल्ली)
प्रो० हरेराम त्रिपाठी (दिल्ली)
प्रो० रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर)

**

सम्पादक
डॉ. शिवशङ्कर मिश्र
मोबाइल नं. 9456328499
ई-मेल : shivshankarmishra74@gmail.com

**

शोधपत्र परीक्षक मण्डल
प्रो० जे.के. गोदियाल (पौड़ी)
प्रो० राम बहादुर शुक्ल (जम्मू)
डॉ० रामनारायण द्विवेदी (दिल्ली)
डॉ० दिनेश कुमार गर्ग (वाराणसी)
डॉ० रामविनय सिंह (देहरादून)
डॉ० रामरतन खण्डेलवाल (हरिद्वार)

**

प्रूफ संशोधक
मनमुदित नारायण शुक्ल

**

प्रकाशक :
श्री जयराम आश्रम
भीमगोड़ा, हरिद्वार – 249401 (उत्तराखण्ड)
मोबाइल नं. 01334-260251
ई-मेल : jairamsandesh@gmail.com

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी द्वारा
भार्गव प्रिंटर्स, निकट ललतारी पुल, जनपद-हरिद्वार,
उत्तराखण्ड से मुद्रित एवं
श्रीजयराम आश्रम भीमगोड़ा, जनपद हरिद्वार से प्रकाशित
सम्पादक : डॉ. शिवशंकर मिश्र

अनुक्रम

आशीर्वचन

सम्पादकीय

वेदों व श्रीमद्भागवत में अवतारवाद............जगद् स्वामी विदेह जी महाराज..............1

अवतार, पुराण और पर्यावरण....................डॉ० सुनीता कुमारी...........................4

अवतारवाद : आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक........डॉ० रज्जन कुमार.............................8

अवतारतत्त्व मीमांसा...............................डॉ० अनिलानन्द..............................13

दशावतारों का वैज्ञानिक अनुशीलन............डॉ० गीता शुक्ला.............................16

भागवतीय दशावतार की वैदिक पृष्ठभूमि.......डॉ० मिनति रथ..............................18

मत्स्यावतार..मनमुदित नारायण शुक्ल...................23

मत्स्यावतार का आधुनिक भारतीय............विजय गुप्ता.................................26

दशावतारों में कूर्मावतार..........................डॉ० आशुतोष गुप्त /तनुजा................29

दशावतारों में वराह का वैशिष्ट्य...............प्रो० कमला चौहान/नन्दिनी कोटियाल...33

दशावतारों में नृसिंहावतार........................डॉ० आशुतोष गुप्त /राजमोहन...........38

पुराणों में वामन अवतार और उनके.............डॉ० तारादत्त अवस्थी.......................46

डॉ0 सुधीकान्त भारद्वाज विरचित...............डॉ० आशुतोष गुप्त /बबली...............48

भवभूति के राम–लोकनायक या ....प्रो० रामबहादुर शुक्ल.......................53

रविषेण कृत पद्मपुराण में ....प्रो० कमला चौहान/अंजली................57

रामावतार...डॉ० शिवेश कुमार पाण्डेय.................62

राम जनम के हेतु अनेका.........................डॉ० स्वामी जयेन्द्रानन्द 65

भगवान् कृष्ण के जन्म की कथा................सन्त श्री रामचन्द्र डोंगरे....................68

श्रीमद्भागवत में कृष्णतत्त्व.......................डॉ० द्वारिका प्रसाद नौटियाल.............74

लीलापुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्ण................डॉ० अरुणिमा..............................77

भगवान् विष्णु का श्रीकृष्णावतार...............निराली.......................................83

महात्मा बुद्ध एवं उसकी शिक्षाओं...............डॉ० हरीश कुमार.........................86

सतयुग प्रवर्तको भगवान्कल्कि :................महाबीर शुक्ल............................90

कलियुग और कल्कि अवतार.....................पवन चन्द्र..................................94

अवतारों में जीवन मूल्य..........................डॉ० संजीव प्रसाद भट्ट....................98

प्राचीन धर्म–दर्शन : अवतारवाद................डॉ० धनञ्जय शर्मा 102

दशावतार विवेचन..................................डॉ० कीर्तिवल्लभ शक्टा..................108

अवतार : एक दृष्टि..................................प्रो० शालिमा तबस्सुम/शोभा आर्या.......110

भारतमाता ब्रूते में वर्णित दशावतार............डॉ० लज्जा पन्त (भट्ट)..................116

जयराम आश्रम द्वारा संचालित विविध सेवाप्रकल्प

पत्रिका ऑनलाईन उपलब्ध - jairamashram.org/publication jairamsandeshpatrika

❒ पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त चिन्तन से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं।

❒ पत्रिका के सम्बन्ध में किसी भी विवाद के निस्तारण का न्याय क्षेत्र केवल हरिद्वार होगा।

❒ पत्रिका के सम्पादक एवं परामर्श-परीक्षक मण्डल के समस्त सदस्य पूर्णतया अवैतनिक हैं।

मत्स्यावतार का आधुनिक भारतीय लोकजीवन में वैशिष्ट्य

विजय गुप्ता
सहायक आचार्य- सर्वदर्शन विभाग
श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली-16

भारतीय सभ्यता में भगवान् विष्णु के दशावतार का लोकजीवन में सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व है। अनादि काल से चतुर्मुखी ब्रह्मा सृष्टि की उत्पत्ति करते हैं भगवान् विष्णु पालन करते हैं और देवादिदेव शङ्कर सृष्टि का संहार करते हैं। सृष्टि का नियम है कि सत्य-असत्य, धर्म-अधर्म दोनों इस लोक में समान धरातल पर प्रसूजित होते हैं। किसी काल एवं देश में सत्य-धर्म का आवेश होता है तो किसी काल में असत्य-अधर्म का बोलबाला रहता है। चूँकि भगवान् विष्णु ही इस जगत् के पालनकर्ता हैं। अतः जब-जब असत्य-अधर्मादि का प्रभाव अधिक हो जाता है, मानवादि में दुराचार-कदाचारादि का उन्मेष हो जाता है लोभ-लालच-अहिंसादि का प्राबल्य हो जाता है तब-तब भगवान् विष्णु तदनुकूल आंशिक-पूर्ण अवतार लेकर लोक में धर्म का सन्तुलन करते हैं। जो सर्वत्र व्याप्त है उसके अवतार लेने का भी एक प्रयोजन है। चूँकि ईश्वर सूक्ष्मरूप में सर्वत्र व्याप्त हैं किन्तु धर्माधर्म का सन्तुलन करने हेतु भौतिक रूप में अनेक रूपों में अवतरित होते हैं।

पौराणिक एवं ऐतिहासिक सन्दर्भ के अनुसार भगवान् विष्णु ने सर्वप्रथम मत्स्य के रूप में अवतार ग्रहण किया था। महाभारत के कथानक में विष्णु के कुल 6 अवतारों का उल्लेख प्राप्त होता है। अग्निपुराण में विष्णु 10 रूपों में अवतरित हुए हैं[1] तथा भागवत पुराण के अनुसार भगवान् विष्णु ने कुल 22 रूपों में अवतार लेकर लोककल्याण किया था। अग्निपुराण में स्वयं भगवान् ने अवतार के प्रयोजन को बताया है- '**अवतारक्रिया दुष्टनष्टयै सत्यपालनाय हि**'।[2] मत्स्यपुराण के कथानुसार वैवस्वत नाम के मनु[3] सत्यनिष्ठापूर्वक प्रजासेवा एवं राजकाज करने के पश्चात् अपने उत्तराधिकारी पुत्र को सम्पूर्ण राज्य सौंपकर स्वयं कर्मफल से मुक्ति हेतु तपस्या में निरत हो गये। मलय देश में आसक्तिशून्य, सुखदुःखसमभाव होकर तपस्या करने से मनु ने उत्तम योग को प्राप्त कर लिया था।[4] इसी प्रकार से लगभग 110 हजार साल तक तपस्या करने पर चतुरानन ब्रह्मा स्वयं प्रकट हुए एवं वरदान माँगने को कहा।[5] तब वैवस्वत मनु ने इस प्रकार से वर मांगा-

भूतग्रामस्य सर्वस्य स्थावरस्य चरस्य च।
भवेयं रक्षणायालं प्रलये समुपस्थिते॥[6]

अग्निपुराण की कथा के अनुसार वैवस्वत मनु अत्यन्त शान्त, सरल एवं योगी चित्तवृत्ति वाले राजा थे। उन्होंने यथासमय अपने पुत्र को राजकाज सौंपकर स्वयं मुक्ति के कर्म में निरत हो गये। एक दिन कृतमाला नामक नदी के जल से तर्पण क्रिया सम्पन्न कर रहे थे तभी उनकी अञ्जुली में एक छोटी मछली आ गयी। मनु ने बड़ी मछलियों एवं अन्य जन्तुओं से उसके भय को भांपकर उसे उठाकर अपने कमण्डलु अथवा जलपात्र में रख लिया।[7] आश्रम में जाकर किसी अन्य कार्य में संलग्न हो जाने के बाद उन्होंने मछली की आवाज सुनी, पास जाकर देखे तो मछली का आकार विस्तृत हो गया था उन्होंने उसे उठाकर कलश में रख दिया। पुनः कुछ पश्चात् मछली ने आवाज दिया कि मुझे कोई विस्तृत स्थान दो। अतः मनु ने उसे सरोवर में डाल दिया, कुछ समय पश्चात् मछली का आकार विस्तृत होता गया और उसने सम्पूर्ण सरोवर के जल को व्याप्त कर लिया। अब मनु के मन में भय उत्पन्न होने लगा था। उन्होंने उसे उठाकर अब समुद्र में डाल दिया, लेकिन ये क्या ? क्षण मात्र में ही मछली ने सम्पूर्ण समुद्र को व्याप्त कर लिया।[8] अब वैवस्वत मनु ने भयभीत होकर करबद्धपूर्वक पूछा कि आप कौन हैं ? निश्चय ही आप असुरेतर भगवान् विष्णु हैं। हे जगत् के पालनकर्ता! हे जनार्दन! आपको शत शत नमन है। आपके इस माया का प्रयोजन क्या है ?[9]

तब मत्स्यावतारी भगवान् विष्णु ने कहा कि हे वैवस्वत! मैं सत्य एवं धर्म की रक्षा के लिए अवतरित हुआ

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

ISSN 2395-3055

सितम्बर, 2022 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)
संस्कृत भवन, ए–10, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली – 110067

वर्ष : 9 अंक : 4 (100)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः
Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

स्वामित्व	:	अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)
अध्यक्ष	:	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन
प्रधान सम्पादक (पदेन)	:	रमाकान्त गोस्वामी
सम्पादक	:	प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
शोधपत्रपरीक्षक मण्डल	:	प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली) प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर) प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली) प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी) प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)
व्यवस्थापक मण्डल	:	आर. एन. वत्स 'एडवोकेट'
ग्राफिक डिजाईनर	:	विश्वकर्मा शर्मा
संपादकीय कार्यालय	:	संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67
संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक	:	रमाकान्त गोस्वामी, महासचिव, अ.भा.सं. सा.स.
दूरभाष	:	011-41552221, मो.- 9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

नियम एवं निर्देश :-

1. संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए "संस्कृत-रत्नाकरः" जिम्मेदार नहीं है।
2. प्रकाशितशोधसामग्री लेखकस्यास्ति अतः लेखस्य मौलिकतादिविषये सम्पूर्णं दायित्वं लेखकस्य भविष्यति न तु सम्पादकस्य न वा प्रकाशकस्य।

विषय सूची

03 | शिक्षायां नेतृत्ववरीयता - मनीषमोदगिलः

07 | वैशेषिकदर्शने मनसः...- आर.एस.मोनालिसा कविः

10 | शङ्करः शङ्करः साक्षात् - डॉ.विजयगुप्ता

13 | हठयोग का इतिहास एवं परम्परा - डॉ. रमेशकुमार

19 | संस्कृत की साम्प्रतिकता...- महेश कुमार द्विवेदी

सम्पादकीयम्

विश्वबन्धुत्वभावनया परिपूर्णा अस्माकं संस्कृतभाषा भारतयीयस्वतन्त्रतान्दोलने महत्तमं योगदानं विहितम्। संस्कृतसाहित्यकारैः अनेकैः विद्वद्भिः कविभिश्च पारतन्त्र्यविरोधे स्वतन्त्रतायाः समर्थने च विविधाः कविताः विरचिताः। संस्कृतसाहित्यस्य अध्ययनद्वारैव वयं स्वदेशस्य भौगोलिकं परिचयं प्राप्नुमः-

- **उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।**
  वर्षं तद् भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः॥
- **आयामस्तु कुमारीतो गंगायाः प्रवहावधि।** इत्यादि वचनैः भारतस्य परिधिं विज्ञाय सत्प्रेरिताः भारतीयाः राष्ट्रभक्ताः "संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्" इति मन्त्रमुररीकुर्वन्तः देशस्य स्वतन्त्रतान्दोलने सोत्साहं कूर्दितवन्तः।

मान्याः! इदं तथ्यमस्माभिः अश्वयं चिन्तनीयं यद् यदा-यदा भारतवर्षे शासकवर्गैः संस्कृतस्य सम्माननं विहितं, संसकृतस्य महत्त्वं वैभवं चाङ्गीकृतं तदा-तदा तस्य राज्यविशेषस्य महती उन्नतिः जाता, परञ्च यदा संस्कृतस्य उपेक्षा कृता तदा तस्याः राज्यसत्तायाः पतनमपि सुनिश्चितमभवत् उदाहरणार्थं मौर्यसाम्राज्यं विलोकयन्तु यदा मौर्यसाम्राज्ये संस्कृतस्य प्रतिष्ठा आसीत् तदा तस्य राज्यस्य अपूर्वा उन्नतिरासीत् परञ्च यदा मौर्यशासकेन संस्कृतस्य तिरस्कारः कृतः तदा तस्य राज्यस्यपि पतनं सञ्जातम्। अतः इदम् अवश्यं ध्यातव्यं यत् संस्कृते किमप्यनितरवैशिष्ट्यं विद्यत एव।

महात्मागाँधिनोऽपि संस्कृतस्य ज्ञानवैभवेन नितान्तं प्रेरिताः आसन्। स्वतन्त्रतायाः आन्दोलनकाले धर्मस्य यत्स्वरूपं महात्मागाँधिना प्रकल्पितं तस्यापि प्रेरणा संस्कृतादेव समागता-

धर्मो यो बाधते धर्मो न स धर्मः कुधर्मकः।

तेषां जीवनस्य मूलमन्त्रमासीत् **"सत्यमेव जयते"** **'अहिंसा परमो धर्मः'** इति।

आजादचन्द्रशेखरः संस्कृतस्य एव छात्रः आसीत्। संस्कृतं पठन् तस्य मनसि राष्ट्रभावः समुद्भूतः स्वतत्रतान्दोलने शेखरस्य विहितयोगदानस्य पराक्रमगीतमिदानीमपि भारतीयाः सगौरवं प्रत्यहं गयन्ति।

पराधीनभारतमातुः स्वतन्त्रतायै क्रान्तिकारिणां देशभक्तानां कृते इयं भाषा अत्यन्तं प्रेरणाप्रदा आसीत्। "वन्दे मातरम्" मातृभूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः, जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी इत्येते राष्ट्रभावाः अनयैव भाषया प्रबोधिताः। महोदय! आंग्लशासकानां उद्दण्डतायाः समुन्मूलनाय, भारतीयजनेषु उत्साहप्रबर्धनाय अपि अनेकानि सूक्तिवचनानि समुपलभ्यन्ते। किमधिकं यदि कश्चन शठः दुष्टः अस्माकमहितमाचरति तर्हि तेन सह तथा एव नीतिः परिपालनीया इत्युपदिशति पदे-पदे संस्कृतसाहित्यम्

- **शठे शाठ्यं समाचरेत् ।**
- **ब्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं**
  भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः । (किरातार्जुनीये)

शिवराजविजयग्रन्थेऽपि अम्बिकादत्तव्यासः राष्ट्रभक्तान् प्रबोधयन् एवमुक्तवान्-

कार्यं वा साधयेयं देहं वा पातयेयम्।

स्वतन्त्रतान्दोलने संस्कृतस्य अनेके कवयः लेखकाः गायकाश्चः संस्कृतगीतिं काव्यञ्च विरचितवन्तः गीतवन्तश्च। पण्डिता क्षमारावमहाभागया, गंगाप्रसाद उपाध्यायेन, हरिप्रसादद्विवेदिना, अप्पाशास्त्रीराशिवडेकरमहाभगेन, हरदाससिद्धान्तवागीशमहोदयेन अन्यैरपि कविभिः काव्यं विरच्य देशभक्ताः क्रान्तिकारिण सततं प्रबोधिताः जागरिताश्च।

अप्पाशास्त्रीराशिवडेकरमहोदयानां इयं कविता तदानीं क्रान्तिकारिणां मध्ये अत्यन्तं सुप्रसिद्धा लोकप्रिया चासीत्-

शुकसुवर्णमयस्तव पञ्जरो, न खलु पञ्जर एष विभाव्यताम्।
मुखमिदं ननु हेमशलाकिका, रदनशालिमतेरतिभीषणम् ॥

एवमेव केनचित् कविना परतन्त्रतायाः पीडां क्लेशाञ्च प्रदर्शयन् शुकव्याजेन समेऽयि भारतीयाः स्वन्त्रतायै सम्प्रेरिताः -

वासः काञ्चनपिञ्जरे नृपवरैः नित्यं तनो मार्जनम्,
भक्ष्यं स्वादुरसालदाडिमफलं पेयं सुधाभं पयः ।
वाच्यं संसदि रामनाम सततं धीरस्य कीरस्य भो,
हा हा हन्त! तथापि जन्मविटपे क्रोडं मनो धावति ॥

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः, शोधविभागाध्यक्षः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

शङ्करः शङ्करः साक्षात्

डॉ.विजय गुप्ता
सहायकाचार्य, सर्वदर्शन विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली-१६

विश्वदर्पण पर पवित्र एवं अध्यात्म की भूमि के रूप में प्रसिद्ध भारतवर्ष को अनेक महान् विभूतियों ने अपने जन्म एवं कर्म से समय-समय पर गौरवान्वित किया है। धरा पर बढ़ते पाप एवं अधर्म के नाश हेतु भगवान् विष्णु ने स्वयं १० अवतार लिये, यह सर्वविदित है। ये सभी अवतार भारतभूमि पर हुए जिससे इसकी महत्ता और बढ़ जाती है। अष्टादश विद्याओं की भूमि भारतवर्ष में अनेकशः सम्प्रदाय, अनेकशः विचारधाराएँ व्युत्पन्न हुईं। अनेकशः विचारधाराओं में कुछ भारतीय जनमानस को अत्यन्त रास आईं। 'मुण्डे मुण्डे मतिर्भिन्ना'[1] इस उक्ति के अनुसार सभी तो नहीं लेकिन कुछ-कुछेक लोगों ने अवश्य उनका अनुगमन किया। दर्शन ज्ञान परम्परा में ऐसे ही एक महान् विभूति का आविर्भाव हुआ जिन्होंने सामाजिक, व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक स्तर पर स्वतन्त्रतः विचार करने तथा प्रयोग में लाने का प्रक्रम प्रारम्भ किया।

केरल प्रान्त के नम्बूदरी ब्राह्मण कुटुम्ब शिवगुरु एवं विशिष्टा के पुत्र के रूप में शङ्कराचार्य का जन्म हुआ। पति-पत्नी दोनों अत्यन्त ही धार्मिक एवं तपोनिष्ठ थे। सुखपूर्वक जीवन के आधे भाग बीत चुके थे लेकिन अभी तक पुत्रप्राप्ति नहीं हुई थी। दोनों ने अत्यन्त तल्लीनतापूर्वक शिव की आराधना की। भगवान् शिव उनके समक्ष ब्राह्मण रूप में आकर एक सामान्य पुत्र अथवा विशिष्ट पुत्र की प्राप्ति हेतु प्रश्न उपस्थापित किये, ऐसे में उनका एकमात्र यहीं उत्तर था कि मुझे सर्वगुण सम्पन्न पुत्र प्रदान करें। भगवान् शिव के आशीर्वाद से वैशाख शुक्ल पञ्चमी तिथि को शङ्कराचार्य का जन्म हुआ। शङ्कर अत्यन्त प्रतिभा सम्पन्न बालक थे। उनका विलक्षण स्वभाव उनके बालपन में ही दृष्टिगोचर हो रहा था। उन्होंने अत्यन्त अल्पकाल में ही मातृभाषा का अभ्यास कर लिया। उपनयन संस्कारोपरान्त वे गुरु के समीप जाकर शास्त्रों का अध्ययन शुरु कर दिये और अत्यन्त अल्पकाल में गूढ़ एवं अत्यन्त क्लिष्ट शास्त्रों के यथार्थ को सरलतापूर्वक जान लिया। जैसे-जैसे आयुवृद्धि हुई वैसे-वैसे उनकी प्रतिभा का परिष्कार होता गया। उन्होंने अत्यन्त कम आयु में ब्रह्मसूत्रभाष्य, उपनिषद्भाष्यादि ग्रन्थों का लेखन कर दिया था। एक श्लोक प्रसिद्ध भी है-

अष्टवर्षे चतुर्वेदी द्वादशे सर्वशास्त्रवित्।
षोडशे कृतवान् भाष्यं द्वात्रिंशे मुनिरभ्यगात्॥

भगवान् शङ्कराचार्य के लिए 'शङ्करः शङ्करः साक्षात्' उक्ति अत्यन्त प्रसिद्ध है। शङ्कराचार्य की जीवनी पर शङ्करदिग्विजय (माधवाचार्य विरचित), शङ्करविजयविलासः (शङ्कर देशिकेन्द्र), शङ्कर विजय (चिद्विलास विरचित), शङ्कर विजय (व्यासगिरि विरचित), शङ्कर विजय (सदानन्द विरचित), शङ्कर अभ्युदय (राजचूड़ामणि दीक्षित विरचित), शङ्कराचार्य अवतारकथा (आनन्दतीर्थ), प्राचीन शङ्कर विजय (मूकशङ्कर विरचित), शङ्करविलासचम्पू (जगन्नाथविरचित), शङ्कराभ्युदयकाव्य (रामकृष्ण विरचित) आदि ग्रन्थ प्राप्त होते हैं। किंवदन्ती है कि एकबार शङ्कराचार्य एवं व्यास में शास्त्रार्थ हो रहा था, किसी अन्य श्रेष्ठ विद्वान् के प्राप्त न होने पर उन्होंने अपने शिष्य को निर्णायक रूप में स्थापित किया। दीर्घकाल तक पक्ष-प्रतिपक्षपूर्वक शास्त्रार्थ चल रहा होता है, उधर शिष्य सोचता है कि मैं किस समस्या में फस गया? जब स्वयं भगवान् शिव ही शङ्कराचार्य के रूप में अवतरित हुए हैं, व्यास जी भी भगवान् विष्णु

ISSN 2395-3055

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

ISSN 2395-3055

अक्टूबर, 2022 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मलेन (रजि०)

संस्कृत भवन, ए–10, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली – 110067

वर्ष : 9 अंक : 5 (101)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः
Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

स्वामित्व	:	अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)
अध्यक्ष	:	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन
प्रधान सम्पादक (पदेन)	:	रमाकान्त गोस्वामी
सम्पादक	:	प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
शोधपत्रपरीक्षक मण्डल	:	प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली) प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर) प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली) प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी) प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)
व्यवस्थापक मण्डल	:	आर. एन. वत्स 'एडवोकेट'
ग्राफिक डिजाईनर	:	विश्वकर्मा शर्मा
संपादकीय कार्यालय	:	संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67
संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक	:	रमाकान्त गोस्वामी, महासचिव, अ.भा.सं. सा.स.
दूरभाष	:	011-41552221, मो.- 9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

नियम एवं निर्देश :-

1. संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए "संस्कृत-रत्नाकरः" जिम्मेदार नहीं है।
2. प्रकाशितशोधसामग्री लेखकस्यास्ति अतः लेखस्य मौलिकतादिविषये सम्पूर्णं दायित्वं लेखकस्य भविष्यति न तु सम्पादकस्य न वा प्रकाशकस्य।

विषय-सूची

03 | काव्येषु स्तोत्रमहिमा..... - डॉ. रामरतनखण्डेलवालः मनमुदितनारायण शुक्लः

08 | अजन्तपदसन्दर्भे सुप्रत्यय..... - विकासचन्द्रबलूनी

12 | राघवीयमहाकव्यस्यात्मतत्त्वविवेकः - सतानन्द शर्मा

15 | वराह पुराण का वैज्ञानिक..... - प्रो. कमला चौहान नन्दिनी कोटियाल

(कवर सहित पृष्ठ संख्या 24)

सम्पादकीयम्

भारतीयज्ञानपरम्परायां वास्तुशास्त्रस्य विद्यते अत्यन्तं महत्त्वम्। मन्दिरप्रासादभवनादीनां योजनानुमाननिर्माणे इयं विद्या प्रभवति। ललितकलासु इयम् अतीवविशिष्टा। इयं कला प्राचीनकालात् मानवजीवनेन सह सम्बद्धा वर्तते। वास्तुनः सामान्यार्थः- वसन्ति प्राणिनो यत्र (शब्दकल्पद्रुमः) अर्थात् यत्र जीवाः निवसन्ति, तत् वास्तु। पौराणिककथानुसारं देवलोके सर्वविधप्रासादमन्दिरोद्यानानां निर्माणं भगवता विश्वकर्मणा एव विधीयते। वस्तुतः स एव देवशिल्पी अस्ति। इयं वास्तुकला गृहादिनिर्माणे सम्भवति विघ्ननाशिनी। अस्मिन् शास्त्रे प्रासादादीनां निर्माणप्रक्रिया सुनिबद्धा वर्तते। यथा-

वास्तु सङ्क्षेपतो वक्ष्ये गृहादौ विघ्ननाशनम्।
ईशानकोणादारभ्य ह्येकाशीतिपदे यजेत्॥
ईशाने च शिरःपादौ नैर्ऋतेऽग्न्यनिले करौ।
आवासवासवेश्मादौ पुरे ग्रामे बणिक्पथे॥
प्रासादारामदुर्गेषु देवालयमठेषु च।
द्वात्रिंशत्तु सुरान् बाह्ये तदन्तश्च त्रयोदश॥

गरुडपुराणम्, आचारकाण्डः ४६.१,२,३

भारतं प्राचीनकालादेव धर्मस्य श्रध्दायाश्च आश्रयो वर्तते। अनयोः भौतिकपक्षप्रतीकं देवानां मन्दिरनिर्माणम्। प्रत्येकं मन्दिरस्य निर्माणं वास्तुकलानुसारं भवति। इदानीं पर्यन्तं ५०० वर्षाणि, ७०० वर्षाणि, १००० वर्षाणि यावत् मन्दिराणाम् संस्थितेः तेषां प्रामाण्यस्य च मुख्यं कारणम् मन्दिरनिर्माणे वास्तुशास्त्रानुसरणं विद्यते। प्राचीनकालादेव बहुविधमन्दिराणि सम्प्राप्यन्ते तत्र च पूजापद्धतिः यथानियमं प्रवर्तते। निष्कर्षतः वक्तुं शक्यते यत् भगवतः मन्दिराणि निर्माय पुष्पफलादिभिः समर्चनेन वन्दनेन च जागतिकदुःखानि विनश्य पुण्यफलं भुञ्जते जनाः।

यः कारयेन्मन्दिरं केशवस्य पुण्याँल्लोकान् स जयेच्छाश्वतान् वै।
दत्त्वा वासान् पुष्पफलाभिपन्नान् भोगान् भुङ्क्ते कामतः श्लाघनीयम्॥

वामनपुराणम्, ९५.३७

तथैव मन्दिरनिर्माणेन मानवस्य सप्तानां कुलानाम् उद्धारोऽपि भवति। यथोक्तम्-

आसप्तमं पितृकुलं तथा मातृकुलं नरः।
तारयेदात्मना सार्द्धं विष्णोर्मन्दिरकारकः॥

अनेन प्रकारेण भारतीयसंस्कृतौ प्राचीनकालादेव मन्दिरनिर्माणस्य माहात्म्यं वर्तते। मन्दिरनिर्माणे वास्तुशास्त्रनिर्देशानामपि पालनं कृतम् वर्तते, अतः वास्तुकलायां न केवलं भवनप्रासादादीनां निर्माणस्य विचारोऽपितु मन्दिरनिर्माणस्य विषयेऽपि विस्तरेण विमर्शो दरीदृश्यते।

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः, शोधविभागाध्यक्षः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

19 | भगवत्पाद शङ्कराचार्य की दृष्टि में भक्ति : शास्त्रीय समीक्षा - डॉ. विजय गुप्ता

22 | अथ योगासनम् - डॉ. रमेश कुमार

भगवत्पाद शङ्कराचार्य की दृष्टि में भक्ति : शास्त्रीय समीक्षा

डॉ. विजय गुप्ता
सहायक आचार्य, सर्वदर्शन विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली-१६

भारत सम्पूर्ण देशों में अपनी संस्कृति के माहात्म्य एवं विभिन्नता में एकता के लिए जाना जाता है। भारतीय संस्कृति द्वारा धर्मपूर्ण आचरण, सरलता, सहजता आदि वैशिष्ट्यपरक गुण भारतीयों के जनमानस में कूट-कूट कर भरी है। भारत अध्यात्म का केन्द्रबिन्दु कहा जाता है क्योंकि सभी भारतीय किसी न किसी रूप में अवश्य ही अपनी सभ्यता एवं संस्कृति से जुड़े हुए हैं। यही कारण है कि भारत पुण्यभूमि पर देवता भी अवतरण चाहते हैं। देवत्व की प्राप्ति हेतु मनुष्य अथाह परिश्रम करता है लेकिन यह सांसारिक जगत् के पाश को छोड़ नहीं पाता, पुनः संस्कारों के कारणवश आवागमन के चक्र में फंसता है एवं तात्कालिक जीवन व्यर्थ कर देता है। इसीलिए भारतीय आध्यात्मिक चिन्तकों एवं विद्वानों द्वारा समस्त जनमानस के लिए ईश्वरप्राप्ति एवं सांसारिक जगत् से मुक्ति के लिए समस्त साधकों के लिए ज्ञानमार्ग, कर्ममार्ग एवं भक्तिमार्ग का साधन बताया गया है। भक्ति को अन्तःकरण के शुद्धि का उपचार माना है। भक्ति को परिभाषित करते हुए शास्त्रों में कहा गया है कि जब साधक सभी भौतिक उपाधियों से मुक्त हो जाता है, जिससे परम तत्त्व की साधना करते-करते अत्यन्तचित्त निर्मल हो जाता है, उस हृषीकेश के नाम, काम एवं पाद का सेवन करना ही भक्ति है। यथा-

सर्वोपाधिविनिर्मुक्तं तत्परत्वेन निर्मलम्।
हृषीकेण हृषीकेशसेवनं भक्तिरुच्यते॥[1]

भारतीय तत्त्व विचारकों के अनुसार उपर्युक्त मार्गत्रय में सर्वोत्तम ज्ञानमार्ग ही है लेकिन सभी ज्ञानमार्ग को प्राप्त नहीं कर सकते क्योंकि ज्ञानमार्ग अत्यन्त कठिन है। कर्ममार्ग सभी के लिए सरल एवं साध्य नहीं है। भक्तिमार्ग वह पथ है जिसके लिए कोई विशेष कृत्य करने की आवश्यकता नहीं होती, बाह्य जगत् का कोई भी अवलम्बन नहीं लेना होता, केवल वैयक्तिक आधार पर अपने ईष्ट के प्रति श्रद्धा, आस्था, विश्वास मात्र से ही नित्य शुभकर्मों को करते हुए ईश्वरप्राप्ति हो जाती है, जैसे- वैष्णवभक्त रामानुजाचार्य, शिवभक्त रावण, कृष्णभक्त मीराबाई आदि अनेकों साधकों ने भक्तिमार्ग अपनाया था और आज भी यह परम्परा चली आ रही है।

वस्तुतः भक्ति है क्या? इसका स्वरूप कैसा है? आदि बातों को हम आदिशङ्कराचार्य के मत में समझने का प्रयास करते हैं। भक्ति को हम श्रद्धामूलक अवधारण के रूप में जानते हैं। श्रद्धा आस्तिक्य बुद्धि का परिणाम है।[2] भक्ति का वास्तविक अर्थ यह है कि कर्मों को करते हुए भी ईश्वर के प्रति विशेष अनुराग एवं कामना से रहित आस्था या श्रद्धा। ईश्वर के प्रति अत्यधिक अनुराग को भक्ति कहते हैं- **ईश्वरे परानुरक्तिः**[3]। कालिदास ने पूज्यों, श्रेष्ठों के प्रति आदर भावना को भक्ति कहा है- **पूज्येष्वनुरागो भक्तिः**[4] । भक्ति ९ प्रकार की बतायी है जिसे नवधाभक्ति के नाम से भी जाना जाता है यथा-

श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनम्।
अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम्॥[5]

1. **श्रवण भक्ति-** ईश्वर की उपासनादि से सम्बद्ध श्लोक-मन्त्र एवं कीर्तनादि को श्रद्धापूर्वक सुनना ही श्रवण भक्ति है। इस लोक में परीक्षित की श्रवण भक्ति अत्यन्त प्रसिद्ध है।
2. **कीर्तन भक्ति-** ईश्वर के गुणों, उनकी महिमा आदि का आनन्द एवं उत्साह पूर्वक गान करना कीर्तन भक्ति है। शुकदेव की कीर्तन भक्ति अत्यन्त प्रसिद्ध है।
3. **स्मरण भक्ति-** ईश्वर के स्वरूप, गुण, महिमा आदि का स्मरण करना स्मरण भक्ति है। भक्त प्रह्लाद की स्मरण भक्ति लोकलोकान्तर में विदित है।
4. **पादसेवन भक्ति-** ईश्वर के श्री चरणों में निरन्तर ध्यानमग्न रहना पादसेवन भक्ति है। देवी लक्ष्मी की पादसेवन भक्ति प्रसिद्ध है।
5. **अर्चन भक्ति-** पवित्र पुष्पजलादि पूजा सामग्री एवं मन्त्रादि का गान करते हुए ईश्वर की पूजा करना अर्चन भक्ति है। पृथुराजा की अर्चन भक्ति प्रसिद्ध है।
6. **वन्दन भक्ति-** विभिन्न स्तोत्रों द्वारा ईश्वर के दिव्य स्वरूप का गान करते हुए नित्य-निरन्तर उनकी भक्ति में मग्न रहना वन्दन भक्ति है। राजा अक्रूर की वन्दन भक्ति इस लोक में अत्यन्त प्रसिद्ध है।

RNI-UTTHIN/2013/51284

ISSN-0975-8739

हिन्दी अर्द्धवार्षिक

जयराम संदेश
Jairam Sandesh

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत विशेषज्ञ समिति द्वारा मूल्यांकित शोध-पत्रिका

A Peer Reviewed, Refereed Research Journal

सप्तऋषि विशेषाङ्क

दिसम्बर 2022 | वर्ष 10 | अंक 02

धर्म-दर्शन-अध्यात्म एवं सांस्कृतिक संदर्भ पर आधृत

हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

RNI-UTTHIN/2013/51284

हिन्दी अर्द्धवार्षिक ISSN-0975-8739

जयराम संदेश
Jairam Sandesh

धर्म-दर्शन-अध्यात्म एवं सांस्कृतिक संदर्भ पर आधृत
A Peer Reviewed, Refereed Research Journal

जुलाई–दिसम्बर
2022 ई.
विक्रम सम्वत् 2079

वर्ष : 10 अंक : 02

संरक्षक :
प. पू. ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी
परमाध्यक्ष : जयराम संस्थाएँ

**

परामर्शदातृ मण्डल
प्रो० वशिष्ठ त्रिपाठी (वाराणसी)
डॉ० रामभद्रदास श्रीवैष्णव (प्रयाग)
प्रो० रमेश कुमार पाण्डेय (दिल्ली)
प्रो० हरेराम त्रिपाठी (दिल्ली)
प्रो० रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर)

**

सम्पादक
डॉ. शिवशङ्कर मिश्र
मोबाइल नं. 9456328499
ई-मेल : shivshankarmishra74@gmail.com

**

शोधपत्र परीक्षक मण्डल
प्रो० जे.के. गोदियाल (पौड़ी)
प्रो० राम बहादुर शुक्ल (जम्मू)
डॉ० रामनारायण द्विवेदी (दिल्ली)
डॉ० दिनेश कुमार गर्ग (वाराणसी)
डॉ० रामविनय सिंह (देहरादून)
डॉ० रामरतन खण्डेलवाल (हरिद्वार)

**

प्रूफ संशोधक
मनमुदित नारायण शुक्ल

**

प्रकाशक :
श्री जयराम आश्रम
भीमगोड़ा, हरिद्वार – 249401 (उत्तराखण्ड)
मोबाइल नं. 01334-260251
ई-मेल : jairamsandesh@gmail.com

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी द्वारा
भार्गव प्रिंटर्स, निकट ललतारौ पुल, जनपद-हरिद्वार,
उत्तराखण्ड से मुद्रित एवं
श्रीजयराम आश्रम भीमगोड़ा, जनपद हरिद्वार से प्रकाशित
सम्पादक : डॉ. शिवशंकर मिश्र

वशिष्ठः काश्यपोऽथात्रिर्जमदग्निस्सगौतमः।
विश्वामित्रभरद्वाजौ सप्त सप्तर्षयोऽभवन्।।

अनुक्रम

सम्पादकीय
सप्तर्षियों में अग्रगण्य महर्षि.....डॉ० विजय गुप्ता.....1
संस्कारों के प्रतिपादक महर्षि गौतम.....राम कुमार.....5
भारतीय संस्कृति के संवाहक.....डॉ० लज्जा पन्त (भट्ट).....9
ऋषि वशिष्ठ : विशिष्ट ऋषि.....डॉ० संजीव प्रसाद भट्ट.....12
सुराष्ट्र कल्पना में योगाङ्गरूप.....महाबीर शुक्ल.....16
महर्षि वशिष्ठ एवं उनके द्वारा प्रदत्त.....तानिया डसगोत्रा.....24
योगवाशिष्ठोक्त सप्तभूमिका का.....अमितेश कुमार.....28
योगवेत्ता महर्षि वशिष्ठ प्रदत्त.....अंकित भट्ट/प्रो0 सुरेन्द्र कुमार.....32
सप्तर्षियों में भरद्वाज ऋषि : एक विमर्श.....डॉ० योगेश कुमार.....38
ऋषि भरद्वाज : श्रीरामचरितमानस.....मनमुदित नारायण शुक्ल.....40
संस्कृत वाङ्मय में वर्णित महर्षि.....अमन शर्मा.....44
विश्वामित्र के जीवन पर शाप एवं वरदान.....शोभा आर्या.....49
विश्वामित्र–नदी संवाद सूक्त का.....कु0 सपना.....54
सप्तर्षि कश्यप : एक अवलोकन.....डॉ० धनंजय शर्मा.....57
महर्षि जमदग्नि.....वैद्य पं० तनसुखराम शर्मा.....62
पुराणों में सप्तर्षि–विमर्श.....आचार्या मिनति रथ.....66
सप्तऋषि : अवधारणा एवं आस्था.....प्रो० रज्जन कुमार.....70
भारत देश को सप्तर्षियों का योगदान.....डॉ० गीता शुक्ला.....74
अत्रि ऋषि .....डॉ० तारादत्त अवस्थी.....77
वैदिक ऋषियों की महत्ता.....प्रो० रामराज उपाध्याय.....81
जयराम आश्रम द्वारा संचालित विविध सेवाप्रकल्प

पत्रिका ऑनलाईन उपलब्ध · jairamashram.org/publication jairamsandeshpatrika

- पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त चिन्तन से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं।
- पत्रिका के सम्बन्ध में किसी भी विवाद के निस्तारण का न्याय क्षेत्र केवल हरिद्वार होगा।
- पत्रिका के सम्पादक एवं परामर्श-परीक्षक मण्डल के समस्त सदस्य पूर्णतया अवैतनिक हैं।
- पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता के सम्बन्ध में सम्पूर्ण उत्तरदायित्त्व लेखक का ही है, प्रकाशक और सम्पादक का नहीं।

सप्तर्षियों में अग्रगण्य महर्षि गौतम

डॉ० विजय गुप्ता
सहायक प्रोफेसर- सर्वदर्शन विभाग
श्रीला.ब.शा.रा.सं. विश्वविद्यालय
नई दिल्ली-16

ज्ञान, धर्म एवं संस्कृति के द्वारा भारतवर्ष ने सदैव से सभी देशों एवं विचारधाराओं पर विजय पताका फहराया है। प्रत्येक देश की अपनी धर्म एवं संस्कृति होती है जो उससे अन्य देशों से विशेष बनाती है। भारतीय ज्ञान परम्परा में धर्म एवं संस्कृति का अत्यन्त महत्त्व रहा है। भारतीय संस्कृति में संख्याओं का भी अपना एक अलग महत्त्व है जैसे कि संख्या 4 चतुर्वेद, चतुर्वर्ण, चतुर्युग, चतुर्दिक्, चार आश्रम आदि। इसी प्रकार 7 संख्या सात पर्वत, सात समुद्र, सात स्वर, सात रंग, सात अश्व, सात वार, सात धातु तथा सात ऋषियों के लिए प्रसिद्ध है। जब सात संख्या ऋषियों के सम्बन्ध में आती है तो कुछ प्रमुख सात ऋषियों की कल्पना मस्तिष्क में आती है तथा शास्त्रों में उनका नाम भी प्राप्त होता है। भारतीय काल गणना में मन्वन्तर काल की एक इकाई है जो ब्रह्मा द्वारा उत्पन्न मनु के द्वारा शासित एवं रक्षित होता है। शास्त्रों में प्राप्त सन्दर्भ के अनुसार सृष्टि की कुल आयु 4320000000 वर्ष है। इस सम्पूर्ण आयु को कुल 14 मन्वन्तरों में विभाजित किया गया है प्रत्येक मन्वन्तर भिन्न-भिन्न मनुओं के द्वारा संरक्षित होता है। एक मन्वन्तर में 71 बार चारों युग सतयुग, त्रेता, द्वापर एवं कलयुग सम्पन्न होते हैं। प्रत्येक मनु के साथ प्रत्येक मन्वन्तर में सप्तर्षि भी उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार 14 मन्वन्तर में 14 मनु एवं 14 सप्तर्षि उत्पन्न होते हैं। वर्तमान मन्वन्तर के सप्तर्षियों के नाम इस प्रकार हैं- वशिष्ठ, कश्यप, अत्रि, जमदग्नि, गौतम, विश्वामित्र एवं भरद्वाज।[1] इन सभी ऋषियों में महर्षि गौतम अत्यन्त प्रसिद्ध एवं अग्रगण्य अधिष्ठित हैं।

भारतीय संस्कृति में ऋषियों की अत्यन्त उकृष्ट परम्परा रही है। कदाचित् भारतीय परम्परा को ऋषि परम्परा भी कह दिया जाता है वस्तुतः यह अतिशयोक्ति नहीं है। जो सूक्ष्म अर्थों को देखता है जानता है वह ऋषि है- पश्यति ह्यसौ सूक्ष्मानप्यर्थान्।[2] भारतीय लोक व्यवहार को ऋषियों ने ही अपनी तपश्चर्या से अत्यन्त सात्त्विक एवं बनाया। प्रत्येक मन्वन्तर में अलग-अलग सप्तर्षियों की उद्भावना विश्वकल्याण के लिए ही हुई है। उनको ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थ आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम एवं संन्यास आश्रम चारों का ज्ञान था। सप्तर्षियों ने अपने प्रत्येक व्यवहार से जनमानस को लोककल्याणपरक कार्यों को करने के लिए ही प्रेरित किया है। सप्तर्षि साक्षात् धर्मस्वरूप थे। उनका प्रत्येक कर्म इन धर्म के लक्षणों के इर्द गिर्द ही नियन्त्रित रहता था। जैसा कि भगवान् मनु ने धर्म के दस लक्षण बताये हैं-

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥[3]

महर्षि गौतम सप्तर्षियों में विशिष्ट स्थान को प्राप्त करते हैं। ये ब्रह्मा के मानस पुत्रों में से एक हैं। वैसे तो संस्कृत वाङ्मय में गौतम नाम से अनेक ऋषि, महर्षि, विद्वान् प्रसिद्ध हैं जैसे कि न्यायदर्शन के प्रणेता अक्षपाद गौतम, बौद्ध दर्शन के प्रवर्तक गौतम बुद्ध, अहिल्या के पति गौतम, गौतमीय धर्मसूत्र के लेखक आदि। सप्तर्षियों में जिनका नाम प्रसिद्ध है वे इनमें से कौन से गौतम हैं यह कह पाना कठिन है किन्तु यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है महर्षि गौतम गौतम बुद्ध से अवश्य भिन्न हैं। क्योंकि

RNI-UTTHIN/2013/51284

ISSN-0975-8739

हिन्दी अर्द्धवार्षिक

जयराम संदेश
Jairam Sandesh

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत विशेषज्ञ समिति द्वारा मूल्यांकित शोध-पत्रिका

A Peer Reviewed, Refereed Research Journal

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम विशेषाङ्क

जून 2023 | वर्ष 11 | अंक 01

₹ 50/-

धर्म-दर्शन-अध्यात्म एवं सांस्कृतिक संदर्भ पर आधृत

हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

RNI-UTTHIN/2013/51284

हिन्दी अर्द्धवार्षिक ISSN-0975-8739

जयराम संदेश
Jairam Sandesh

धर्म-दर्शन-अध्यात्म एवं सांस्कृतिक संदर्भ पर आधृत
A Peer Reviewed, Refereed Research Journal

जनवरी–जून
2023 ई.
विक्रम सम्वत् 2080

वर्ष : 11 अंक : 01

संरक्षक :
प. पू. ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी
परमाध्यक्ष : जयराम संस्थाएँ

**

परामर्शदातृ मण्डल
प्रो० वशिष्ठ त्रिपाठी (वाराणसी)
डॉ० रामभद्रदास श्रीवैष्णव (प्रयाग)
प्रो० रमेश कुमार पाण्डेय (दिल्ली)
प्रो० हरेराम त्रिपाठी (दिल्ली)
प्रो० रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर)

**

सम्पादक
डॉ. शिवशङ्कर मिश्र
मोबाइल नं. 9456328499
ई-मेल : shivshankarmishra74@gmail.com

**

शोधपत्र परीक्षक मण्डल
प्रो० जे.के. गोदियाल (पौड़ी)
प्रो० राम बहादुर शुक्ल (जम्मू)
डॉ० रामनारायण द्विवेदी (दिल्ली)
डॉ० दिनेश कुमार गर्ग (वाराणसी)
डॉ० रामविनय सिंह (देहरादून)
डॉ० रामरतन खण्डेलवाल (हरिद्वार)

**

प्रूफ संशोधक
मनमुदित नारायण शुक्ल

**

प्रकाशक :
श्री जयराम आश्रम
भीमगोड़ा, हरिद्वार – 249401 (उत्तराखण्ड)
मोबाइल नं. 01334-260251
ई-मेल : jairamsandesh@gmail.com

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी द्वारा
भार्गव प्रिंटर्स, निकट ललतारौ पुल, जनपद-हरिद्वार,
उत्तराखण्ड से मुद्रित एवं
श्रीजयराम आश्रम भीमगोड़ा, जनपद हरिद्वार से प्रकाशित
सम्पादक : डॉ. शिवशंकर मिश्र

अनुक्रम

सम्पादकीय
रामादिवत्प्रवर्तितव्यम्.....प्रो० शिवशंकर मिश्र.....1
वर्तमान परिप्रेक्ष्य में श्रीरामचरितमानस.....प्रो० संगीता मिश्रा.....6
रामायन सत कोटि अपारा.....डॉ० नीलम त्रिवेदी.....9
राम ही धर्म के विग्रह हैं.....राम कुमार/कंचन कुमारी.....12
मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम.....पं० तनसुखराम शर्मा.....16
श्रीराम का जीवनदर्शन : वाल्मीकि.....डॉ० लज्जा भट्ट.....20
श्रीरामचरितमानस में जयन्त परीक्षा.....प्रो० रामराज उपाध्याय.....25
श्रीराम की दिनचर्या.....डॉ० कीर्तिवल्लभ शक्टा.....28
रामकथा शशि किरन समाना.....डॉ० सुनीता कुमारी.....31
रामराज्य की प्रासंगिकता एवं महत्त्व.....डॉ० राहुल प्रसाद.....35
पुराणों एवं उपनिषदों में वर्णित मर्यादा.....डॉ० कमलेश शक्टा.....38
मानस में मानवीय मूल्यों के साथ.....डॉ० के०जी० दीक्षित.....40
रामकथा के संकीर्तित ग्रन्थों का परिशीलन...प्रो० रामबहादुर शुक्ल.....41
श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण श्रीरामचरित्र.....आचार्या मिनति रथ.....47
तुलसीदास के अनुसार प्रभु श्रीराम.....अमन शर्मा.....49
महाकवि योगीश्वर के राम.....प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र.....53
साहित्य तथा व्याकरण की दृष्टि.....डॉ० द्वारिका प्रसाद नौटियाल.....57
श्रीराम एक तत्त्वोपदेष्टा गुरु.....डॉ० आशुतोष गुप्त/तीजराम वर्मा.....60
मानव जीवन के आदर्श–श्रीराम.....अंकित सिंह यादव.....66
स्वामी करपात्रीजी द्वारा रचित.....आशीष शर्मा.....71
रामराज्य में संविधान की.....डॉ० अनिलानन्द.....75
राम की प्रतिज्ञा–रामायण के विशेष.....शोभा आर्या.....80
वाल्मीकि रामायण और उत्तरपुराण.....कु० पुष्पा.....83
सास्त्र सुचिंतित पुनि–पुनि देखिअ.....प्रियांजुल ओझा.....87
रामराज्य : गाँधी जी का दृष्टिकोण.....डॉ० धनंजय शर्मा.....92
भासकृत नाटकों के राम.....प्रो० शालिमा तबस्सुम/सपना.....96
श्रीराम की ब्रह्मरूपता.....डॉ० गीता शुक्ला.....100
भगवान् श्रीराम का सपरिकर.....मुदित कुमार पाण्डेय 'मगन दास'.....103
श्रीरामचरितमानस में तुलसी की विनम्रता.....डॉ० चन्द्रपाल शर्मा.....105
रामचरितमानस : मानवता का महाकाव्य.....डॉ० रामनारायण शर्मा.....108
अध्यात्म रामायण में अभिहित राम.....कोमल देवी.....114
श्रीरामचरितमानस में भगवद्गुणवैभव.....अंकुर नागपाल.....117
मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के व्यक्तित्व.....डॉ० विजय गुप्ता.....121
जयराम आश्रम द्वारा संचालित विविध सेवाप्रकल्प

पत्रिका ऑनलाईन उपलब्ध - jairamashram.org/publication jairamsandeshpatrika

- पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त चिन्तन से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं।
- पत्रिका के सम्बन्ध में किसी भी विवाद के निस्तारण का न्याय क्षेत्र केवल हरिद्वार होगा।
- पत्रिका के सम्पादक एवं परामर्श-परीक्षक मण्डल के समस्त सदस्य पूर्णतया अवैतनिक हैं।
- पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता के सम्बन्ध में सम्पूर्ण उत्तरदायित्व लेखक का ही है, प्रकाशक और सम्पादक का नहीं।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के व्यक्तित्व में अष्टाङ्गयोग के यम का दिग्दर्शन

डॉ० विजय गुप्ता
सहायक आचार्य-सर्वदर्शन विभाग
श्री ला.ब.शा.रा.सं. वि.वि.,
नई दिल्ली-16

भारतीय संस्कृति विश्व की सर्वाधिक प्राचीन एवं वैज्ञानिक संस्कृति है। भारतीय संस्कृति अनेकों देशों के संस्कृति-निर्माण में उपजीव्य है। अनेकों देश आज भी संस्कृति की महानता के कारण भारत को पूज्य एवं श्रेष्ठ मानते हैं। भारतीय संस्कृति अत्यन्त समृद्ध है। भारतीय संस्कृति वेदों पर आश्रित है, वेदों में प्रतिपादित सामाजिक एवं सांस्कृतिक व्यवहारों एवं नियमों के परिपालन से भारतीय संस्कृति में किसी प्रकार की विकृति द्रष्टव्य नहीं है। भारतीय संस्कृति के पोषक ग्रन्थों एवं महाकाव्यों में चित्रित चरित्र की महानता, उनकी सत्यनिष्ठता, धर्मप्रियता, कर्त्तव्यपरायणता प्रत्येक व्यक्ति को प्रेरित करने वाली है। ऋग्वेदादि में प्राप्त अग्नि, इन्द्र, विष्णु आदि सूक्तों तथा विश्वामित्र-नदी, सरमा-पणि, पुरुरवा-उर्वशी आदि संवाद सूक्तों में प्रतिपादित नैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना भारतीय संस्कृति को निरन्तर सबलता प्रदान करती है। इसी प्रकार आर्ष महाकाव्यों के नायक नायिका आदि के चरित्र अत्यन्त अनुकरणीय हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम आर्षकाव्य के महानायक हैं जिन्होंने अपने चरित्र से सम्पूर्ण धरा एवं भारतीय संस्कृति को आप्लावित किया है। भगवान् श्रीराम के चरित्र में धर्म के सभी गुण विद्यमान् हैं। भगवान् श्रीराम में मानवता के सभी गुण निहित हैं इसीलिए पुरुषोत्तम श्रीराम को 'धर्म का विग्रह' अर्थात् 'धर्म की मूर्ति' भी कहा गया है- 'एषः विग्रहवान् धर्मः'[1]। भगवान् श्रीराम का चरित्राङ्कन करने वाली रामायण कथा को एक श्लोक में निबद्ध किया गया है, जो अत्यन्त प्रसिद्ध है-

आदौ रामतपोवनादिगमनं हत्वा मृगं काञ्चनं
वैदेहीहरणं जटायुमरणं सुग्रीवसम्भाषणम्।
बालीनिग्रहणं समुद्रतरणं लङ्कापुरीदाहनं
पश्चाद्रावणकुम्भकर्णहननमेतद्धि रामायणम्॥

एकश्लोकी रामायण-राम का व्यक्तित्व असीमित है, अपरिमित है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के चरित्र को आश्रित कर महर्षि वाल्मीकि द्वारा विरचित श्रीमद्वाल्मीकि रामायण लौकिक संस्कृत वाङ्मय का प्रथम काव्य है इसीलिए इसे आदिकाव्य भी कहा जाता है। वाल्मीकि रामायण को आधार करके अब तक शताधिक-सहस्राधिक काव्य, महाकाव्य, नाटक, चम्पू आदि अनेक विधाओं में ग्रन्थ लिखे जा चुके हैं, प्रभु श्रीराम के चरित्र को आश्रित कर अब तक शताधिक अनुसन्धान हो चुके हैं किन्तु यह धारा रूकने का नाम नहीं ले रही, अद्यतन भी अनेकों अनुसन्धान कार्य किये जा रहे हैं। प्रभु श्रीराम के चरित्र में सभी ज्ञान विज्ञान समाहित हो जाते हैं। प्रभु श्रीराम के चरित्र में सभी नियम, प्रतिष्ठा आदि भी सन्निविष्ट हो जाते हैं। प्रभु श्रीराम का चरित्र अथाह समुद्र सदृश है जिसमें बार-बार मन्थन किया जाता है तथा बार-बार कुछ नवीन विचार सदृश अमृत के कुण्ड का प्रादुर्भाव हो ही जाता है। इसी प्रकार इस शोधपत्र में प्रभु श्रीराम के चरित्र में निहित अहिंसा, सत्य आदि योगदर्शन के अष्टाङ्गयोगों के प्रथम अङ्ग यम के पाँचों अङ्गों का अनुसन्धान किया जा रहा है जो आधुनिक समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए अत्यन्त प्रेरणादायी, अनुकरणीय एवं लाभप्रद होगा।

अब हम श्रीराम के चरित्र में विद्यमान् अमानवीय गुणों अर्थात् दिव्य गुणों को शिथिल करते हुए एक सामान्य मनुष्य के सदृश ही अवलोकन करते हैं। संस्कृत शास्त्रों में राम शब्द की व्युत्पत्ति करते हुए कहा गया है कि- 'रमते कणे कणे इति रामः' अर्थात् जो जगत् के प्रत्येक कण में रमण करता है वह राम है। हम यदि दर्शन की परम्परा में चिन्तन करें तो श्रीराम का व्यक्तित्व एक योगी के सदृश प्रतीत होता है जिसने चित्त का अत्यन्त नियन्त्रण करके सभी सिद्धियों एवं विभूतियों पर विजय प्राप्त कर ली है, विभूतियों पर विजय प्राप्त करने का आशय है कि उनमें अनेकों प्रकार की अलौकिक शक्तियाँ आ गयी हैं, एक सामान्य व्यक्ति के लिए तो ऐसा ही प्रतीत होगा। किन्तु पातञ्जल योगदर्शन के तृतीय पाद में निरूपित विभूतियों का

UGC - CARE LISTED

ISSN: 0974-8946

अनुसन्धान-प्रकाशन-विभागीया त्रैमासिकी शोध-पत्रिका

शोध-प्रभा

(A Refereed & Peer-Reviewed Quarterly Research Journal)

48 वर्षे द्वितीयोऽङ्कः (अप्रैल-जून) 2023 ई.

प्रधानसम्पादकः

प्रो. मुरलीमनोहरपाठकः

कुलपतिः

सम्पादकः

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः

शोधविभागाध्यक्षः

सहसम्पादकः

डॉ. ज्ञानधरपाठकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)

नवदेहली-16

UGC-CARE Listed ISSN : 0974-8946

अनुसन्धान-प्रकाशन-विभागीया त्रैमासिकी शोध-पत्रिका

शोध-प्रभा

(A REFERRED & PEER-REVIEWED QUARTERLY RESEARCH JOURNAL)

48 वर्षे द्वितीयोऽङ्कः (अप्रैल-जून) 2023 ई.

प्रधानसम्पादकः

प्रो. मुरलीमनोहरपाठकः

कुलपतिः

सम्पादकः

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः

शोधविभागाध्यक्षः

सहसम्पादकः

डॉ. ज्ञानधरपाठकः

शोधसहायकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)

नवदेहली-110016

विषयानुक्रमः

संस्कृतविभागः

1. **श्रीमद्भगवद्गीतायामात्मनियन्त्रणाभ्यासः** 1-5
   - डॉ.योगेश्वरमहान्तः
2. **आचार्योपदिष्टभक्तिरसः** 6-12
   - श्रीमनमुदितनारायणशुक्लः
3. **वेदेषु संहिताग्रन्थेषु च चिकित्सा** 13-18
   - श्रीमुकेशशर्मा
4. **श्रीमद्भागवतमहापुराणदृशा प्रतिमाभेदाः** 19-24
   - डॉ. ज्योतिप्रसादगैरोला

हिन्दी विभाग

5. **नासदीयसूक्त तथा प्रारम्भिक यूनानी दर्शन** 25-34
   - प्रो. मुरलीमनोहर पाठक
6. **शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में वैशेषिक दर्शन की उपादेयता** 35-55
   - प्रो. लीना सक्करवाल
7. **शिवसंकल्पसूक्त और न्याय-वैशेषिक का मनस्** 56-67
   - डॉ. अनीता राजपाल
8. **अर्वाचीन संस्कृत भाषा-साहित्य की गजल यात्रा** 68-81
   - डॉ. राजमंगल यादव
9. **बौद्ध जातक कथाओं में भारतीय संस्कृति का दिग्दर्शन** 82-87
   - डॉ. विजय गुप्ता

UGC–CARE Listed
अप्रैल-जून, 2023

शोधप्रभा
वर्ष : 48, द्वितीयोऽङ्कः

बौद्ध जातक कथाओं में भारतीय संस्कृति का दिग्दर्शन

- डॉ. विजय गुप्ता*

भारतीय सभ्यता में प्राचीन काल से ही कथा-श्रवण की बड़ी ही रोचक परम्परा रही है। कथाएं केवल सुनकर आनन्द लेने के लिए नहीं होती हैं अपितु उनमें किसी न किसी प्रकार का संदेश अवश्य निहित होता है। हितोपदेश, पंचतन्त्र, बृहत्कथा, वेताल पंचविंशति, कथासरित्सागर जैसे अनेक कथा साहित्य भारतीय संस्कृत साहित्य के ललाट शिरोमणि हैं। आदिग्रन्थ ऋग्वेदादि के विभिन्न सूक्तों में मानवीय चेतना को जगाने के लिए, अपने कर्त्तव्यों का धर्मपूर्वक निर्वाह करने के लिए अनेक कथाओं का दिग्दर्शन होता है जहाँ भारतीय संस्कृति कराम्लवत् दिखायी पड़ती है। ई०पू० पांचवीं शताब्दी में जन्मे महात्मा गौतम बुद्ध ने इसी परम्परा का अनुसरण करके अपने अनुयायियों एवं लोकवासियों को कथा-माध्यम से सत्कर्म की ओर प्रवृत्त किया। वस्तुतः बौद्ध कथाएं भारतीय संस्कृति की दिग्दर्शिका हैं।

भगवान् बुद्ध द्वारा किये गये सारे कथा-प्रवचन जातक कथाओं के नाम से प्रसिद्ध हैं लेकिन मान्यता ये भी है कि ये सारी कथाएं भगवान् बुद्ध के पूर्वजन्म से सम्बन्धित हैं। जातक का मतलब होता है जन्म से सम्बन्धित। बौद्ध साहित्य में जातकों की संख्या ३४[1] से ५५०[2] तक मिलती है, जो बौद्धग्रन्थ के आधारग्रन्थ त्रिपिटकों में से सुत्तपिटक के खुद्दकनिकाय में संग्रहित हैं। भगवान् बुद्ध ने तत्काल प्रचलित कथाओं को धर्मोपदेश का आधार बनाकर उपदेश दिया तथा उनके शिष्यों ने उनका अनुसरण करते हुए धर्मनिरपेक्ष कथाओं को जातक-रूप दे दिया।[3] इसी प्रकार भगवान् बुद्ध द्वारा प्रवाचित जातक कथाओं में भारतीय संस्कृति के प्रायः सभी अंगों का दिग्दर्शन हो जाता है, जिसमें लोकहित सर्वोपरि है-

---

* सहायकाचार्य, सर्वदर्शनविभाग, श्री ला. ब. शा. राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली-16

1. आर्यसूर विरचित जातकमाला
2. चुल्लनिद्देश, २.८०
3. The present form in which we find the Jatakas, is nothing but a book of commentary, a literary manipulation, which may have growth out of the works of a considerable number of scholars in the 5th A.D. or even at a later period. This had become possible for the reason that the Buddha himself knowing the faculties and adaptibilities of his numerous hearers would have narrated many amusing interesting stories……. This has been corroborated in the Saddharmapundarika for the first time. In the same book it is stated that the Buddha teaches both by Sutras and stanzas and legends and Jatakas. (A Study on Jatakas and Avadanas, p. 15)

RNI-UTTHIN/2013/51284

ISSN-0975-8739

हिन्दी अर्द्धवार्षिक

जयराम संदेश
Jairam Sandesh

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत विशेषज्ञ समिति द्वारा मूल्यांकित शोध-पत्रिका

A Peer Reviewed, Refereed Research Journal

शक्तिपीठ विशेषांक

जुलाई-दिसम्बर 2023 | वर्ष 11 | अंक 02

₹ 50/-

धर्म-दर्शन-अध्यात्म एवं सांस्कृतिक संदर्भ पर आधृत

हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

RNI-UTTHIN/2013/51284

हिन्दी अर्द्धवार्षिक ISSN-0975-8739

जयराम संदेश
Jairam Sandesh

धर्म-दर्शन-अध्यात्म एवं सांस्कृतिक संदर्भ पर आधृत
A Peer Reviewed, Refereed Research Journal

जुलाई–दिसम्बर
2023 ई.
विक्रम सम्वत् 2080

वर्ष : 11 अंक : 02

संरक्षक :
प. पू. ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी
परमाध्यक्ष : जयराम संस्थाएँ

**

परामर्शदातृ मण्डल
प्रो० वशिष्ठ त्रिपाठी (वाराणसी)
डॉ० रामभद्रदास श्रीवैष्णव (प्रयाग)
प्रो० रमेश कुमार पाण्डेय (दिल्ली)
प्रो० हरेराम त्रिपाठी (दिल्ली)
प्रो० रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर)

**

सम्पादक
प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
मोबाइल नं. 9456328499
ई-मेल : shivshankarmishra74@gmail.com

**

शोधपत्र परीक्षक मण्डल
प्रो० जे.के. गोदियाल (पौड़ी)
प्रो० राम बहादुर शुक्ल (जम्मू)
प्रो० रामनारायण द्विवेदी (दिल्ली)
प्रो० दिनेश कुमार गर्ग (वाराणसी)
प्रो० रामविनय सिंह (देहरादून)
डॉ० रामरतन खण्डेलवाल (हरिद्वार)

**

प्रूफ संशोधक
डॉ. मनमुदित नारायण शुक्ल

**

प्रकाशक :
श्री जयराम आश्रम
भीमगोड़ा, हरिद्वार – 249401 (उत्तराखण्ड)
01334-260251
ई-मेल : jairamsandesh@gmail.com

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी द्वारा
भार्गव प्रिंटर्स, निकट ललतारी पुल, जनपद-हरिद्वार,
उत्तराखण्ड से मुद्रित एवं
श्रीजयराम आश्रम भीमगोड़ा, जनपद हरिद्वार से प्रकाशित
सम्पादक : डॉ. शिवशंकर मिश्र

अनुक्रम

आशीर्वचन
सम्पादकीय
शक्ति–पीठ.....पं० तनसुखराम शर्मा.....1
शक्तिपीठ– 'देवीभागवतपुराण'.....डॉ० लज्जा भट्ट.....12
भारतवर्ष के उत्तरी भाग में प्राप्त .....प्रो० रामबहादुर शुक्ल.....15
शाक्त दर्शन एवं शक्ति उपासना.....प्रो० रामराज उपाध्याय.....22
शक्तिपीठों का दार्शनिक सन्दर्श.....डॉ0 विजय गुप्ता.....25
कूर्मांचल की वरदायिनी कुछ प्रसिद्ध.....डॉ० कीर्तिवल्लभ शक्टा 'शाकटायन'.....29
देवी के 108 सिद्धपीठों में से.....आचार्या मिनति रथ.....31
वेदान्त शास्त्र में प्राण और.....डॉ० अनिलानन्द.....33
श्रीमद्भागवत में शक्ति.....रविशंकर त्रिपाठी.....40
ज्ञानप्राप्ति में यम–नियम.....महाबीर शुक्ल 43
माता सती और उनके शक्तिपीठ.....डॉ0 धनंजय शर्मा.....47
माँ बगलामुखी और उनके साधकों.....मुदित कुमार पाण्डेय 'मगन दास'.....52
भारत में विद्यमान बयालीस शक्ति.....राम कुमार.....54
शक्तिपीठों में वाराणसी के .....वितेश कुमार.....61
कात्यायनी शक्तिपीठ.....आशीष शर्मा.....66
कामाख्या शक्तिपीठ की ऐतिहासिकता.....डॉ० आरती बाली.....69
कामाख्या शक्तिपीठ.....कंचन कुमारी.....73
शक्तिपीठों में कामाख्या शक्तिपीठ.....डॉ० नीतू बाला.....79
शक्तिपीठों का प्रादुर्भाव.....तानिया डसगोत्रा.....83
जयराम आश्रम द्वारा संचालित विविध सेवाप्रकल्प

पत्रिका ऑनलाईन उपलब्ध - jairamashram.org/publication jairamsandeshpatrika

- पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त चिन्तन से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं।
- पत्रिका के सम्बन्ध में किसी भी विवाद के निस्तारण का न्याय क्षेत्र केवल हरिद्वार होगा।
- पत्रिका के सम्पादक एवं परामर्श-परीक्षक मण्डल के समस्त सदस्य पूर्णतया अवैतनिक हैं।
- पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता के सम्बन्ध में सम्पूर्ण उत्तरदायित्त्व लेखक का ही है, प्रकाशक और सम्पादक का नहीं।

शक्तिपीठों का दार्शनिक सन्दर्श : एक विश्लेषण

डॉ. विजय गुप्ता
सहायक आचार्य- सर्वदर्शन विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

भारतीय ज्ञान परम्परा के विविध आयामों में शक्तिपीठ भी अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। ये भारतीय संस्कृति के प्रमुख अङ्ग हैं। जहाँ शक्तिपीठ भारतीय संस्कृति के प्रमुख तीर्थस्थल हैं, वहीं उनका एक प्राचीन एवं रुच्युत्पादक ऐतिह्य भी है। पौराणिक कथाओं के अनुसार प्रजापति दक्ष की इच्छा के विरुद्ध सती द्वारा शिव को वरण करना, दक्ष द्वारा अपमान के उद्देश्य से स्वनियोजित महायज्ञ में अपने ही दामाद शिव एवं पुत्री सती को आमन्त्रित न करना, शिव से अनुमति न मिलने पर पितृमोह में दशविद्याओं वाली विकराल जगदम्बा के रूप में आने पर अनुमति मिलना, वहाँ सभी के द्वारा शिव एवं अपना अपमान किये जाने पर सती द्वारा छायाशरीर के रूप में यज्ञकुण्ड में प्रवेश कर जाना, शिव का अत्यन्त क्रुद्ध होना, वीरभद्रादि द्वारा यज्ञ को तहस-नहस करना, शिव द्वारा सती के छायाशरीर को लेकर प्रचण्ड ताण्डव करना, सृष्टि के प्रलय की आशंका होने पर देवताओं द्वारा विनिवेदित श्रीविष्णु द्वारा सुदर्शन चक्र से सती के छायाशरीर के अङ्ग-प्रत्यङ्ग को क्षत-विक्षत करना, सती के छायाशरीर के यत्र-तत्र गिरे टुकड़ों का शक्तिपीठ के रूप में प्रसिद्ध होना; भिन्न-भिन्न शास्त्रों में इसी कथा को विविध रूपों में प्रस्तुत किया गया है। इन प्रसिद्ध शक्तिपीठों में दर्शन के अनेक अवयव सन्निहित हैं, जिनका यत्किञ्चित् विवेचन प्रस्तुत शोधपत्र में किया जायेगा।

शक्लृ शक्तौ धातु से क्तिन् प्रत्यय होकर शक्ति शब्द निष्पन्न होता है, जिसका अर्थ है- अपृथक्सिद्धधर्मविशेष अर्थात् सामर्थ्यविशेष। अर्थात् ऐसा धर्मविशेष जो उस वस्तु से पृथक् नहीं किन्तु कार्यों को सिद्ध करने वाला होता है, जैसे कि कल्पद्रुम में कहा है- 'कायजननसामर्थ्यम्'। शक्ति शब्द का साक्षात् सम्बन्ध देवी दुर्गा, काली, लक्ष्मी आदि से भी माना गाया है। संस्कृत कोशग्रन्थों में शक्ति के अनेक अर्थ बताये गये हैं वहीं जटाधर नामक कोश में शक्ति का एक अर्थ 'ऊर्जा' भी बताया गया है, जो कि अत्यन्त व्यावहारिक एवं प्रासङ्गिक है।

शक्ति की दार्शनिक पृष्ठभूमि विशेष रूप से काश्मीर शैवदर्शन एवं शाक्तदर्शन में दृष्टिगोचर होती है। शास्त्रों में शक्ति को ही आत्मा भी कहा गया है-'आत्मा शक्तिः'।[1] सामान्यतः ब्रह्म के सृष्ट्युत्पत्ति रूपी कार्य को भी शक्ति कहा

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

ISSN 2395-3055

नवम्बर, 2023 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

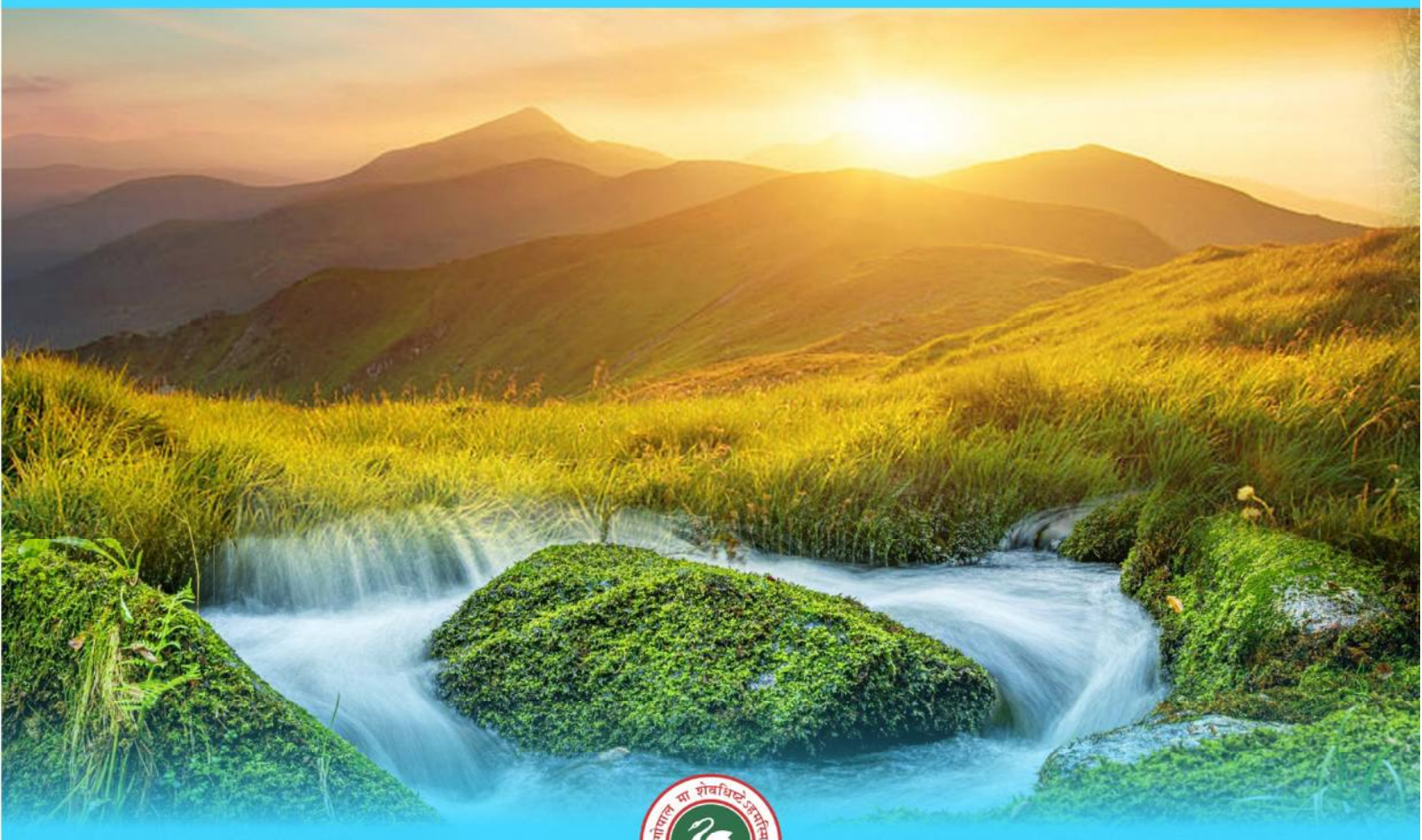

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)
संस्कृत भवन, ए-10, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली - 110067

वर्ष : 10 अंक : 06 (114)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः
Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

स्वामित्व	:	अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)
अध्यक्ष	:	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन
प्रधान सम्पादक (पदेन)	:	रमाकान्त गोस्वामी
सम्पादक	:	प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
सह-सम्पादक	:	डॉ. विजय गुप्ता
शोधपत्रपरीक्षक मण्डल	:	प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली) प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर) प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली) प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी) प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)
व्यवस्थापक मण्डल	:	आर. एन. वत्स 'एडवोकेट'
ग्राफिक डिजाईनर	:	विश्वकर्मा शर्मा
संपादकीय कार्यालय	:	संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67
संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक	:	रमाकान्त गोस्वामी, महासचिव, अ.भा.सं. सा.स.
दूरभाष	:	011-41552221, मो.- 9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

नियम एवं निर्देश :-

- संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए "संस्कृत-रत्नाकरः" जिम्मेदार नहीं है।
- प्रकाशितशोधसामग्री लेखकस्यास्ति अतः लेखस्य मौलिकतादिविषये सम्पूर्णं दायित्वं लेखकस्य भविष्यति न तु सम्पादकस्य न वा प्रकाशकस्य।

विषय-सूची

04 | 'अनुसन्धानसम्पादनप्रविधिः' ग्रन्थ की समीक्षा
– डॉ. विजय गुप्ता

06 | जल के वैदिक सन्दर्भ : एक समीक्षा

17 | चिकित्सानुसन्धानकेन्द्रनिर्माणस्य प्रमुखसिद्धान्ताः
– मुकेशशर्मा

(कवर सहित पृष्ठ संख्या 24)

सम्पादकीयम्

"विद्वान् सर्वत्र पूज्यते"

स्वगेहे पूज्यते गेही स्वग्रामे पूज्यते प्रभुः ।
स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ॥
विद्वत्वं च नृपत्वं च नैव तुल्यं कराचन ।
स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ॥

एतदाभाणकमक्षरशः संघटते लोकजीवने । ये खलु सरस्वतीसमुपासकाः विद्यालाभायलब्धक्लेशाः मातरं शारदां सततं समाराधयन्ति तेषां यश-प्राप्तिः जयलाभश्च निश्चयेन जायते। अपरिचितेऽपि देशे ज्ञानवैभवाद् विद्वांसः समादृियन्ते पूज्यन्ते च। विद्यायाः भवति कश्चन तथालोकः यस्मिन् सर्वे आलोकिताः चमत्कृताश्च भवन्ति। अयं प्रज्ञालोकरू अत्यन्तं प्रदीप्तः यश्च स्वसत्त्वं स्वयमेव प्रमाणयन्ति तदर्थं प्रमाणान्तरस्यापेक्षा न भवति। यथा कस्तूरीमृगः स्वकस्तूरिकामोदं शयथेन न प्रमाणयत्यपितु तस्य सौरभ एव कस्तूर्याः सत्त्वे प्रमाणभूतो भवति। अत एवोच्यते -

न हि कस्तूरिकामोदः शयथेन विभाव्यते ।

अखिलभारतीयसंस्कृतसाहित्यसम्मेलनं विगतेभ्यो दशाधिकवर्षेभ्यः प्रतिवर्षं विदुषां शास्त्रसाधनां समवलोक्य, तेषां विद्यावैभवं विलोक्य, अध्ययने, अध्यापने, सर्जने प्रकाशने च तेषां श्रमं परीक्ष्य तान् श्रद्धया सम्मानयति पुरस्करोति च। वर्षेऽस्मिन् पुरस्कारनिर्णायकसमित्या गहनपरीक्षणानन्तरं देशस्य त्रयो विद्वांसः पुरस्काराय चिताः, तेषां विवरणमेवम् -

1. डॉ. नन्दिता शास्त्री 'चतुर्वेदी'
2. प्रो. भारतेन्दु पाण्डेय
3. डॉ. मधुसूदन मिश्र

एतेषां विदुषामहर्निशपरिश्रमेण संस्कृतमातुः समर्चनेन च अनेके विद्यार्थिनः शोधार्थिनश्च निरन्तरं संस्कृतमातरं सेवन्ते। सम्मेलनसदस्यैः विशेषज्ञैश्च एतेषां संस्कृतसेवाभावनां विभाव्य अस्य वर्षस्य पुरस्कारप्रदानाय एते निणीतः। पुरस्काररूपेण एतेभ्यः प्रशस्तिपत्रं पुरस्कारराशिश्च प्रदीयते। नवम्बरमासस्य द्वितीये दिनाङ्के समायोजिते एकस्मिन् सम्मानसमारोहे सम्मेलनसदस्यानां विशिष्टातिथीनाञ्च समक्षमेते पुरस्काराः विद्वद्भ्यः सादरं प्रदास्यन्ते। विदुषां सम्माननेन अस्माकं सम्मेलनमपि स्वस्मिन् गौरवं स्वाभिमानञ्चानुभवति।

जयतु भारतम् । जयतु संस्कृतम्।

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः, शोधविभागाध्यक्षः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

20 | योगदर्शने योगपदार्थमधिकृत्य वाचस्पतिमिश्रमतम्
– सुभाषकुन्तलः

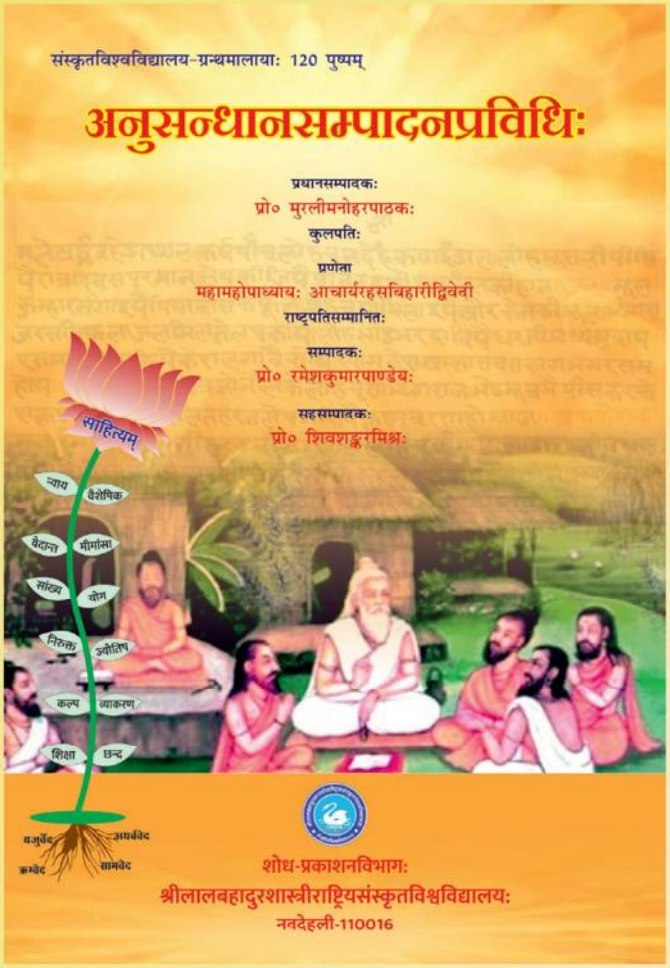

'अनुसन्धानसम्पादनप्रविधिः' ग्रन्थ की समीक्षा

"ग्रन्थ नाम : अनुसन्धानसम्पादनप्रविधिः, लेखक: महामहोपाध्याय आचार्य रहसबिहारी द्विवेदी, सम्पादक : प्रो. रमेशकुमार पाण्डेय, प्रकाशक : शोध-प्रकाशन विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, संस्करण: २०२३, भाषा : संस्कृत एवं हिन्दी"

अनुसन्धान शिक्षा की पराकाष्ठा है। अनुसन्धान भारतीय ज्ञान परम्परा की ऋषिचर्या है। अनुसन्धान शिक्षा का परिवर्द्धित, परिरक्षित एवं संस्कृत परिणाम है। अनुसन्धान वेद का उत्स है। आधुनिक पद्धति में अनुसन्धान एक प्रारूप के अनुरूप किया जाने वाला बौद्धिक कार्य है, जिससे किसी विशेष निष्कर्ष की प्राप्ति होती है। अनुसन्धान शब्द के लिए अन्य पर्यायों का भी प्रयोग किया जाता है जैसे कि- शोध, गवेषण, अन्वेषण, अनुशीलन, परिशीलन, परीक्षण, आलोचना, परिपृच्छा, मीमांसा आदि। ये सभी शब्द पर्यायेण समान अर्थ का बोध कराते हैं किन्तु भिन्न-भिन्न शास्त्रों में भिन्न-भिन्न अर्थ में प्रयुक्त किये जाते हैं। अनुसन्धान शब्द अनु एवं सम् उपसर्गपूर्वक धा धातु से ल्युट् प्रत्यय होकर निष्पन्न हुआ है, जहाँ सन्धान शब्द का १३ अर्थों में प्रयोग देखा जाता है यथा- १.स्थापना[1], २.परस्परानुकूलता[2], ३.सम्यग्धारण[3], ४.आभिमुख्येन स्थापना[4], ५.सम्प्रयोग[5], ६. संश्लेष[6], ७.सन्निधान[7], ८.सम्यग् हवन[8], ९.संयोजन[9], १०.सन्धि[10], ११.सङ्घट्टन[11], १२.बाणसन्धान[12] एवं १३.अभिषव[13]। भारतीय ज्ञान परम्परा में अनुसन्धान की प्राचीन प्रविधि अत्यन्त परिष्कृत थी, जिसमें विषय, विशय (संशय), पूर्वपक्ष, उत्तरपक्ष एवं निर्णय; इन पाँच अङ्गों अर्थात् प्रविधियों का सम्यक् प्रयोग करते हुए अनुसन्धानात्मक निष्कर्ष पर पहुँचा जाता था-

विषयो विशयश्चैव पूर्वपक्षस्तथोत्तरम्।
निर्णयश्चेति पञ्चाङ्गं शास्त्रेऽधिकरणं विदुः॥

भारतीय ज्ञान परम्परा में अनुसन्धान की प्राचीन एवं नवीन दोनों पद्धति प्रसिद्ध है। प्रसिद्ध शिक्षाविदों का कहना है कि सम्प्रति काल में अनुसन्धान की जो प्रविधि एवं प्रवृत्ति प्रसिद्ध है, वह पाश्चात्य शिक्षा नीति के प्रभाव का परिणाम है। वस्तुतः भारत में शिक्षा नहीं अपितु विद्या अथवा ज्ञान की परम्परा रही है। विद्या के प्रचार, प्रसार एवं व्यवहार की एक अलग ही पद्धति प्रसिद्ध थी, जिसका उल्लेख अनेकों शास्त्रों में प्राप्त होता है; श्रवण, मनन एवं निदिध्यासन भी उसी का एक प्रसिद्ध रूप है। महर्षि पतञ्जलि ने आगमकाल, स्वाध्यायकाल, प्रवचनकाल एवं व्यवहारकाल की दृष्टि से प्राचीन अनुसन्धान पद्धति को बताया है।[14] मनुस्मृतिकार कहते हैं कि जो तर्क से अनुसन्धित होता है उसे ही धर्म जानो, अन्य को नहीं[15]; इसी प्रकार से अनेकों रूपों प्राचीन अनुसन्धान का विवेचन प्राप्त होता है। आधुनिक काल में जो अनुसन्धान की पद्धति प्रसिद्ध है वह कुछ निर्धारित नियमों (शर्तों) अथवा प्रारूपों में निबद्ध है। अनुसन्धान का आधुनिक रूप Research है, जिसका अर्थ है- पुनः खोज; जो १. अज्ञात तथ्य का ज्ञापन, २. ज्ञात तथ्य का परीक्षण अथवा पुनःविवेचन, ३. समीचीन पद्धति का प्रयोग, ४. ज्ञानसीमा का विस्तार एवं ५. प्रामाणिक निष्कर्ष; इन पाँच बिन्दुओं को अपने केन्द्र में रखकर प्रवृत्त होता है।

भारतीय अनुसन्धान प्रविधि को अभिकेन्द्रित कर प्रवृत्त 'अनुसन्धानसम्पादनप्रविधिः' नामक इस ग्रन्थ का कलेवर अत्यन्त विस्तृत है। ४३० से अधिक पृष्ठों में प्रकाशित इस ग्रन्थ के सम्पूर्ण विषयवस्तु को पूर्वबन्ध, मुख्यबन्ध एवं उत्तरबन्ध के रूप में मुख्यरूप से तीन बन्धों में विभाजित किया जा सकता है, जिसमें पूर्वबन्ध के अन्तर्गत प्ररोचना, सम्पादकीय, आमुख, लेखक द्वारा १४ पृष्ठों में संस्कृत एवं हिन्दी भाषा में निबद्ध प्राक्कथनम् तथा विषयानुक्रमणिका समाहित हो जाता है। मुख्यबन्ध के अन्तर्गत तीन अधिकरणों में विभाजित ग्रन्थ का मुख्य प्रतिपाद्य विषय आता है, जो ३१३ पृष्ठों में निबन्धित है, जहाँ प्रथम अधिकरण में अनुसन्धान शब्दार्थ विमर्श, अनुसन्धान प्रविधि विमर्श,

 ISSN 2395-3055

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com
ISSN 2395-3055
दिसम्बर, 2023 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)
संस्कृत भवन, ए-10, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली - 110067

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः
Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

स्वामित्व	:	अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)
अध्यक्ष	:	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन
प्रधान सम्पादक (पदेन)	:	रमाकान्त गोस्वामी
सम्पादक	:	प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
सह-सम्पादक	:	डॉ. विजय गुप्ता
शोधपत्रपरीक्षक मण्डल	:	प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली) प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर) प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली) प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी) प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)
व्यवस्थापक मण्डल	:	आर. एन. वत्स 'एडवोकेट'
ग्राफिक डिजाईनर	:	विश्वकर्मा शर्मा
संपादकीय कार्यालय	:	संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67
संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक	:	रमाकान्त गोस्वामी, महासचिव, अ.भा.सं. सा.स.
दूरभाष	:	011-41552221, मो.- 9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

नियम एवं निर्देश :-

- संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए "संस्कृत-रत्नाकरः" जिम्मेदार नहीं है।
- प्रकाशितशोधसामग्री लेखकस्यास्ति अतः लेखस्य मौलिकतादिविषये सम्पूर्णं दायित्वं लेखकस्य भविष्यति न तु सम्पादकस्य न वा प्रकाशकस्य।

विषय-सूची

03 | जीवन-परिचय - प्रो. भारतेन्दु पाण्डेय

04 | अभिनवकाव्यालङ्कारसूत्रे प्रतिपादितस्य महाकाव्यलक्षणस्य..... – प्रो.भारतेन्दुपाण्डेयः

09 | जीवन-परिचय - डॉ. नन्दिता शास्त्री 'चतुर्वेदी'

10 | वेदों में कृषि विज्ञान – डॉ. नन्दिता शास्त्री 'चतुर्वेदी'

13 | जीवन-परिचय - डॉ. मधुसुदन मिश्र

14 | विधाता की विशिष्ट कृति-प्रकृति – डॉ. मधुसूदनमिश्र

17 | चिन्मय : ग्रन्थ समीक्षा – डॉ. विजय गुप्ता

19 | चिकित्सानुसन्धानकेन्द्रनिर्माणस्य प्रमुखसिद्धान्ताः – मुकेशशर्मा

22 | भारतीया वेधपरम्परा – ब्रजेशपाठकः

(कवर सहित पृष्ठ संख्या 24)

सम्पादकीयम्

"विद्वान् सर्वत्र पूज्यते"

स्वगेहे पूज्यते गेही स्वग्रामे पूज्यते प्रभुः।
स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते।।
विद्वत्वं च नृपत्वं च नैव तुल्यं कदाचन्।
स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ।।

एषा सूक्तिः जगति पंक्तिशः अन्वर्थतामाप्नोपि। ये किल वाणीविरुदवाचः ज्ञानलब्धये समवाप्तकष्टाः निरन्तरं मातरं गीर्वाणीं सभाजयन्ति तेषां कीर्तिलाभः विजयलाभश्च निश्चप्रचम् समुपजायते।

विद्यैश्वर्यादपरिचितेऽपि देशे विपश्चितः समादरं प्राप्नुवन्ति। ज्ञानेऽस्ति कश्चित् प्रकाशः यस्मिन् समे प्रकाशिताः चमत्कृताश्च भवन्ति । प्रकाशालोकोऽयं आत्यन्तिकेन आलोक्यमाणः यश्च स्वयमेव स्वसत्वं प्रमाणयति, तस्मै अन्यत्प्रमाणस्य आवश्यकता न भवति। यथा –

कस्तूरीमृगः स्वात्मकस्तूरिकापरिमलं शपथं विना प्रमाणयन्ति। यतो हि परिमल एव कस्तूर्याः गन्धप्रमाणे स्वत्वे च प्रमाणभूतोऽस्ति अत एवोच्यते-

यदि सन्ति गुणाः पुंसां विकसन्त्येव ते स्वयम्।
न हि कस्तूरिकामोदः शपथेन विभाव्यते।।

पूर्वेभ्यः दशाधिकवर्षेभ्योऽखिलभारतीयसंस्कृतसाहित्यसम्मेलनं प्रतिवर्षं विपश्चितां शास्त्रसाधनां प्रवीक्ष्य तेषां ज्ञानैश्वर्यं ज्ञानभूतिञ्च दृष्ट्वा अध्ययने अध्यापने सर्जने प्रकाशने च तेषां परिश्रमं परीक्ष्य तान् साश्रद्धं साभाजयति पुरुस्करोति च।

वत्सरेऽस्मिन् पुरस्कारनिर्णायकसमित्या गहनपरीक्षणानन्तरं राष्ट्रस्य त्रयो मनीषिणः पुरस्कारार्थं चयनिताः। एवन्तेषां विवरणम्-

1. डॉ. नन्दिताशास्त्री 'चतुर्वेदी'
2. प्रो. भारतेन्दुपाण्डेयः
3. डॉ. मधुसूदनमिश्रः

बुधानामेतेषां सततपरिश्रमेण संस्कृतमातुः पूजनेन च नैके शिक्षार्थिनः शोधार्थिनश्च सततं संस्कृतमातरं समर्चन्ति।

सम्मेलनसभासद्भि विशेषज्ञैश्च एतेषां संस्कृतसेवातत्परां बुद्धिं विभाव्य अस्य संवत्सरस्य पुरस्कृतिप्रदानार्थं अमी निर्णीताः।

पुरस्कृतिरुपेण एतेभ्यः प्रशस्तिपत्रं पुरस्काराराशिश्च प्रददे। नवम्बरमासस्य द्वितीये दिनाङ्के एकस्मिन् समायोजिते सम्मानसम्मेलने सम्मेलनसभासदां विशिष्टातिथीनाञ्चोपस्थितौ एताः पुरस्कृतयः बुधैः सादरं प्रदत्ताः। प्राज्ञानामर्चनेनास्माकं सम्मेलनमपि आत्मगौरवं स्वाभिमानिताञ्चानुभवति।

जयतु संस्कृतं जयतु भारतम्

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः, शोधविभागाध्यक्षः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

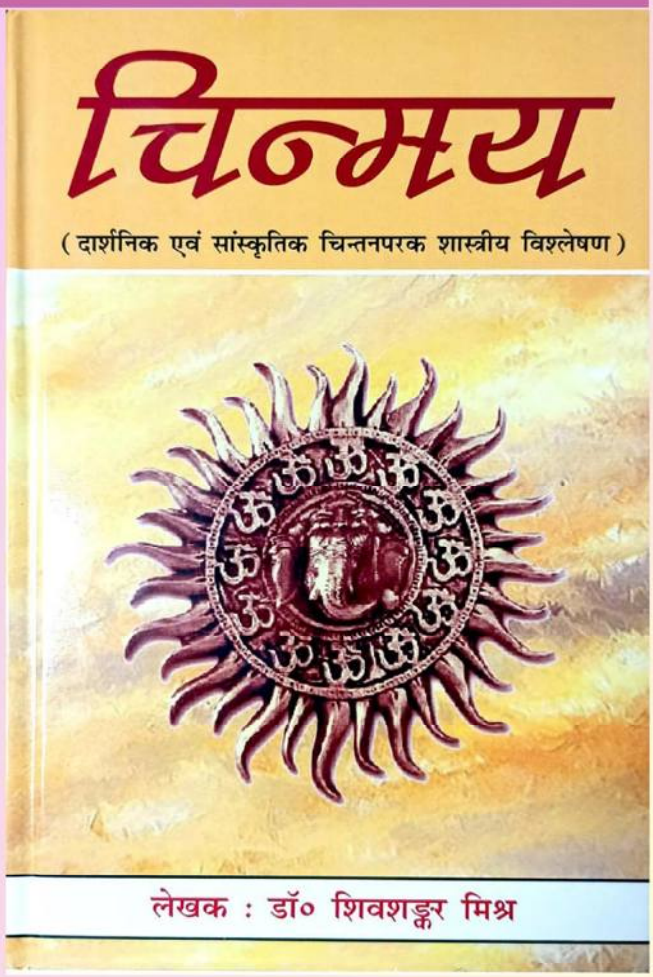

चिन्मय
ग्रन्थ समीक्षा

ग्रन्थ नाम	:	चिन्मय (दार्शनिक एवं सांस्कृतिक चिन्तनपरक शास्त्रीय विश्लेषण),
लेखक	:	डॉ.शिवशङ्कर मिश्र,
प्रकाशक	:	ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली,
संस्करण	:	२०१८
भाषा	:	हिन्दी
कुल पृष्ठ	:	175

भारतीय ज्ञान परम्परा अनेक सूक्ष्म एवं विविध विज्ञान निधि का पूंज है, जहाँ ज्ञान का अनादि स्रोत वेद है। उपनिषद्, दर्शन, पुराण, धर्मशास्त्र आदि अन्य सभी शास्त्र वेदज्ञान के प्रसार एवं विस्तार हेतु निर्मित हुए हैं। वेद भारतीय संस्कृति के मूल में विद्यमान है, इसीलिए वेद के समान भारतीय संस्कृति भी सतत एवं अक्षुण्य है। वेद ही भारतीय दर्शन का भी मुख्यस्रोत है, जिसका सूक्ष्म विज्ञान देश-विदेश में प्रसिद्ध है, जो प्रत्येक मनुष्य के जीवन से सम्बद्ध है, मनुष्य के प्रत्येक क्रियाकलाप में निहित है, प्रत्येक मनुष्य के लिए प्रासंगिक भी है। जिस विज्ञान का अवलम्बन कर भारत विश्वगुरु कहलाया, वह दर्शन ही है। भारतीय संस्कृति एवं दर्शन के प्रमुख बिन्दुओं का अवलम्बन कर विश्लेषणात्मक पद्धति से लिखे गये शोधनिबन्धों का सङ्ग्रहरूप यह 'चिन्मय' ग्रन्थ है। लेखक ने अत्यन्त सूक्ष्म दृष्टि से भारतीय संस्कृति एवं दर्शन की प्रस्तुति की है, जहाँ गङ्गा के विविध पक्षों का निरूपण, श्रीमद्भगवद्गीता में निहित योगविद्या, गायत्री छन्द, भारतीय संस्कृति में गौ का माहात्म्य, पर्यावरण संरक्षण में पीपल का योगदान, गीतोक्त धर्मतत्त्व, भारतीय राजधर्म, कर्त्तव्य का अधिकार, भक्ति सिद्धान्त, उपनिषद् के मोक्षसन्दर्भ, वेद की यज्ञार्थ में प्रवृत्ति, स्कन्दपुराण के अनुसार तीर्थाचरणपद्धति, व्यासपीठ की अवधारणा एवं मर्यादा सदृश गूढ विषयों पर अत्यन्त शास्त्रीय पद्धति से निबन्धों का शोधपरक लेखन किया है।

भारतीय वाङ्मय में शास्त्रप्रणयन की अनेक विधायें प्रसिद्ध हैं, उनमें निबन्ध लेखन भी एक प्रकार की विधा है, जिसमें विविध विषयों का चयन कर शास्त्रीय लेखन किया जाता है, जहाँ लेखक प्रत्येक विषय का स्वतन्त्र विवेचन करते हुए, उनके विभिन्न पक्षों का अवलोकन करता है तथा उनकी शास्त्रीय समीक्षा भी करता है। तर्कवाचस्पति तारानाथ भट्टाचार्य कहते हैं कि निबन्ध शास्त्रविधा का भेदविशेष है, जिसमें विभिन्न विषयों का नियमपूर्वक सङ्ग्रह होता है- सङ्ग्रहग्रन्थभेदः[1]। राजा राधाकान्तदेव बहादुर नि उपसर्गपूर्वक बन्ध धातु से घञ् प्रत्यय जोड़कर निबन्ध शब्द की निष्पत्ति करते हुए व्युत्पत्ति बताते हैं कि 'निबध्नातीति निबन्धः'[2] अर्थात् जहाँ नियमपूर्वक बन्धन अथवा सङ्ग्रह किया जाये, निबन्ध कहलाता है। निबन्ध का स्वरूप बताते हुए हिन्दी के प्रतिष्ठित आलोचक गुलाब राय कहते हैं कि 'निबन्ध उस गद्य रचना को कहते हैं, जिसमें एक सीमित आकार के भीतर किसी विषय का वर्णन या प्रतिपादन एक विशेष निजीपन, स्वच्छन्दता, सौष्ठव और सजीवता तथा आवश्यक सङ्गति और सम्बद्धता के साथ किया गया हो'। हिन्दी के ग्रन्थों में निबन्ध के आवश्यक अवयवों का विवेचन करते हुए कहा गया है कि जिस निबन्ध में वैयक्तिकता, क्रमबद्धता, संवेदनशीलता, पूर्णरचनाधर्मिता तथा सरस एवं सजीव भाषा शैली हो, वही निबन्ध विधा के सभी शर्तों को पूर्ण करने वाला

UGC - CARE LISTED

ISSN: 0974-8946

अनुसन्धान-प्रकाशन-विभागीया त्रैमासिकी शोध-पत्रिका

शोध-प्रभा

(उत्कर्षमहोत्सवविशेषाङ्कः)

(A Refereed & Peer-Reviewed Quarterly Research Journal)

49 वर्षे संयुक्ताङ्कः (जनवरी-दिसम्बर) 2024 ई.

प्रधानसम्पादकः

प्रो. मुरलीमनोहरपाठकः

कुलपतिः

सम्पादकः

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः

शोधविभागाध्यक्षः

सहसम्पादकः

डॉ. ज्ञानधरपाठकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)

नवदेहली-16

UGC-CARE Listed

ISSN : 0974-8946

अनुसन्धान-प्रकाशन-विभागीया त्रैमासिकी शोध-पत्रिका

शोध-प्रभा

(उत्कर्षमहोत्सवविशेषाङ्कः)

(A REFERRED & PEER-REVIEWED QUARTERLY RESEARCH JOURNAL)

49 वर्षे संयुक्ताङ्कः (जनवरी–दिसम्बर) 2024 ई.

प्रधानसम्पादकः

प्रो. मुरलीमनोहरपाठकः

कुलपतिः

सम्पादकः

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः

शोधविभागाध्यक्षः

सहसम्पादकः

डॉ. ज्ञानधरपाठकः

शोधसहायकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)

नवदेहली-110016

12. दर्शने वाक्यपदीयस्य स्थानम् 81-85
- डॉ. बद्रीनारायणगौतमः

13. आर्यावर्तीया सनातनज्ञानपरम्परा 86-110
- डॉ. सुधाकरमिश्रः

14. समासान्ताधिकारे योगविभागनिर्देशः, अनुबन्धानामासञ्जन..... 111-115
- डॉ. अरविन्दमहापात्रः

15. श्रीमद्भगवद्गीताभिप्रेतकर्मयोगविवेचनम् 116-120
- डॉ. तरुणकुमारः

16. मेघदूतकुमारसम्भवयोः एवकारार्थविमर्शः 121-130
- डॉ अखिलेशकुमारद्विवेदी

17. अष्टाध्याय्यां द्वित्वाधिकारः 131-135
- डॉ. प्रज्ञा

18. सीतोपनिषदि सीतामाहात्म्यम् 136-142
- डॉ. अमितकुमारसाहा

19. सांख्यदर्शने सृष्टिप्रक्रिया 143-147
- डॉ. मोहनलालशर्मा

20. आयुर्वेदे अन्तःकरणविषयकचिन्तनम् 148-155
- डॉ. विजयगुप्ता

21. उपनिषत्सु अन्नस्य स्वरूपविमर्शः 156-163
- डॉ. अरविन्दकुमारः

22. श्रीमद्भगवद्गीतायां कतिपयवैदिकसिद्धान्ताः 164-170
- आचार्यमुकेशकुमारः

23. वाल्मीकिरामायणीया राजनैतिकी मूल्यावधारणा 171-178
- डॉ. कामेश्वरशुक्लः

24. महाकविकालिदासस्य काव्यशास्त्रीयपरिज्ञानम् 179-191
- डॉ. राकेशकुमारजैनः

25. पुराणवाङ्मये प्रणवस्य स्वरूपविमर्शः 192-196
-प्रो. शीतलाप्रसादशुक्लः

UGC–CARE Listed
जनवरी–दिसम्बर, 2024

शोधप्रभा (उत्कर्षमहोत्सवविशेषाङ्कः)
वर्ष : 49, संयुक्ताङ्कः

आयुर्वेदे अन्तःकरणविषयकचिन्तनम्

– डॉ. विजयगुप्ता*

भारतीयसंस्कृतेर्मूलाधारो वेदास्सन्ति, वेदानामक्षुण्णा विचारधारा एव भारतीयसंस्कृतौ नित्यं निरन्तरं प्रवाहितास्सन्ति। वेदानामनुशीलनेन प्राणिनः लौकिकं पारलौकिकं वाभ्युदयं निःश्रेयसञ्च सम्पादयित्वा स्वं स्वं जीवनं समुन्नतशीलं विधातुं शक्नुवन्ति। मानवजीवने ये विभिन्नाः शुभप्रसङ्गाः वा समुपतिष्ठन्ते, तेषां समेषां सफलीभूताय समुचितनिर्देशनस्य सामर्थ्यं वैदिकविचारधारायामेव विद्यते। **आयुषो वेदः आयुर्वेदः** निरुक्तिरेषा आयुर्वेदशब्दस्य साकल्यार्थं सूचयति। आंग्लभाषायामायुर्वेदस्य आशयः Ayurveda means the knowledge of life इति प्राप्यते। हितमायुः, अहितमायुः, सुखमायुः, दुःखमायुश्च, तन्मानं तथा च तस्य आयुषः हितं किम् अहितं किमिति दर्शयित्वा हितं कथं सम्पादनीयं रक्षितव्यञ्च एवमेवाहितं निवारणमपि कथं भवितुमर्हतीति यस्मिन् शास्त्रे निर्दिष्टं तदेव शास्त्रमायुर्वेदशास्त्रशब्देन व्यवह्रियते। यथा–

हिताहितं सुखं दुःखम् आयुस्तस्य हिताहितम् ।
मानं च तस्य यत्रोक्तमायुर्वेदः स उच्यते ॥[1]

आयुर्वेदशब्दः पुल्लिङ्गे आयुस् विद् धातोः करणेऽर्थे घञ् प्रत्यये कृते सति निष्पद्यते। यस्यार्थो भवति– आयुर्रक्षणस्य ज्ञानं यत्प्रददाति तदायुर्वेदः, यथा– **आयुरनेन विन्दति वेत्ति वेत्यायुर्वेदः।**[2] सुश्रुतसंहितायां तु आयुर्वेदस्य लक्षणं क्रियते यद्येन आयुषो ज्ञानं भवति तदायुर्वेदः, यथा– **आयुरस्मिन् विद्यते, अनेन वाऽऽयुर्विन्दन्तीति।** सुश्रुतेनोक्तस्यास्य लक्षणस्य टीकायां डल्हणाचार्यो वदति– **आयुः शरीरेन्द्रिय-सत्त्वात्मसंयोगः, तदस्मिन्नायुर्वेदे विद्यते अस्तीत्यायुर्वेदः, अथवा आयुर्विद्यते ज्ञायते अनेनेत्यायुर्वेदः, आयुर्विद्यते विचार्यते अनेन वेत्यायुर्वेदः, आयुरनेन विन्दति प्राप्नोतीति वाऽऽयुर्वेदः।**[3] चरकसंहितायामप्युक्तम्–

तस्यायुषः पुण्यतमो वेदो वेदविदां मतः ।
वक्ष्यते यन्मनुष्याणां लोकयोरुभयोर्हितम् ॥[4]

---

* सहायकाचार्यः (सर्वदर्शनविभागः), श्रीला.ब.शा.रा.सं.विश्वविद्यालयः, नवदेहली

1. चरकसंहिता, सूत्रस्थानम्, 1.41
2. शब्दकल्पद्रुमः (प्रथमभागः), पृ० 186
3. सुश्रुतसंहिता, सूत्रस्थानम्, 1.15 (डल्हणाचार्यनिबन्धसंग्रहाख्यव्याख्या)
4. चरकसंहिता, सूत्रस्थानम्, 1.42